इब्न सफी

देश संख्या
19

"डॉक्टर ड्रेड"

जहर का तीर -60

पानी का धुआँ -61

एक लाश की हंसी -62

डॉक्टर ड्रेड -63

"डॉक्टर ड्रेड"

इब्ने सफ़ी

(चौथा हिस्सा)

1. जहरीले तीर (Poisoned Arrows)

यह इस सीरीज की शुरुआत है। कहानी में एक रहस्यमयी अपराधी का उदय होता है जो 'जहरीले तीरों' का इस्तेमाल कर रहा है। इन तीरों की खासियत यह थी कि ये शरीर के जिस हिस्से में लगते थे, उसे तुरंत सुन्न या जहर से भर देते थे। कर्नल फरीदी को इस केस के दौरान पहली बार एक ऐसे मास्टरमाइंड का अहसास होता है जो साये की तरह पीछे से वार करता है। यहीं से 'डॉक्टर ड्रेड' का नाम सामने आने लगता है।

2. पानी का धुआँ (Mist of Water)

इस उपन्यास में डॉक्टर ड्रेड का खौफ और गहरा हो जाता है। ड्रेड के पास ऐसी वैज्ञानिक तकनीकें थीं जिनका मुकाबला करना फरीदी के लिए भी मुश्किल था। इसमें एक ऐसी गैस या 'धुआँ' दिखाया गया है जो पानी की सतह से उठता है और लोगों को बेहोश या भ्रमित कर देता है। इस कहानी में डॉक्टर ड्रेड अपनी चालाकी से फरीदी को बार-बार चकमा देने में कामयाब होता है, जिससे यह साफ हो जाता है कि यह कोई साधारण अपराधी नहीं है।

3. लाश का कहकहा (The Corpse's Laughter)

यह इस सीरीज का सबसे रोमांचक और डरावना हिस्सा माना जाता है। कहानी में ऐसी लाशें मिलती हैं जिनके चेहरों पर एक अजीब और डरावनी मुस्कुराहट या 'कहकहा' (हँसी) जमी होती है। यह डॉक्टर ड्रेड के एक विशेष जहर का नतीजा था जो मांसपेशियों को खींच देता था। इस उपन्यास में फरीदी और ड्रेड के बीच जबरदस्त 'माइंड गेम' चलता है। हमीद की मजाकिया हरकतें यहाँ राहत देती हैं, लेकिन माहौल बहुत तनावपूर्ण बना रहता है।

4. डॉक्टर ड्रेड (Doctor Dread) अंतिम भाग

यह उसी सीरीज का क्लाइमेक्स (चरमोत्कर्ष) है, जिसके पृष्ठ आपने पहले तीन भाग में पढ़े हैं।

कुछ भी बताना ठीक नहीं , आप खुद पढ़ लें

273

पुर-इसरार आवाज़ (रहस्यमयी आवाज़)

गाड़ी रुकने की आवाज़ आई। पहियों के नीचे रोड़ियां कड़कड़ाई थीं और शायद घोड़ा ज़मीन पर टापें मारने लगा था। शाहिना ने खिड़की खोल दी लेकिन बाहर फैले हुए अंधेरे में उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। उसने नौकरों को ताकीद (हिदायत) कर दी थी कि पोर्च की रोशनी रात भर गुल (बंद) न की जाए। शाहिना खिड़की के पास से हट आई। उसने तहिया (निश्चय) कर लिया था कि आज वो अपनी माँ से लड़ जाएगी।

कई रातों से वो महसूस कर रही थी कि बेगम इर्शाद काफ़ी रात गए घर वापस आती हैं और कार की बजाय घोड़ा-गाड़ी इस्तेमाल की जाती है। रात गए तक घर से बाहर रहना भी बेगम इर्शाद के लिये ख़िलाफ़-ए-मामूल (असामान्य) था लेकिन कार की बजाय घोड़ा इस्तेमाल करना ख़ास तौर पर हैरतअंगेज़ था क्योंकि इससे पहले उन्होंने कभी घोड़ा-गाड़ी इस्तेमाल करते हुए नहीं देखा गया था। घोड़ा-गाड़ी दरअसल शाहिना ही को पसंद थी और अक्सर उसकी शाम की तफ़रीह (मनोरंजन) के लिये इस्तेमाल में रहा करती थी।

शाहिना अपने कमरे से निकली और तवील (लंबी) राहदारी (गलियारे) से गुज़रती हुई बेरूनी (बाहरी) बरामदे में आ गई। कोई पोर्च से बरामदे में दाख़िल हो रहा था।
आसमान के पस-मंज़र (पृष्ठभूमि) में उसकी परछाईं ही नज़र आ रही थी।

"कौन है?" शाहिना ने कपकपाती हुई आवाज़ में पूछा और साया रुक गया।

274

"कौन है—जवाब दो वरना मैं फ़ायर कर दूँगी।"
"शाहिना—" उसने अपनी माँ की भराई हुई सी आवाज़ सुनी।
"कौन.... मम्मी.... आप....!"
परछाईं उसके करीब से गुज़रती हुई राहदारी (गलियारे) के अंधेरे में गुम हो गई। शाहिना उसके पीछे बढ़ी और फिर उनकी मुलाक़ात एक रोशन कमरे में हुई।
बेगम इर्शाद सर से पैर तक स्याह लबादे (काले चोगे) में लिपटी हुई थीं लेकिन उन्होंने शाहिना से आँखें नहीं मिलाईं। उनके होंठ खुश्क थे और चेहरा ज़र्द (पीला) नज़र आ रहा था।
"मम्मी मुझे हैरत है—" शाहिना बड़बड़ाई।
"ओह.... मैं दरअसल—" बेगम इर्शाद ने मुस्कुराने की कोशिश की। "मैं एक ज़रूरी काम से बाहर गई थी।"
"मगर आपने कभी घोड़ा-गाड़ी नहीं इस्तेमाल की —"
"बस यूँ ही....!"
"मैं कई रातों से महसूस कर रही हूँ कि आप काफ़ी रात गए घर वापस आती हैं—" "जाओ.... सो जाओ—" बेगम इर्शाद ने झुँझला कर कहा। "तुम्हें इन बातों से सरोकार (मतलब) नहीं होना चाहिये।"
"और आप को सरोकार होना चाहिये—अगर मैं नौ बजे रात को भी घर वापस आऊँ—" "जाओ.... लड़की खुदा के लिये मुझे तन्हा छोड़ दो—"
"मैं आपको कई दिनों से परेशान देख रही हूँ—"
"शाहिना जाओ.... मेरी तबीयत ठीक नहीं है बेटी—"
"मम्मी आप मुझसे क्या छुपा रही हैं—मेरा ख्याल है कि आपने आज तक मुझसे कुछ नहीं छुपाया।"
"मैं.... कुछ नहीं छुपा रही हूँ बेटी! मैं दरअसल आज कल दिल की बीमारी में मुब्तला (ग्रसित) हूँ।"

दफ़अतन (अचानक) उनका चेहरा इस तरह मामूल (सामान्य) पर आ गया जैसे उन्हें कोई अच्छा सा बहाना हाथ आ गया हो। फिर उन्होंने तवील (लंबी) सांस लेकर कहा।

"मुझे अक्सर घबराहट और वहशत सी होने लगती है—मैं गाड़ी लेकर निकल जाती हूँ—" वो चंद लम्हे खामोश रहकर हंसी और बोली।

"तुम्हें ये सुन कर हैरत होगी कि गाड़ी मैं खुद ही हांकती हूँ—"
"लेकिन आप किसी डॉक्टर से क्यों नहीं रुजू (संपर्क) करतीं?"
"ये एक वक़्ती ज़हनी तब्दीली है—वैसे मैं अच्छी खासी हूँ—मुझे हुआ क्या है

—"

275

शाहिना इस जवाब से मुतमइन (संतुष्ट) नहीं हुई और अब उसकी तशवीश (चिंता) पहले से भी ज़्यादा बढ़ गई थी।
"सो जाओ—" बेगम इर्शाद ने फिर कहा और शाहिना उनके पेशानी (माथे) को चूम कर कमरे से निकल आई। वो रोशनियां गुल (बंद) करती हुई अपनी ख्वाबगाह (शयनकक्ष) की तरफ जा रही थी कि उसने फिर कुछ आहटें सुनीं और चलते-चलते रुक गई।
उसे फिर ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कोई सदर दरवाज़े (मुख्य द्वार) वाली राहदारी (गलियारे) में चल रहा हो। शाहिना वहीं खामोशी से खड़ी रही।
कदमों की आवाज़ें आना बंद हो गईं। शाहिना भी सदर दरवाज़े की तरफ बढ़ी लेकिन इस बार बत्तियां रौशन नहीं कीं। पोर्च में फिर उसे एक तारीख (काला/अंधेरा) साया नज़र आया और बेगम इर्शाद के अलावा और कोई नहीं हो सकता था शायद वो अब भी उसी स्याह लबादे (काले चोगे) में लिपटी हुई थीं।
वो दीवार से लगी खड़ी रही। साया पोर्च से निकल कर लॉन पर आ गया।
फिर शाहिना ने उसे कंपाउंड के उस हिस्से की तरफ मुड़ते देखा जहाँ फालतू (पालतू) जानवरों के कठघरे थे। वो भी पोर्च से निकल आई और दीवार से लग कर चलने लगी। बार-बार उसका लिबास मालती की झाड़ियों से उलझता और वो रुक जाती।
उसने इस रास्ते को इसलिए तरजीह (प्राथमिकता) दी थी कि बेगम इर्शाद की नज़र उस पर न पड़ सके। कदे-आदम (इंसान की लंबाई) झाड़ियों के दूसरी तरफ वो बेगम इर्शाद को साफ़ देख रही थी लेकिन अगर बेगम इर्शाद खास तौर पर झांकने की कोशिश करतीं तो उसके सर के अलावा और कुछ नज़र न आता क्योंकि वो मालती की घनी झाड़ी थी। झाड़ियों का सिलसिला जानवरों के कठघरे के करीब खत्म हो गया। दूसरी तरफ बेगम इर्शाद खड़ी थीं।
"तुम ने देर कर दी।" शाहिना ने किसी मर्द की आवाज़ सुनी। जुमला अंग्रेज़ी में

कहा गया था। थोड़ी देर तक कोई आवाज़ नहीं आई। शाहिना का दिल बुरी तरह धड़क रहा था।
"ऐसा नहीं हो सकता—" बेगम इर्शाद की आवाज़ आई।
"तुम मजबूर हो—" मर्द ने कहा।
उसके बाद बेगम इर्शाद की आवाज़ नहीं सुनाई दी।
"तुम खामोश क्यों हो गईं—क्या आज भी कुछ नहीं हो सका?"
"क्या....?" बेगम इर्शाद की आवाज़ आई।

276

"तब तो तुम्हारे बुरे दिन करीब आ गए हैं।"
"देखो.... खुदा के लिये मुझे बर्बाद न करो।"
"मैं क्या कर सकता हूँ। अपनी बर्बादी का बाइस (कारण) तुम खुद बनोगी।"
"मेरे खुदा, मैं क्या करूँ!"
"वही करो जो कहा जा रहा है।" मर्द ने कहा। "वरना तुम देख रही हो मेरी कूवत (शक्ति).... तुम जैसी औरत शहर की मुतअफ़्फ़िन (दुर्गंधयुक्त) गलियों में ठोकरें खाती फिर रही है।"
"रहम करो।" बेगम इर्शाद गिड़गिड़ाईं।
"मैं रहम भी कर सकता हूँ मगर उसी सूरत में जब मेरे कहने पर अमल किया जाए। वरना उसे कभी न पा सकोगी। इस ख्याल में न रहो कि वो मर चुका है।"
फिर सुकूत (सन्नाटा) तारी हो गया। शाहिना को अपने दिल की धड़कनें सर में धमकती महसूस हो रही थीं। वो अंधेरे में आँखें फाड़ती रही लेकिन उसे अपनी माँ के अलावा और कोई न दिखाई दिया।
फिर उस ने उसे भी इमारत की तरफ वापस जाते देखा। वो चली गई और शाहिना ने कुछ देर बाद सदर दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुनी।

वो वहीं खड़ी रही। उसे सख्त हैरत थी कि वो आदमी कौन है। गुफ़्तगू अंग्रेज़ी में हुई थी और उस का लहजा ग़ैर-मुलकियों (विदेशियों) का सा था।
आख़िर वो उस की माँ को इस तरह खौफज़दा क्यों कर रहा था और वो किस लिये उसे शहर की मुतअफ़्फ़िन गलियों में ठोकरें खाने पर मजबूर कर रहा था। बेगम इर्शाद एक

मालदार बेवा (विधवा) थीं। शहर की ज़ी-इज़्ज़त (सम्मानित) औरतों में उन का शुमार होता था। वो पार्लियामेंट की मेंबर भी थीं। बेगम इर्शाद एम.पी. से शहर का बच्चा- बच्चा वाकिफ था क्योंकि समाजी बहबूद (समाज कल्याण) के सारे कामों के सिलसिले में उन का नाम सर-ए-फ़ेहरिस्त (सूची में सबसे ऊपर) हुआ करता था।
शाहिना ख्यालों में खोई खड़ी रही। उसे इस का अहसास भी नहीं था कि सदर दरवाज़ा अंदर से बंद हो जाने के बाद अपनी ख्वाबगाह (शयनकक्ष) तक पहुँचने के लिये दुश्वारियों का सामना करना पड़ेगा। उस में इतनी हिम्मत भी नहीं थी कि उस जगह जाती जहाँ उस की माँ ने खड़ी होकर उस आदमी से गुफ़्तगू की थी। कुछ देर बाद वो इमारत की तरफ वापस हुई।
ख्वाबगाह तक पहुँचने के लिये उसे काफी जद्दोजहद (संघर्ष) करनी पड़ी क्योंकि खिड़की ज़मीन से सात-आठ फुट ऊँची थी और यही गनीमत था कि वो उसे खुला छोड़ आई थी। वरना या तो उसे रात बाहर बसर करनी पड़ती या फिर बेगम इर्शाद को मालूम हो जाता कि उस ने उस का तआक़ुब (पीछा) किया था।

277

शाहिना ठीक से न सो सकी। बार-बार उसे वही वाक़िआत याद आते और एक अनजाना सा ख़ौफ़ उस पर मुसल्लत होता जाता। वो जानती थी कि बेगम इर्शाद उसे कुछ नहीं बताएँगी। इस लिये उस की परेशानी और ज़्यादा बढ़ गई थी।

आख़िर सुबह उस ने क्राइम रिपोर्टर अनवर को फ़ोन किया जिस की उस से अच्छी ख़ासी जान पहचान थी।
वो जानती थी कि अनवर अक्सर लोगों के लिये काम करता रहता है। ये और बात है कि वो किसी की शक्ल की तरह महज़ एक नज़र देख लेने की फ़ीस भी वसूल कर लेता रहा हो।

शाहिना ने उस से दरख़्वास्त की कि वो सिर्फ़ पंद्रह मिनट के लिये इर्शाद मंज़िल आ जाए लेकिन अनवर ने साफ़ इनकार कर दिया। उस ने कहा कि वो चार बजे शाम को अपने फ़्लैट में मिल सकता है।

शाहिना को इस पर बड़ा ग़ुस्सा आया लेकिन ख़ामोश ही रह गई क्योंकि उसे उस से एक काम लेना था। शाहिना अल्ट्रा मॉडर्न क़िस्म की लड़की थी। सोसाइटी की रूह-ए-रवां

(जान)। शायद ही कभी कोई उस की इल्तिजा को ठुकराता।

ठीक चार बजे वो अनवर के फ़्लैट में जा पहुँची। वो मौजूद था। उस ने वाक़िआत को और बुरा सा मुँह बना कर सुना।

"हाँ! तो इसमें परेशानी की क्या बात है। जवानी के रोमन (रोमांस) अमूमन (अक्सर) बुढ़ापे में ही आदमी को शायरी पर मजबूर करते हैं।"

"क्या मतलब....?"

"मतलब साफ़ है। बेगम इर्शाद जैसी अरब पति औरतों के लिये किस क़िस्म के मसाइल (समस्याएं) पैदा हो सकते हैं। किसी क़िस्म के लोग उन्हें शहर की गंदी गलियों में ठोकरें खाने पर मजबूर करते हैं। क्या वो आदमी कोई ब्लैकमेलर नहीं हो सकता....?"

"यही तो तुम्हें मालूम करना है।"

"और उस के बाद?"

"उस के ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई।"

"क्या बेगम इर्शाद ख़ुद ही कोई ऐसा इक़दाम (कदम) नहीं कर सकतीं?"

"शायद नहीं।"

"इन हसीन घूँघरियाले बालों के नीचे मग़ज़ नहीं है?" अनवर ने तंज़िया (व्यंग्यात्मक) मुस्कराहट के साथ कहा। "दिल जिस क़दर अपने जिस्म को संवारती हो उसी तरह ज़हन को भी निखारो तो क्या बुराई है।"

" किसी स्कूल मास्टर से मैट्रिक पास करने का नुस्ख़ा मालूम करने के लिये नहीं आई।"

शाहिना भी झुँझला गई।
"तो जाओ.... तुम्हें रोका है किसी ने।"
"तुम बहुत मग़रूर हो गए हो।"
"हाँ.... पहले ही से था। मैं उस वक़्त भी मग़रूर था जब इसी शहर में अक्सर फुटपाथों पर गुज़री हैं। वैसे मुझे खुश रखने का बेहतरीन तरीक़ा ये है कि पहले कुछ निकाल कर सामने वाली मेज़ पर रख दो फिर मुझ से गुफ़्तगू करो।"
शाहिना चंद लम्हे उसे हिक़ारत-आमेज़ (नफ़रत भरी) नज़रों से घूरती रही फिर बैग से नोटों की एक गड्डी निकाल कर मेज़ पर फेंकती हुई बोली।
"ये एक हज़ार हैं।"
अनवर ने मेज़ पर रखी हुई घंटी बजाई। एक लड़का कमरे में दाख़िल हुआ और अनवर ने कहा। "चाय।" फिर शाहिना से पूछा।
"मोहतरमा आप चाय मुनासिब समझेंगी या कॉफ़ी?"
"कुछ भी नहीं। मुझे ज़्यादा न चढ़ाओ—काम की बात करो।"
अनवर ने लड़के को जाने का इशारा करते हुए कहा।
"मैं ये अर्ज़ कर रहा था मोहतरमा कि अगर बेगम इर्शाद उस के ख़िलाफ़ कोई क़ानूनी कार्रवाई कर सकतीं तो उन्हें शहर की गंदी गलियों में ठोकरें खाने की क्या ज़रूरत थी।"
"फिर क्या हो सकेगा।"
"ये मुमकिन है कि उस ब्लैकमेलर को रास्ते से हटा दिया जाए। लेकिन.... ये एक मुश्किल काम है। अख़राजात (ख़र्च).... बेतहाशा होंगे।"
"फिर वही अख़राजात....!" शाहिना उसे घूरने लगी।
"ओहो.... मुझे इत्मीनान है—शाहिना इर्शाद मुझ से गुफ़्तगू कर रही हैं। हाँ तो आप ने कहा कि वो कोई ग़ैर-मुलकी (विदेशी) था?"
"लहजे से यही मालूम होता था।"
"अंग्रेज़?"
"मुझे इस का सलीक़ा नहीं है—बस मुल्की और ग़ैर-मुलकी लहजे में फ़र्क़ कर सकती हूँ।" "ख़ैर! बेगम इर्शाद के मिलने जुलने वालों में किसी ग़ैर-मुलकी से वाक़िफ़ हैं आप?"
"बहुतेरे हैं.... लेकिन....!" शाहिना कुछ सोचने लगी फिर बोली। "लेकिन वो दोनों।" "कौन दोनों?"

279

"मेरा ख़याल है कि उन दोनों पर शुबा (संदेह) किया जा सकता है। ममी उन्हें पसंद नहीं करतीं लेकिन फिर भी वो कभी-कभी हमारे घर आते रहते हैं।"
"मैं अब नहीं पूछूँगा कि वो कौन हैं।" अनवर झिंझला गया।
"दो अंग्रेज़ बाप-बेटे। रॉजर डंगी टेल और हंटर डंगी टेल। ये दोनों अभी हाल ही में इंग्लैंड से आए हैं और ममी से यहाँ की सनअतों (उद्योगों) में इश्तिराक (साझेदारी) करना चाहते हैं।"
"बेगम इर्शाद उन्हें नापसंद क्यों करती हैं?"
"वो सचमुच डंकी टेल हैं, पल्ले सिरे के गधे।"
"आप उन की आवाज़ें तो पहचानती ही होंगी?"
"मैं वूसूक़ (विश्वास) से नहीं कह सकती।"
"क्या पिछली रात बोलने वाला उन में से कोई था?"
"मैं अंदाज़ा नहीं कर सकी। मुझे दरअसल होश ही नहीं था।"
"अगर बेगम इर्शाद को मालूम हो गया कि मैं उन की टोह में हूँ तो वो क्या करेंगी?" "कुछ भी करें लेकिन इस सिलसिले में मेरा नाम न लिया जाए।"
"क्यों?"
"क्योंकि वो मुझे इन हालात से ला-इल्म (अनजान) रखना चाहती हैं।"
"अच्छी बात है मैं देखूँगा।"
"परसों मेरी सालगिरह (जन्मदिन) है।" शाहिना ने कहा। "मैं तुम्हें मदऊ (आमंत्रित) करूँगी। उस भीड़ में तुम्हें काम करने का बेहतरीन मौक़ा मिल सकेगा।"
अनवर चंद लम्हे कुछ सोचता रहा फिर बोला।
"ठीक है।"
"तुम ये बताओ कि मुआवज़ा क्या लोगे?"
"ये एक हज़ार ख़र्च हो जाने के बाद ही अंदाज़ा कर सकूँगा।" अनवर ने मेज़ पर पड़ी

हुई गड्डी की तरफ़ इशारा किया।
"तुम आख़िर पैसों पर इस बुरी तरह क्यों जान देते हो?"
"पैसे....!" अनवर ठंडी सांस लेकर बोला। "क्योंकि ये मुझ तक ग़ैर-मुतवक़्क़ो (अप्रत्याशित) तौर पर पहुँचते हैं। सच पूछो तो मैं सोच रहा था कि अब मुझे मकान मालिक की बीवी से इश्क़ करना ही पड़ेगा क्योंकि चार माह से फ़्लैट का किराया नहीं अदा हो सका था।"

280

"तुम झूठ बोल रहे हो।"
"मैं आप से इस पर बहस नहीं करूँगा क्योंकि अभी आप से मज़ीद आमदनी की तवक़्क़ो (आशा) है।"
"तो तुम आज से काम शुरू कर रहे हो?"
"इसी वक़्त से.... और ये काम चंद सवालात से शुरू हो जाएगा। पहला सवाल—क्या बेगम इर्शाद के किसी ऐसे दोस्त को आप जानती हैं जो उन के तबक़े (वर्ग) से तअल्लुक़ न रखता हो?"
"क्या मतलब....?"
"मतलब ये कि ऐसा दोस्त जिस की तलाश में वो शहर की गंदी गलियों में ठोकरें खाने पर मजबूर हों।"
"मैं समझती हूँ तुम्हारा मतलब!" शाहिना ने ग़ुस्सैल लहजे में कहा। "तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाना चाहते हो।"
"मैं सिर्फ़ मालूमात हासिल करना चाहता हूँ।"
"मैं ये सब कुछ नहीं जानती।"
"लेकिन मेरा ये सवाल तुम्हारे शुबहात (संदेह) से बहुत क़रीब है क्यों?"
"तुम ने फ़र्ज़ कर ली है ये बात?"
"नहीं ये हक़ीक़त है—तुम भी वही सोचती हो जो मेरे ज़हन में है—वरना तुम यहाँ आने की बजाए महकमा-ए-सुराग़-रसानी (जासूसी विभाग) के अफ़सर से मिलतीं।" शाहिना कुछ न बोली। अनवर ने चंद लम्हे ख़ामोश रह कर कहा। "जवानी की लग़्ज़िशें

(ग़लतियाँ) अक्सर बुढ़ापे में फाँसी का फंदा बन जाती हैं।"
"तुम बद-तमीज़ हो।"
"यक़ीनन! चूंकि तुम से मज़ीद रक़म मिलने की तवक़्क़ो है इस लिये मैं इस ख़याल की तरदीद (खंडन) नहीं करूँगा।"
"नहीं—मैं कोई और ज़रिया तलाश करूँगी वरना तुम इसी तरह हमारी तौहीन करते रहोगे।"
"शौक़ से—रुपये उठाओ और रास्ते से तो वाक़िफ़ ही हो—इसी लिये मैं ने इन्हें अभी तक हाथ नहीं लगाया था—वरना शायद मैं वादा कर लेता कि तौहीन नहीं करूँगा।" "तुम सचमुच नीच हो।"
"बात ख़त्म हो गई—इस लिये इस ख़याल से मुत्तफ़िक़ (सहमत) नहीं हो सकूँ गा—तुम जा सकती हो।"
"मैं कहती हूँ तुम्हें ये काम करना ही होगा—वरना मैं तुम्हें गोली मार दूँगी।" "चलते-चलते इतनी नसीहत ज़रूर करूँगा कि आइंदा किसी मर्द से इस अंदाज़ में गुफ़्तगू न करना।"

281

"तुम्हारे तबक़े में मर्द होते ही कहाँ हैं।"
"अनवर....!"
"मैं सुन रहा हूँ।"
"ख़ुदा के लिये मेरी मदद करो। मम्मी ख़तरे में हैं। मैं इल्तिजा करती हूँ।"
अनवर ने नोटों की गड्डी उठा कर जेब में डाल ली। चंद लम्हे उस की आँखों में देखता रहा फिर बोला। "जाओ.... काम शुरू हो चुका है। जल्द ही नतीजे से आगाह कर दिया जाएगा। हाँ मुझे अपनी कामयाबी के मौक़ा पर दुआ करना मत भूलना।"
शाहिना ख़ामोश रही वो कुछ सोचने लगी थी।

(वहशत/आतंक)

कैप्टन हमीद ने अपनी रफ़्तार तेज़ कर दी मगर शायद वो लड़की छलावा थी। अगले ही मोड़ पर वो इस तरह ग़ायब हुई जैसे उस का वजूद ही न रहा हो।
हमीद ने एक तवील (लंबी) सांस ली और इस तरह सर उठा कर आसमान की तरफ़ देखने लगा जैसे उस पर बड़ा ज़ुल्म हुआ हो। वो चंद लम्हे चौराहे पर खड़ा रहा फिर मुख़्तलिफ़ सिम्त (दिशा) में चल पड़ा।
लड़की का तआक़ुब (पीछा) उस की उफ़्ताद-ए-तबा (स्वभाव) का नतीजा था। बल्कि ये उस की ड्यूटी थी। वो आज तक़रीबन एक हफ़्ते से उस लड़की के मुताल्लिक़ मालूमात फ़राहम (इकट्ठा) कर रहा था। लेकिन इस तरह नहीं कि उस से मिल बैठता। उस की आज तक उस से गुफ़्तगू भी नहीं हुई थी। इस सिलसिले में फ़रीदी के सख़्त तरीन ऑर्डर थे।
शायद हमीद अब तक सैकड़ों बार उस के साथ शहर की बेहतरीन तफ़रीहगाहों में रक़्स (डांस) कर चुका होता। लड़की बड़ी दिलकश थी लेकिन हमीद अब तक अंदाज़ा नहीं कर पाया था कि वो किस मुल्क या नस्ल से तअल्लुक़ रखती है। वैसे उस की रंगत गोरी थी। आँखें सब्ज़ (हरी) और वो यूरोपीयनों की तरह स्कर्ट पहनती थी। हमीद का ख़याल था कि उस की चाल भी बड़ी दिलकश है।
एक बात और भी पसंद थी वो ये कि वो लड़की आम औरतों की तरह न तो लिपस्टिक इस्तेमाल करती थी और न उस के नाख़ून बढ़े हुए थे। कभी-कभी रुख़सारों (गालों) पर हल्का सा पाउडर नज़र आता था।
हमीद उस के मुताल्लिक़ सोचता हुआ चलता रहा। फ़रीदी ने इस "निगरानी" की ग़रज़-ओ-ग़ायत (उद्देश्य) नहीं बताई थी।

282

और हमीद की मालूमात अभी तक इतनी ही थीं कि वो दिलशाद बिल्डिंग के एक फ़्लैट में रहती है, एक मक़ामी फ़र्म में काम करती है और उस का नाम मेरी सिंगलटन था। हल्क़ा-ए-अहबाब के मुताल्लिक़ हमीद का यही अंदाज़ा था कि वो ज़्यादा वसीअ (व्यापक) नहीं है।

इन चंद बातों के इलावा अभी तक कुछ भी नहीं मालूम कर सका था। लेकिन वो लड़की उसे

हतमन (निश्चित रूप से) पुर-इसरार (रहस्यमयी) मालूम होती थी।

और आज तो उस ने कमाल ही कर दिया था। पता नहीं उसे ज़मीन निगल गई थी या वो हवा में तहरीर (विलीन) हो गई थी। हमीद ने उसे किसी इमारत में भी दाख़िल होते हुए नहीं देखा था। वो सोचने लगा कि उसे इल्म हो गया है कि उस की निगरानी हो रही है।

आज कल फ़रीदी पर "निगरानी" का भूत सवार था। वो शहर के तक़रीबन डेढ़-दो दर्जन अफ़राद की निगरानी करा रहा था। मगर हमीद उस का शुक्रगुज़ार था कि वो लड़की उस के हिस्से में आई थी वरना निगरानी से ज़्यादा उकता देने वाला काम शायद ही कोई दूसरा हो। उस की समझ में नहीं आ रहा था कि अब उसे क्या करना चाहिये। वो चलते-चलते रुक गया और फिर एक पब्लिक टेलीफ़ोन बूथ की तरफ़ बढ़ा।

कुछ देर बाद वो लेडी इंस्पेक्टर रेखा के नंबर डायल कर रहा था। उसे तवक़्क़ो (आशा) थी कि वो घर ही होगी। उस का ख़याल ग़लत नहीं था। रेखा मिल गई। उस ने फ़रीदी के लहजे की नक़ल करते हुए रेखा से कहा कि वो पंद्रह मिनट के अंदर-अंदर "आर-लच्छू" में पहुँच जाए। रेखा ने ये भी नहीं पूछा कि उसे क्यों तलब किया जा रहा है।

टेलीफ़ोन बूथ से निकल कर हमीद ने एक टैक्सी की और "आर-लच्छू" पहुँच गया मगर हक़ीक़त तो ये थी कि अब इन होटलों वाली तफ़रीहात से उकता गया था। मगर करता भी क्या। कहाँ जाता।

तफ़रीह और लेडी इंस्पेक्टर रेखा के साथ? ये भी एक सवाल था क्योंकि वो आज कल हमीद से बुरी तरह ख़ार खाए हुए थी। यही वजह थी कि फ़ोन करते वक़्त हमीद को फ़रीदी का रोल अदा करना पड़ा था.... वो एक ऐसे गोशे (कोने) में बैठ कर उस का इंतज़ार करने लगा जहाँ दाख़िल होते ही रेखा की नज़र उस पर न पड़ सके।

कुछ देर बाद रेखा सदर दरवाज़े में दिखाई दी। हाल के वस्त (बीच) में पहुँच कर वो फिर रुकी और चारों तरफ़ देखने लगी। उस की नज़र हमीद पर पड़ी और हमीद ने कुछ इस तरह मुँह फेर लिया जैसे उसे उस की मौजूदगी का अब इल्म हुआ हो।

रेखा रियेक्शन हाल की तरफ़ बढ़ गई। हमीद जहाँ था वहीं बैठा रहा। कुछ देर बाद वो फिर डाइनिंग...

283

हाल में वापस आई। चंद लम्हे खड़ी कुछ सोचती रही फिर हमीद की मेज़ के क़रीब आकर बोली।

"कर्नल साहब कहाँ हैं?"
"पता नहीं।" हमीद ने ख़िलाफ़-ए-तवक़्क़ो बड़ी संजीदगी और शराफ़त से जवाब दिया। "मैं आधे घंटे से उन का मुंतज़िर हूँ। उन्होंने फ़ोन पर कहा था कि आर-लच्छू में मिलो।"
"मुझ से भी यही कहा था।" वो चारों तरफ़ देखती हुई बोली। ग़ालिबन सोच रही थी कि इसी मेज़ पर बैठ जाए या कोई दूसरी जगह मुंतख़ब (चुने) करे।
"बैठो....!" हमीद ने कहा और वो ग़ैर-इरादी तौर पर बैठ गई।
हमीद ख़ामोश ही रहा और उस के इस रवैये को रेखा हैरत से देख रही थी।
"तुम्हें कब फ़ोन किया था?"
"शायद आधा घंटा पहले की बात है।"
"क्या हिमाक़त है.... मैं तो तंग आ गया हूँ इस मुलाज़मत से।"
"मुमकिन है किसी वजह से हमारी मौजूदगी यहाँ ज़रूरी हो।"
"इन मुमकिनात और नामुमकिनात ने मेरी ज़िंदगी तल्ख़ (कड़वी) कर रखी है।"
"तो फिर तुम इस्तीफ़ा क्यों नहीं दे देते?"
"क्या उस के बाद जान बच सकेगी। फ़ादर हार्डस्टोन मुझे ज़िंदा रहने देगा?" "आज कल क्या चक्कर है?"
"वही पुराना चक्कर। कोई ऐसी लड़की नहीं मिलती जो शादी के लिये तैयार न हो।" "अब मुझे उठ जाना चाहिये।" रेखा बुरा सा मुँह बना कर बोली।
"फिर तुम ने चक्कर के मुताल्लिक़ किया पूछा था?"
"मेरा मक़सद था कि आज कल कौन सा केस है तुम लोगों के पास?"
"सूट केस....!" हमीद बुरा सा मुँह बना कर बोला। "और उस में बिच्छू भरे हुए हैं।

रेखा तुम कभी बोर नहीं होतीं?"
"होती हूँ। जब तुम ऊट-पटांग बातें करने लगते हो।"
हमीद एक ठंडी सांस लेकर रह गया।
रेखा ने कुछ देर बाद कहा। "लेकिन आज कल तुम बहुत बुझे-बुझे से नज़र आ रहे हो?" "तुम्हें क्या.... मैं जहन्नुम में जाऊँ।"

284

"कुछ भी नहीं.... ज़रूर जाओ।"
"वहाँ भी तुम्हारे लिये ठंडी आहें भरता रहूँगा।"
"ज़रूर ज़रूर....!" रेखा मुस्कुराई। "क्या तुम भी ठंडी आहें भरना चाहते हो?" "इतनी ज़्यादा कि अगर कभी तुम्हारी साइकिल की हवा निकल जाए तो मेरे पास लाना।" "तुम कब तक यहाँ बैठोगे?"
"जब तक कि फ़ादर हार्डस्टोन न आ जाए।"
"मगर मेरे लिये ये पहला इत्तिफ़ाक़ है।"
"मैं कब कहता हूँ कि तुम दोनों रोज़ाना यहाँ मिला करते हो।"
"फिर बकने लगे। मैं ये कह रही थी कि फ़रीदी साहब ने कभी ऐसा नहीं किया कि मुझे बुला कर ख़ुद ग़ायब हो जाएँ।"
"तुम्हें फ़ोन करने के बाद कोई दूसरी मिल गई होगी।"
"तुम हद दर्जा बदतमीज़ हो।" रेखा बिगड़ गई।
"ज़रा आहिस्ता बोलो वरना आस पास वाले तुम्हें कोई बद-मिज़ाज बीवी समझ लेंगे और मेरा मुस्तक़बिल (भविष्य) तारीक हो जाएगा। अभी तो शहर की लड़कियां ये समझती हैं कि कुँवारा है, जाएगा कहाँ।"
"मैं अब यहाँ नहीं बैठूँगी।"
"इस ज़िद पर जहाँ भी बैठोगी मेरा जलवा हर हाल में क़रीब से नज़र आएगा। लिहाज़ा मुनासिब है कि यहीं बैठी रहो।"
"तुम गधे हो।"
"बिल्कुल....!" हमीद सर हिला कर बोला। "मैं ने आज तक इस की तरदीद (खंडन) नहीं की

लेकिन फिर भी कोई लड़की मुझे अपना शौहर बनाना पसंद नहीं करती।"
"इस तज़किरे के इलावा और कुछ नहीं है तुम्हारे पास?"
"है क्यों नहीं। बैंक बैलेंस भी है लेकिन फिर भी कोई मुतवज्जा (आकर्षित) नहीं होती।"
"अपनी शक्ल देखी है कभी आईने में?"
"सुबह शाम देखता हूँ लेकिन अपनी पेशानी पर तुम्हारा नाम लिखा हुआ आज तक नहीं देखा।"
"मेरा नाम मेरी चप्पलों के तलवों से सरों पर पहुँचता है।"
"सुभान अल्लाह! तो आज कल तुम छापा-ख़ाना हो रही हो।"

285

"और आज कल तुम ज़हनी दिवालिया पन का शिकार हो रहे हो।"
"ये भी दुरुस्त है। इसी लिए मैं चाहता हूँ कि आज तुम दो एक राउंड मेरे साथ नाच डालो। वरना हो सकता है कि मेरी ज़हनी मौत आज ही वाक़े हो जाए।"
"मुझे इन नाच गानों से दिलचस्पी नहीं है बल्कि हंसी आती है उन गधों पर जो नाचते हैं।"
"इस के बावजूद भी कर्नल हार्डस्टोन को तुम्हारी परवाह नहीं होगी... अर्र... हम्प...!"
हमीद चौंक कर एक तरफ़ देखने लगा। रेखा भी मुड़ी लेकिन ये न समझ सकी कि हमीद चौंका क्यों था।
"क्या बात है?" उस ने आहिस्ता से पूछा।
"ये लड़की अनवर के साथ क्यों नज़र आ रही है।" हमीद बड़बड़ाया।
"कौन लड़की... हाँ है तो... मगर वो कौन है?"
"एक जवान और खूबसूरत लड़की। वैसे बाज़ लड़कियां बूढ़ी भी होती हैं और बदसूरत भी।"
"तुम कोई ग़ुस्सा दिलाने वाली बात कह रहे थे फिर पलट गए।"
"हाए ग़ुस्सा दिलाने वाली। तो वही तज़किरा छेड़ूँ। कर्नल हार्डस्टोन वाला।"

"तुम बेहूदा हो।"
"आख़िर मुझ में क्या ख़राबी है?"
"शट अप...!"
"अरे अगर वो इस सदी का सब से अजीब आदमी है तो मैं आने वाली सदियों का अजीब तरीन आदमी भी हो सकता हूँ। मगर फ़िलहाल इस तज़किरे को यहीं रहने दो। आख़िर ये शाहीन अनवर के साथ क्यों है।"
"तुम्हारे साथ होना चाहिए उसे?"
"लाहौल वला क़ुव्वत तुम्हारी मौजूदगी में मुझे कोई बूढ़ी बकरी भी पसंद नहीं आ सकती।"
"अगर मैं ने तुम्हें यहीं मर्दाना लहजे में गालियां देनी शुरू कीं तो क्या होगा।"
"बड़े मर्दाना अंदाज़ में मेरे हाथ चलेंगे। शुरू हो जाओ।"
रेखा अनवर और शाहीन की तरफ़ देखती रही। अनवर सियाह सूट और बे दाग़ सफ़ेद क़मीज़ में बड़ा शानदार लग रहा था और शाहीन अगर मर्द होती तो यक़ीनी तौर पर उसे नमोनिया हो गया होता। पता नहीं क्यों? हमीद यही सोच रहा था। उस ने रेखा से कहा।

"क्या ये औरतें अंगारे खाती हैं?"
"क्यों?"

286

"कितनी शदीद सर्दी है और यह शाहिना एक बालिश्त के ब्लाउज़ में है— आधा पेट खुला हुआ है—"

"तो क्या यह यूँ ही आई होगी—" रेखा ने बुरा सा मुँह बना कर कहा— "इसका कोट क्लोकरूम में होगा—"

"अरे तो क्या यहाँ सर्दी नहीं है?"

रेखा कुछ न बोली— हमीद ने कुछ देर बाद उस से कहा— "अगर आज तुम मेरे हम-रक़्स (dance partner) न बनीं तो इंतकाम बड़ा भयानक होगा—"

रेखा ने इस तरह गर्दन झटक दी जैसे कोई मच्छर उसके कानों के क़रीब शाम कल्याण अलाप रहा हो—

"तुम नहीं समझतीं वह अनवर का पट्ठा मुझे बहुत हक़ीर (तुच्छ) समझेगा— अगर एक राउंड भी इस कबूतरी के साथ नाच लिया—"
"मुझे इस से कोई दिलचस्पी नहीं है—"
"अच्छी बात है मैं तुम्हें देख लूँगा—"
"अच्छी ज़बरदस्ती है—" रेखा झुंझला गई— "तुम होश में हो या नहीं—"
हमीद वहाँ से उठा और तेज़ी से चलता हुआ रिक्रियेशन हॉल में आ गया— लेकिन अभी यहाँ सन्नाटा था— सचमुच उसे रेखा पर ताव आ गया था लिहाज़ा उसे जता देना चाहता था कि आर -लखनौ में उस का वक़्त बर्बाद कराने वाला वह खुद ही था— ज़ाहिर है कि यह मालूम होने पर रेखा आई की तरह चराग़-पा (अत्यधिक क्रोधित) होती— वह फिर डाइनिंग हॉल में वापस आया— रेखा अभी शायद उठने ही का इरादा कर रही थी—
"तो तुम मेरे साथ रक़्स नहीं करोगी—?"
रेखा कोई जवाब दिए बग़ैर जाने के लिये उठी—
"फिर मैं ने तुम्हें किस लिये बुलाया था?"
"क्या मतलब....?" रेखा उसे घूरने लगी—
"क्या मैं कर्नल के लहजे की नक़ल नहीं उतार सकता—"
"खुदा तुम्हें गारत करे—" रेखा एक लंबी सांस लेकर बैठ गई—
"अगर तुम इसी लहजे में हमेशा मुझसे गुफ़्तगू करती रहो तब भी गनीमत है— तुम्हें क्या पता कि जब तुम गुस्से की हालत में अपना ऊपरी होंठ सिकोड़ती हो तो मेरे दिल की दुनिया किस तरह सुकड़ने और फैलने लगती है—"
"उल्लू हो तुम....!" रेखा ने गुस्से की ज़्यादती में रो देने के अंदाज़ में बोली

—

287
उल्लू ही समझ कर मुझे ज़िंदा रहने दो—" हमीद ने ग़मनाक लहजे में कहा—
रेखा अपना निचला होंठ चबाती रही— हमीद फिर बोला— "आख़िर इस में तुम्हारा नुक़सान क्या है— अगर कभी मुस्कुरा कर मेरी तरफ देख लिया करो—"

"तुमने मेरा वक़्त बर्बाद कर दिया है—" रेखा दांत पीस कर बोली—
"और तुम मेरी ज़िंदगी बर्बाद कर देने पर तुली हुई हो—" हमीद ने फिर ठंडी सांस ली

—

"अब्के जाओ—"
"मगर तुम उठोगी नहीं—"
"नहीं— आज यहाँ कुछ हो कर रहेगा—"
"यानी....!"
"बस देख लेना— मैं तुम्हारे साथ रक़्स (dance) करूँगी—"
हमीद ख़ामोश हो गया— वह सोचने लगा कि रेखा कहीं वैसी ही कोई हरकत न कर बैठे जैसी एक बार 'कल नाइ़ट क्लब' में कर डाली थी—
"क्यों.... दम निकल गया ना—" दफ़अतन रेखा हंस पड़ी—
"अगर तुम इसी तरह हमेशा हंसते रहने का वादा करो तो मैं अपनी गर्दन काट कर 'नेशनल म्यूजियम' में रख दूँ—"
"यह लड़की कौन है?" रेखा ने शाहिना की तरफ देख कर पूछा—
"शाहिना.... इरशाद बेगम की लड़की....!"
"ओह.... अच्छा यह वही शाहिना है जिस ने पिछले साल बैडमिंटन की ट्राफी जीती थी—" "हाँ यह वही शाहिना है—"
"उसे अनवर के साथ देख कर तुम मुतहय्यर (staggered) क्यों हुए थे?"
"कुछ नहीं— अनवर उस तबक़े का आदमी नहीं है जिस से वह ताल्लुक रखती है—"
"तुम भी तो उस तबक़े के आदमी नहीं हो जिस से कर्नल फ़रीदी ताल्लुक रखते हैं—" "कर्नल फ़रीदी किसी तबक़े के आदमी नहीं हैं— वैसे अगर तुम उन्हें किसी तबक़े ही में रखना चाहती हो तो अभी तक उस तबक़े ने जन्म ही नहीं लिया—"
हमीद गुफ़्तगू तो रेखा से कर रहा था लेकिन उस की नज़र शाहिना की तरफ थी— अनवर कई बार कनखियों से उन की तरफ देख चुका था लेकिन पूरी तरह मुतवज्जा होने की कोशिश नहीं की और न हमीद ही ने—

उस की परवाह की—

"तुम उसे बुरी तरह घूर रहे हो—" रेखा ने कहा—

"हाँ मुझे उस पर गुस्सा आ रहा है— आख़िर यह अपना पेट क्यों दिखाती फिर रही है— क्या बदमाशी है— मुझे बड़ी नफरत मालूम होती है ऐसी औरतों से जो इस किस्म के ब्लाउज इस्तेमाल करती हैं— अगर मैं यहाँ लंगोटी लगा कर घुस आऊँ तो सारे शहर में शोर हो जाये गा— खैर मज़ाक छोड़ो संजीदगी से देखो— मेरा ख़्याल है कि जिस्म का सब से भद्दा हिस्सा पेट ही है—"

"अब तुम बे-तुकी बकवास पर उतर आये— तुम्हारी खोपड़ी है या सड़क कूटने का इंजन?"

हमीद अब भी शाहिना ही की तरफ देख रहा था— उन की मेज़ पर खाने-पीने की कुछ चीज़ें थीं— इस वक़्त वह दोनों काफी पी रहे थे— शाहिना के अंदाज़ से ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वह किसी बात पर झुंझला गई हो लेकिन चूंकि उन की मेज़ों के दरमियान काफी फासला था इस लिये हमीद उन की आवाज़ नहीं सुन सकता था— वैसे शाहिना के होंठ बहुत तेज़ी से हिल रहे थे— साथ ही आँखें भी सिकुड़ती थीं और कभी फैल जाती थीं— अनवर इस तरह उस की तरफ देख रहा था जैसे उस की बातें उस के लिये हैरत-अंगेज़ और गैर-मुतवक़्क़े (unexpected) रही हों—

फिर अचानक "चटाख़" की आवाज़ आई और हमीद की पलकें एक लम्हे के लिये झपक गईं क्योंकि यह आवाज़ उस थप्पड़ की थी जो अनवर के गाल पर पड़ा था—

अनवर उछल कर खड़ा हो गया— लेकिन वह इतना मुतहय्यर (staggered) था कि फिर वहाँ से हट भी न सका—

शाहिना हलक फाड़-फाड़ कर चीख़ रही थी—

"हाँ सूअर के बच्चे— मेरे पांच सौ पचपन शौहर हैं— तुझ से मतलब— मैं पांच सौ पचपन शौहरों की बीवी हूँ.... कुत्ते.... फिर तुझे क्या—"

फिर वह अपने कपड़े नोचने लगी— ख़ासा हंगामा बरपा हो गया— कुर्सियां खाली होने लगीं— इन दोनों के गिर्द भीड़ बढ़ती जा रही थी— शाहिना अब भी चीख़-चीख़ कर अपने पांच सौ पचपन शौहरों का प्रोपगेंडा कर रही थी—

दफ़अतन हमीद ने अनवर का हाथ पकड़ कर उसे भीड़ से बाहर खींच लिया—

"यह क्या हो रहा है?"

"पता नहीं मुझे खुद भी हैरत है—" अनवर ने पुर-सुकून लहजे में जवाब दिया— उस के अंदाज़ से ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वह इस वाकये से बे-ताल्लुक हो और एक तमाशाई से ज़्यादा हैसियत न रखता हो—

शाहिना ने मेज़ उलट दी— मजमा पीछे हटा— न सिर्फ पीछे हटा बल्कि काई की तरह फटने लगा—

289

शाहिना, हाथ में आती हुई हर चीज़ मजमे पर फेंक रही थी।

"देखो....!" हमीद ने अनवर से कहा— "यह होश में नहीं मालूम होती— क्या तुमने इसे कहीं....!"

"नहीं....!" अनवर तशवीशकुन (चिंताजनक) लहजे में बोला— "क्या यह कपड़े भी उतार फेंकेगी?"

शाहिना वहशियों की तरह उछल-कूद रही थी— उस के बाल बिखर गये थे और जिस्म पर सिर्फ पेटीकोट और महरम (एक प्रकार का वस्त्र) रह गये थे—

हमीद और रेखा

आर लखनौ का मैनेजर बौखलाया हुआ चारों तरफ दौड़ रहा था— हमीद ने उसका हाथ पकड़ कर रोकते हुए कहा—

"इस पर किसी किस्म का दौरा पड़ा है—"

"जी हाँ— जी हाँ— फिर बताइये मैं क्या करूँ?"

"एक कमरा खाली करा दीजिये— वरना देखिये आपका बिजनेस....!"

"जी हाँ.... जी हाँ—" वह पागलों की तरह बोला और एक तरफ दौड़ता चला गया—

शाहिना चिंगहाड़ती हुई फर्श पर बैठ गई और अब दोनों हाथों से अपने बाल नोच रही थी

—

"हट जाइये— बराह-ए-करम— हट जाइये—" हमीद मजमे को हटाने लगा—

लेकिन भला उसकी कौन सुनता— लोग उल्टे उस पर फब्तियां कसने लगे और फिर उसकी पेशानी पर तो यह लिखा नहीं था कि वह महकमा-ए-सुराग-रसानी (जासूसी विभाग) का कोई ऑफिसर है— हो सकता है इस मजमे में दो-एक उसकी जान-पहचान के भी रहे हों— मजबूरन हमीद को होटल का लाउडस्पीकर इस्तेमाल करना पड़ा—

"ख़वातीन व हज़रात! बराह-ए-करम आप मरीज़ा के पास से हट जाइये—" उसकी आवाज़ हॉल में गूँज उठी— "इन खातून पर आसाबी (स्नायु) दौरे पड़ते हैं.... बहुत बहुत शुक्रिया.... मगर बाईं जानिब अभी जो भी खड़े हैं बराह-ए-करम आप लोग भी हट जाइये—"

बहरहाल तमाम वह मजमा हटाने में कामयाब हुआ— इतनी देर में तीन ड्यूटी के कांस्टेबल भी सड़क पर से आ गये थे और शाहिना अब फर्श पर बे-हिसो-हरकत पड़ी हुई थी — रेखा ने उसका जिस्म उसकी....

290

साड़ी से ढांक दिया।

फिर कुछ देर बाद वह उसे एक स्ट्रेचर पर उठा कर मैनेजर के खाली कराए हुए कमरे में ले गये। शाहिना अब भी बेहोश थी। हमीद ने डॉक्टर के लिये रिंग किया और फिर कमरे में रेखा और हमीद के अलावा कोई न रह गया। हमीद अनवर को बहुत गौर से देख रहा था।

"पांच सौ पचपन शौहरों का क्या किस्सा था?" उस ने पूछा।

"पता नहीं—"

"थप्पड़ मारने से क़बल वह क्या कह रही थी?"

"याद नहीं लेकिन वह गुफ़्तगू क़तई हज़ियानी क़िस्म की थी—"

"क्या तुम दोनों में अरसे से दोस्ती है?"

"मुझे याद नहीं—"

"तुम ज़मीन ही पर हो ना?" हमीद गुर्राया।

"हाँ....!" अनवर ने लापरवाही से जवाब दिया और शाहिना की तरफ देखने लगा।

"रेखा....!" हमीद बोला— "डायरेक्टरी में बेगम इरशाद के नंबर देख कर उन्हें फोन कर दो—"

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]

"□□□□.... □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□—"

"□□....!" □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□— □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ —

"□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□—"

"□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□—" □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□—

"□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□— □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□—" □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□—

"□□□ □□□ □□□□□□□ (□□□) □□ □□□ □□□ □□□ □□—"

"□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□—" □□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□□□□□□□□□□) □□□□ □□□ □□□—

"□□ □□ □□□□ □□□— □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□—"

□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ (□□□□□) □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□—

"□□□□□.... □□□□□ □□□□ □□□□□— □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□— □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□—" □□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□— "□□ □□□—"

□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□—

"□□□ □□□□ □□□□□□ (□□□□□) □□□ □□□□—" □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□—

292

"□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□— □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ —"

"□□□□.... □□□□....!"

"□□□ □□□□□ □□□□□-□□□ □□□□□□—"

"□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□—"

"ओह.... बस मैं यह चाहती हूँ कि वह मेरी बच्ची से न मिला करे—"
"मैं उसे अच्छी तरह समझा दूँ गा— आप मुतमइन रहिये— लेकिन मैं ने डॉक्टर को बुलवाया है—"
"बेकार है कैप्टन हमीद—" बेगम इरशाद बड़बड़ाई— "यह किसी क़िस्म का मर्ज़ नहीं— मेरा दावा है कि इस सूअर ने उसे किसी नशे का आदी बना लिया है—"
"हो सकता है— अच्छी बात है— बेगम इरशाद क्या आप अपनी गाड़ी लाई हैं—"
"जी हाँ.... मेरी गाड़ी कंपाउंड में मौजूद है—"
"ठीक है—" हमीद ने कहा और फिर रेखा से बोला— "बेगम इरशाद का हाथ बटाइये मिस रेखा—"
रेखा और बेगम इरशाद ने बेहोश लड़की को उठा कर स्ट्रेचर पर डाला और दो कांस्टेबलों की मदद से बेगम इरशाद की कार तक पहुँचा दी गई—
हमीद और रेखा फिर अंदर वापस आये— बेगम इरशाद ने डॉक्टर के लिये फीस दे दी थी— "अब तुम लोग जा सकते हो—" हमीद ने कांस्टेबलों से कहा— "सब ठीक है—" उन्होंने अनवर की तरफ़ देखा और हमीद फिर बोला— "मैं देख लूँ गा— तुम लोग जाओ—" कांस्टेबल चले गये—
"क्यों दम निकल गया ना—" अनवर के होंठों पर एक ज़हरीली सी मुस्कराहट थी—
"हाँ निकल गया— अब तुम भी दफ़ा हो जाओ—"
"मेरा नाम अनवर है.... ऑनरेरी कैप्टन हमीद—"
"मैं कब कहता हूँ कि तुम्हारा नाम पिपलाजोय है.... दोगले लिंडी डॉग—"
"बोटियां नोचो अपनी—" अनवर उठता हुआ बोला—
रेखा इस दौरान में उन्हें हैरत से देख रही थी— अनवर के चले जाने के बाद उस ने कहा— "तुम्हारा रवैया इस सिलसिले में शुरू से ही गैर-मुतवक़्क़े (unexpected) रहा था—"
"ओह.... छोड़ो.... हाँ तो मैं यह कह रहा था कि....!"
लेकिन जुमला पूरा होने से पहले ही आर लखनौ का मैनेजर आ धमका—

"यह सब क्या हो गया.... कप्तान साहब—"
"बैठिये.... यह बताना तो मुश्किल है.... लेकिन....!"
"मेरा ख़याल है कि वह भंग पिये हुए थी—"
"मुमकिन है—"
"आर लखनौ (R Lucknow) का रेपुटेशन बुरी तरह ख़राब हो रहा है—" मैनेजर मुतफ़क्किराना (चिंतित) लहजे में बोला— "यहाँ आए दिन ऊँचे तबक़े के लोग बिल्कुल लोफरों के से अंदाज़ में हड़बोंग मचाते हैं— अभी कुछ ही पहले यहाँ एक बड़े आदमी ने दूसरे बड़े आदमी पर शोरबे की प्लेट खींच मारी थी— और एक लड़की का अगवा हो गया था

— "

"हाँ वाक़ई यह बहुत बुरी बात है—"
"फिर बताइये मैं क्या करूँ— अगर यही हालत रही तो कुछ दिनों बाद यहाँ उल्लू बोलने लगेंगे—"
"आप बाहर एक बोर्ड लगवा दीजिये जिस पर तहरीर हो— बराह-ए-करम ख़वातीन भंग पी कर तशरीफ़ न लायें—"
मैनेजर हँसने लगा फिर संजीदगी से बोला— "ऊपरी तबक़ा अख़लाक़ी (नैतिक) हैसियत से बिल्कुल दिवालिया होता जा रहा है—"
"तब तो फिर आप इसी इमारत में अख़लाक़ियात का एक स्कूल क़ायम कर दीजिये—" "कप्तान साहब! मैं संजीदगी से आप का मशवरा चाहता हूँ—"
"संजीदगी से मशवरा यह है कि आप यहाँ शराब के साथ साथ भंग भी फ़रोख़्त (बिक्री) कीजिये— ज़ाहिर है कि उस सूरत में इस क़िस्म के हंगामे कोई वुक़अत (महत्व) न रखेंगे वरना आप उन औरतों को तो रोक ही नहीं सकेंगे जो बाहर से भंग पी कर यहाँ आती हैं—"
मैनेजर कुछ न बोला— कुछ देर तक वह ख़ामोश बैठा रहा फिर उठ कर चला गया।
"तुम आज सचमुच अजीब लग रहे हो—" रेखा मुस्कुरा कर बोली।
"और अजीब आदमियों पर लड़कियां बुरी तरह मरती हैं.... हाहा.... यह भी अजीब लतीफ़ा है— उन से पूछो कि तुम उस पर क्यों मरती हो जवाब मिले गा वह कुछ खोया खोया सा रहता है

— इंतहाई रोमांटिक! लेकिन अगर इत्तिफ़ाक़ से उन्हें कोई खोया खोया सा रहने वाला शौहर मिल गया तो वह सौ फ़ीसदी उल्लू का पट्ठा और गाउदी हो गा— न वह उन्हें अजीब लगे गा और न रोमांटिक— उसे वह संनकी और झक्की कहेंगी—"

"तुम से इतनी बकवास करने को किस ने कहा था?"

"ओह.... रेखा! बस ख़त्म करो— हाँ मैं यह कह रहा था कि तुम्हारे गुलाब की पंखुड़ियों जैसे होंठ हर वक़्त मेरे ज़हन में चक्कर आते रहते हैं जब तुम अपनी घनी पलकें....!"

294

"शट अप—"

"रेखा.... उठो.... रक़्स के लिये मौसीक़ी शुरू हो गई है ऐसे लम्हात बार बार नहीं आते — बाहर यक़ीनी तौर पर चाँदनी खेत कर रही होगी— हवाएँ ख़ुशगवार होंगी और चाँद बादलों के टुकड़ों में अपने अबा जान के साथ आँख मिचोली खेल रहा होगा— उठो वरना हश्र नहीं होगा फिर कभी—"

"मुझे नींद आ रही है— मैं अब घर जाऊँगी— मगर ठहरो— यह शाहिना का क्या क़िस्सा था— तुम अनवर को बुरी तरह ताड़ खा गये थे फिर उसे इतनी आसानी से क्यों चले जाने दिया—"

"कुछ नहीं यूँ ही—" हमीद ने लापरवाही से कहा— "इन सब बातों का इन्हसार मेरे मूड पर है—"

"मगर बेगम इरशाद से यह कहने की क्या ज़रूरत थी कि अनवर की जेब से कोकीन का पैकेट बरामद हुआ है—"

"ज़बान ही तो हिलानी पड़ी थी— मेरा क्या नुक़सान हुआ—"

"लेकिन उस ने तो इसे हक़ीक़त ही समझा था—"

"मगर इस के बावजूद वह सिर्फ़ इतना ही चाहती है कि अनवर उस की लड़की से न मिला करे— उस ने उस के ख़िलाफ़ किसी क़ानूनी कार्रवाई का इरादा नहीं ज़ाहिर किया था—"

"हाँ यह बात भी अजीब है—"

"पता नहीं अजीब है भी या नहीं— बहरहाल मैं इस सिलसिले में मग़ज़ खपाने के लिये तैयार नहीं हूँ— तुम भी ख़ाहमख़ाह खुद को बोर न करो—"

रेखा कुछ कहने ही वाली थी कि एक वेटर मेज़ के क़रीब आकर हमीद से बोला— "आपका फ़ोन है जनाब—"
"ओह.... अच्छा!" हमीद उठता हुआ बोला—
वह मैनेजर के कमरे में चला गया— मैनेजर मौजूद नहीं था— शायद हमीद को इत्तला दिलवाने के बाद वहाँ से उठ गया था—
"हेलो....!"
"हमीद....!" दूसरी तरफ़ से फ़रीदी की आवाज़ आई—
"जी हाँ.... फरमाइये—"
"तुम्हारा दिल इस सिलसिले में तसल्ली बख़्श रहा—"
"आप क्या जानें—" हमीद ने हैरत से कहा—
"तुम इस क़िस्म के फ़ुज़ूल सवाल मुझसे न किया करो—"
"तो क्या आज कल फिर आप ने अपना जाल सारे शहर में फैला रखा है—"

295
"सुनो....!" दूसरी तरफ़ से आवाज़ आई— "रेखा का पीछा छोड़ो— इस वक़्त वह लड़की मे-पुल में एक ऑस्ट्रियन के साथ नाच रही है— इस वक़्त जो आदमी उस की निगरानी कर रहा है उस के लिये यह काम आसान नहीं है—"
"लिहाज़ा मैं सिर के बल दौड़ता हुआ वहाँ पहुँच जाऊँ?" हमीद ने झिझला कर कहा— "नहीं ऐसी हरकत न करना— वहाँ पहुँचने के लिये तुम टैक्सी इस्तेमाल कर सकते हो

— "

"वैसे भी मैं हेलीकॉप्टर इस्तेमाल करता लेकिन रेखा का क्या करूँ?"
"क्या वह तुम्हारी दुम से बंधी हुई है?" फ़रीदी ने ना-खुशगवार लहजे में कहा— "अच्छा तो मे-पुल में मुझे क्या करना होगा?"
"निगरानी....!"

"मेरे खुदा....!" हमीद भर्राई हुई आवाज़ में बोला— "मैं किसी भैंसे की निगरानी कर सकता हूँ, किसी लड़की की निगरानी दूर से नहीं हो सकती— आप खुद सोचिये कि कैसी दुश्वारी होती होगी— दिल को किस तरह समझाता रहूँ गा— मगर मेरा दिल आज कल उर्दू में तो कुछ समझता ही नहीं—"
"बकवास बंद— मे-पुल जाओ— अब दूर से निगरानी ज़रूरी नहीं— तुम उस से क़तई मिल सकते हो बशर्ते कि यह भी ज़रूरी नहीं है कि तुम उसे अपना नाम और पता ग़लत बताओ—" "खुदा आप को इस से ज़्यादा तरक़्क़ी अता फरमाये—" हमीद ने ठंडी सांस ले कर उसे लंबी लंबी दुआएं देनी शुरू कर दीं लेकिन दूसरी तरफ़ से सिलसिला मुनक़ता (टूट) हो चुका था—
हमीद फिर हॉल में वापस आ गया— रेखा अब भी उसी मेज़ पर मौजूद थी—
हमीद ने उस से कहा— "मेरे भतीजे की बीवी के साले का इंतक़ाल हो गया है इस लिये मुझे फ़ौरन दस मिनट के अंदर अंदर ही पहुँच जाना चाहिये—"
"अरे.... वह.... वही तो नहीं जो.... वहाँ रहते थे—"
"हाँ वही....!"
"तब तो मैं भी चलूँगी तुम्हारे साथ क्योंकि मरहूम से मेरी भी जान-पहचान थी—" "वह दूसरे थे तुम उन्हें नहीं पहचानतीं—"
"मैं अच्छी तरह जानती हूँ— पिछले ही साल हम दोनों साथ काम करते थे—" "उन्होंने आज तक कोई काम ही नहीं किया—"
"तुम्हें न बताया होगा— मैं भी चलूँगी—"

296
हमीद सोचने लगा— यह क्या मुसीबत आई— रेखा ने कहा— "मैं आज तुम्हें तन्हा कहीं न जाने दूँगी— तुम्हारे सितारे अच्छे नहीं हैं—"
"बिल्कुल ठीक है— तुम मुझ से ज़्यादा ज्योतिष नहीं जानतीं—"
"ज्योतिष की ऐसी की तैसी में तो चलूँगी— वरना तुम बड़े ख़सारे में रहोगे— मैं सच कहती हूँ यहीं कोई दूसरा तूफ़ान खड़ा हो जाएगा और तुम अपनी गर्दन न छुड़ा सकोगे—"

"अरे बाप रे—" हमीद कराह कर कुर्सी में ढेर हो गया— फिर चंद लम्हे बाद बोला— "फ़रीदी साहब का फ़ोन था— वह मुझे एक जगह काम से भेजना चाहते हैं—"
"कुछ भी हो— मैं चलूँगी—"
"चलोगी?"
"हाँ ज़रूर चलूँगी—"
"अच्छा तो दो मिनट ठहरो—" हमीद ने उठना चाहा लेकिन रेखा ने उस के कोट का दामन पकड़ कर आहिस्ता से कहा— "क्या फ़ायदा मैं सब के सामने गिरेबान में हाथ डाल दूँ

— "

"मर गये—" हमीद भर्राई हुई आवाज़ में बड़बड़ाया— फिर तेज़ी से बोला— "अगर मुझे देर हुई तो इस के लिये तुम्हें जवाब-देही करनी पड़ेगी—"
"मैं करूँगी— तुम फ़िक्र न करो—"
"अच्छी बात है चलो—" हमीद एक तवील (लंबी) सांस ले कर बोला—
उस के साथ रेखा भी उठ गई— वह दोनों बाहर आये—
"मेरी गाड़ी मौजूद है—" रेखा ने कहा।
"हैं! तुम्हारे पास भी गाड़ी है?"
"मेरी नहीं— मेरे भाई की है—"
"मैं तो समझता था कि तुम इस दुनिया में तन्हा हो इसी लिये मुझे तुम से इतनी हमदर्दी थी— अब तुम्हारा रास्ता अलग है और मेरा अलग—"
"कल से— इस वक़्त तो दोनों एक ही रास्ते पर चलेंगे—"
"फादर हार्डस्टोन मेरे सर के हज़ार टुकड़े कर देगा— उस ने कहा था कि रेखा को साथ न ले जाना—"
"बकते रहो— मुझे कुछ नहीं सुनाई देता—"

297
रेखा अगली सीट पर बैठती हुई बोली— "आओ—"

"नहीं मैं पीछे ही ठीक रहूँ गा—" हमीद पिछली नशिस्त (सीट) पर ढेर हो गया।

"कहाँ चलूँ?"

"अर्जुन पुरा—" हमीद ने हांफते हुए कहा।

चुभन

जैसे ही कार पार्क की लेन में घुसी हमीद निकल भागने के लिये तैयार हो गया— यहाँ भीड़ बहुत ज़्यादा थी— रफ़्तार कम हो गई और रेखा की तवज्जो भी सड़क पर थी— हमीद ने बा-आहिस्तगी दरवाज़ा खोला और उतर कर सामने वाली गली में हो लिया— कुछ दूर तक उसे इतनी तेज़ी से चलना पड़ा कि कलेजा हलक़ में आ गया—

वह वैसे भी अब रेखा से पीछा छुड़ाना चाहता था क्योंकि फ़रीदी से उस लड़की से रब्त-ओ-ज़ब्त (संपर्क) पैदा करने की इजाज़त मिल चुकी थी— फिर किसी नई लड़की के मुक़ाबले में रेखा का क्या काम—

उस ने टैक्सी की और मे-पुल होटल की तरफ़ रवाना हो गया—

अनवर और शाहिना वाला वाक़िआ उस के ज़हन से उतर चुका था और अब वह सिर्फ़ उसी लड़की के मुतल्लिक़ सोच रहा था—

टैक्सी की, मे-पुल होटल पहुँच कर उस ने टैक्सी का किराया अदा किया और अंदर चला आया—

डाइनिंग हॉल क़रीब-क़रीब सुनसान पड़ा हुआ था क्योंकि दूसरी तरफ़ रिक्रिएशन हॉल से ऑर्केस्ट्रा की आवाज़ें मुंतशिर (फैल) हो रही थीं—

उस ने रिक्रिएशन हॉल का टिकट ख़रीदा और फिर ज़िंदगी के उस तूफ़ान में जा डूबा जहाँ रंग-ओ-नूर की निक्हत (सुगंध) सब ही कुछ थी लेकिन उस भीड़ में उस लड़की को तलाश कर लेना आसान काम नहीं था—
लड़की मिलती या न मिलती मगर वहाँ क़ासिम को देख कर उस की बाँछें खिल गईं— वह बाईं जानिब वाली गैलरी की एक मेज़ पर तन्हा था और इस तरह मुँह खोले हुए रक़्स देख रहा था जैसे ज़िंदगी में पहली बार इत्तिफ़ाक़ हुआ हो— हमीद आहिस्ता-आहिस्ता चलता हुआ उस की पुश्त पर पहुँचा— क़ासिम इतना मुनहमक (मग्न) था कि उसे खबर न हुई ।

298
" अररररे कैचिम भाई "
"हाँ....!" क़ासिम ने सर हिला कर जवाब दिया। फिर चौंक कर मुड़ता हुआ बोला— "काउन.... आख़िर आप हैं— जाइये.... जाइये.... तशरीफ़.... तशरीफ़ ले जाइये—"
"क्यों प्यारे भाई— क्यों ख़फ़ा हो—" हमीद बैठता हुआ बोला—
"बस जाओ— चले जाओ.... वरना अच्छा नहीं होगा— तुम साला हमारी बीवी को ख़राब करता है—"
"क्या मतलब....?"
"तुम ने उस से कहा था कि क़ासिम तुम्हें दोस्तों में गालियाँ देता फिरता है—" "नहीं यह तो तुम्हारे वालिद साहब के मुतल्लिक़ कहा था—"
"क्या....!"
"यही कि तुम दोस्तों में अपने वालिद साहब को गालियाँ देते हो—"
"अरे तुम दग़ाबाज़ और झूठे हो—"
"मैं क्या जानूँ यह बात तुम्हारी बीवी ने मुझे बताई थी—"
"झक मारती है साली— तुम ने यक़ीन कैसे कर लिया—"

"अब नहीं करूँ गा—" हमीद ने कहा और क़ासिम इस तरह मुतमइन हो गया जैसे कोई बहुत बड़ा मसला तय हो गया हो— वह दांत निकाले रक़्स करती हुई लचीली लड़की को देखता रहा

—

"क़ासिम! तुम ने कभी रक़्स किया है?"
"बनता ही नहीं साला....!"
"कोशिश करो—"
"किस के साथ कोशिश करूँ— कौन नाचेगी मेरे साथ— मैं अपने डील डौल पर बहुत लानत भेजता हूँ—"
"मगर मैं तुम्हें सिखा सकता हूँ—"
"तो सिखा दो ना प्यारे! उम्र भर एहसान मानूँ गा—"
"लड़की तुम तलाश करो—"
"मैं कहाँ तलाश करूँ—" क़ासिम ने किसी यतीम बच्चे की तरह बे-बसी से कहा—
"इस भीड़ से किसी लड़की को मुंतख़ब कर दो मैं मामला तय करा दूँ गा—"
"अमां.... नहीं—!" क़ासिम भाड़ सामने फैला कर हँसने लगा—
"परवाह न करो— अगर मैंने देखा कि उसे ग़ुस्सा आ गया है तो तुम्हें डाँट कर भगा दूँगा—"

299
"क्या....!" क़ासिम ग़र्राया।
"अबे बात को समझने की कोशिश किया कर—" हमीद ने झिंझोड़ कर कहा— "जब मैं तुम्हें डाँटूँ तो तुम चुप चाप वहाँ से खिसक जाना— क्या समझे—"
"नहीं.... नहीं.... तुम कुछ घपला करना चाहते हो—"
"कोई घपला नहीं प्यारे— अगर वह न नाचेगी तुम्हारे साथ तो उस की बड़ी बहन नाचेगी — वह उधर देखो— वह लंबी तड़ंगी औरत जो सब्ज़ रंग के फूलों वाला स्कर्ट पहने हुए है—"
"किधर....?" क़ासिम की बाँछें खिल गईं—

"वह देखो—" हमीद ने एक तरफ़ इशारा किया— "वह जो एक मुर्ग-नुमा आदमी के साथ नाच रही है—"
"ओही.... ही ही ही—" क़ासिम अपना जिस्म सिकोड़ कर हँसा फिर होंठों पर ज़बान फेरने लगा—
"है ना.... तगड़ी—" हमीद ने पूछा—
"अल्ला क़सम.... बिल्कुल फिट—"
क़ासिम की नज़रें उस लंबी तड़ंगी औरत का तआक़ुब करती रहीं जो एक दुबले पतले आदमी के साथ नाच रही थी और हमीद दूसरी ही फ़िक्र में था। उस ने कहा—
"तुम इस से बराबर यही कहते रहना कि तुम उस के साथ रक़्स करना चाहते हो—"
"अच्छा तो फिर....?" क़ासिम बहुत ज़्यादा दिलचस्पी लेने लगा था—
"मैं तुम्हें वहाँ से डाँट कर भगा दूँगा—"
"नहीं— यह घपले वाली बात है—"
"जब तक मैं तुम्हें डाँटूँगा नहीं वह तगड़ी औरत तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जो भी न होगी

— "

"अबे हमीद भाई! क्यों उल्लू बनाता है मुझे—"
"अच्छा जाने दो— मैं खुद ही बारी बारी से दोनों के साथ नाच लूँगा—"
"तुम्हारी बात ही मेरी समझ में नहीं आती—"
"देखो.... क़ासिम भाई साहब यानी कि मतलब यह है कि दोनों बहनों में चली हुई है— अगर मैं तुम्हें उस के पास से डाँट कर भगा दूँ गा तो उस की बड़ी बहन यानी कि वह तगड़ी वाली औरत तुम्हें हाथों हाथ लेगी— क्या समझे—"
"अब समझ गया—" क़ासिम संजीदगी से सर हिला कर बोला— "यानी वह उस की जलन में मेरे साथ नाचने पर तैयार हो जाएगी—"

300
"बिल्कुल बिल्कुल— खैर समझे तो तुम.... मगर यार.... आज कल तुम कुछ उदास-उदास से नज़र आते हो। क्या बात है?"

"क्या पूछते हो हमीद भाई—" क़ासिम ने ठंडी आह भरने की बजाए एक गर्म सा झोंका फेंकते हुए कहा— "वह साली मुझे ज़िंदा न रहने दे गी—"
"मगर मेरा ख़याल है कि तुम्हारी कोई साली इतनी तगड़ी नहीं है—"
"तुम समझे नहीं— मैं उस पिच्चरनी की बात कर रहा हूँ जिसे लोग मेरी बीवी समझते हैं—"
"क्यों क्या कोई नई बात?"
"हाँ....!" क़ासिम गलू-गीर आवाज़ में बोला— "वह एक नौकर का बच्चा ले कर पाल रही है और मुझे उस का डैडी कहती है— तुम खुद सोचो हमीद भाई.... कितनी तकलीफ़.... तकलीफ़.... तकलीफ़ वह बात है—"
"तुम्हारा क्या बिगड़ता है.... कहने दो—"
"अरे वह मेरा मज़ाक उड़ाती है.... उल्लू की पट्ठी—"
"चचा की पट्ठी—" हमीद ने सुधार की—
"चचा खुद उल्लू का पट्ठा है— साला— आख़िर उस ने एक चूहिया हाथी के पल्ले क्यों बाँध दी थी—"
"क़ासिम तुम शायर होते जा रहे हो—"
"छोड़ो यार हमीद भाई— लानत है अपनी ज़िंदगी पर— अब उस साली ने अपनी एक ख़ाला को भी बुला कर घर में रख लिया है— दिन में कई बार दिल चाहता है कि उस ख़ाला को गोली.... गोली मार दूँ—"
"क्यों? क्या उम्र होगी ख़ाला की?"
"छोड़ो यार गोली मारो.... होगी कुछ....!"
"बूढ़ी है?"
"तुम ये क्यों पूछ रहे हो—" क़ासिम उसे घूरने लगा—
"कुछ नहीं.... यूँ ही.... ओह देखो— राउंड ख़त्म हो गया है अब उठो— आओ मेरे साथ—" वह दोनों झपटते हुए बार के काउंटर की तरफ़ चले क्योंकि वह लड़की उसी तरफ़ जा रही थी। हमीद का ख़याल था कि वह वहाँ से शराब ख़रीद कर फिर अपनी मेज़ पर आ जाएगी लेकिन उस की इस तवक़्क़ो पर ओस पड़ गई क्योंकि वह शायद चंद सेकंड के लिये काउंटर पर हाथ टेक कर बार-मेन की तरफ़ झुकी थी और फिर उस का रुख़ दरवाज़े की तरफ़ हो गया था— हमीद

बे-बसी से उसे जाते देखता रहा— उस की रफ़्तार इतनी तेज़ थी कि हमीद ने तआक़ुब (पीछा) का इरादा भी तर्क कर दिया— वैसे वह यूँ ही बे-ख़याली में डाइनिंग हॉल तक

301

ज़रूर चला आया— दूसरी तरफ़ क़ासिम था कि उस की सरगोशियाँ किसी तरह रुकने का नाम नहीं लेती थीं— "हट्टी.... वह मुड़ी.... वह रुकी.... या अल्ला.... चली गई—" फिर उस ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा— "अब क्या होगा हमीद भाई?"

"मेरा भेजा तपे गा—" हमीद झुंझला कर उस की तरफ़ मुड़ा— न जाने क्यों उसे क़ासिम पर ग़ुस्सा आ गया था—

"उस की बड़ी बहन.... बहन....!" क़ासिम की आवाज़ हलक़ में फंसने लगी—

"जहन्नुम में जाए—"

"अरे वाह—" क़ासिम हाथ नचा कर बोला— "वह साली चली गई तो मारो गोली.... उस की बहन बे-चारी ने क्या क़सूर किया है—"

हमीद जवाब दिये बग़ैर रिक्रिएशन हॉल की तरफ़ मुड़ गया— क़ासिम गोया दम के साथ लगा हुआ था— वह हमीद का हाथ पकड़ कर खींचता हुआ उस मेज़ पर लाया जहाँ से वह कुछ देर पहले उठे थे—

"बैठो.... प्यारे हमीद भाई.... अल्ला क़सम.... बाज़ औक़ात तुम से बड़ी मोहब्बत मालूम होती है—"

"हाँ.... हो सकता है—" हमीद सर हिला कर बोला— वह सोच रहा था कि उस ने लड़की का तआक़ुब (पीछा) क्यों नहीं किया— हो सकता है कि इस वक़्त उसे नज़र में रखना ज़रूरी रहा हो— वरना फ़रीदी उसे ख़ुसूसियत से यहाँ क्यों भेजता—

"अरे.... हमीद.... भाई....!" दफ़अतन क़ासिम भर्राई हुई आवाज़ में बोला— "वह देखो—"

"क्या है यार....!" हमीद झुंझला कर बोला और उसी तरफ़ देखने लगा जिधर क़ासिम देख रहा था और फिर उस की झुंझलाहट बिल्कुल ही काफ़ूर हो गई क्योंकि वही लड़की फिर रिक्रिएशन हॉल में दाख़िल हो रही थी लेकिन इस बार वह तन्हा नहीं थी— उस के साथ एक मर्द भी था—

"चलो उठो....!" क़ासिम उसे झिंझोड़ता हुआ बोला—

"बेकार है बेटा.... अब वह तन्हा नहीं है—"

"तो इस से क्या.... वह साला बोलेगा तो गर्दन तोड़ दूँ गा—"

"बस बैठे रहो—"

"अच्छा उस की बहन—"

हमीद कुछ न बोला— उस की खोपड़ी पर अब बुरी तरह बर्फ़ पड़ गई थी— उस ने जो कुछ सोचा था वह न हो सका—

तीसरे राउंड के लिये मौसीक़ी शुरू होने वाली थी और लड़की के साथ आने वाला आदमी

302

उसी की मेज़ पर था। हमीद ने पहले ही अंदाज़ा कर लिया था कि लड़की यहाँ तन्हा है क्योंकि फ़रीदी ने जिस आदमी के मुतल्लिक़ फ़ोन पर कहा था उस क़िस्म के किसी आदमी के साथ हमीद ने उसे नहीं देखा था। इसी लिये वह इतनी देर तक क़ासिम के साथ सर मारता रहा था। उस का ख़याल था कि अगर क़ासिम उस लड़की के साथ हो गया तो उसे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाएगा। फिर ऐसे मौक़े पर अगर हमीद उसे क़ासिम से "निजात" दिला सकता तो उस की तरफ़ लड़की का मुतवज्जो हो जाना लाज़मी था।

मगर अब वह क्या करता। अब तो वह तन्हा नहीं थी— उसे उस आदमी पर बड़ा ग़ुस्सा आ रहा था। वह लड़की की तरह कोई ग़ैर-मुल्की नहीं था— तीस पैंतीस साल का एक ख़ुश-रू और सेहत-मंद जवान था— खदो-खाल से सख़्त-गीरी (कठोरता) टपक रही थी— हमीद उसे घूरता रहा।

मौसीक़ी शुरू हो गई लेकिन वह दोनों बैठे ही रहे— क़ासिम बड़बड़ा रहा था—

"हाय उस की बड़ी बहन.... वह गई.... वह गई.... निकल गई—"

हमीद ने दूसरी तरफ़ देखा वह लंबी तड़ंगी औरत एक आदमी के साथ रक़्स करने के लिये उठी थी.... क़ासिम बुरी तरह हाथ मल रहा था।

"यार हमीद भाई— तुम दिल तोड़ देते हो—" क़ासिम गलू-गीर (रुँधी हुई) आवाज़ में बोला।

"तुम्हारी क़िस्मत ही ख़राब है, मैं क्या करूँ—"

"तुम कुछ न करो, अब मैं खुद ही कुछ करूँ गा—"

"क्या करोगे?"

"आग लगा दूँगा अपने घर में—"

"चलो! ख़ामोश बैठो— ख़ान बहादुर साहब का हश्र इस वक़्त शायद भूल गये हो—"

हमीद ने क़ासिम को ख़ामोशी से दांत पीसते देखा— रक़्स शुरू हो चुका था और कभी-कभी क़ासिम की मेज से दूसरी तरफ़ की गैलरी में बैठी हुई वह लड़की भी नज़र आ जाती थी— दफ़अतन (अचानक) हमीद को ऐसा लगा जैसे अब वह अपनी मेज़ पर तन्हा हो— वह कुर्सी से उठ गया— अब वह दूसरी तरफ़ की पूरी गैलरी साफ़ देख सकता था— और यह हक़ीक़त थी कि अब वह लड़की अपनी मेज़ पर तन्हा थी।

हमीद ने एक तवील (लंबी) सांस ली और दूसरी गैलरी की तरफ़ चल पड़ा— क़ासिम उसे पुकारता ही रह गया— दूसरी गैलरी में पहुँच कर वह लड़की के करीब ही खड़ा हो गया लेकिन दफ़अतन उसे महसूस हुआ कि वह कुछ ख़ौफ़ज़दा सी है— हमीद ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई लेकिन वह आदमी कहीं नज़र न आया जो कुछ देर पहले उस के साथ था।

303

लड़की ख़ौफ़ज़दा अंदाज़ में इधर-उधर देख रही थी— एक बार दोनों की नज़रें मिलीं और फिर वह दूसरी सिमतों में देखने लगे— अचानक हमीद आगे बढ़ कर आहिस्ता से बोला—

"क्या आप मेरी हम-रक़्स बनना पसंद करें गी—"

"जी....!" वह चौंक पड़ी और फिर एक फीकी सी मुस्कराहट के साथ बोली— "मुझे अफ़सोस है, मैं बहुत थक गई हूँ—"

"थकन तो ज़िंदगी के साथ है—" हमीद फ़लसफ़ियाना अंदाज़ में बोला— "ख़ैर मैं ख़ुदकुशी कर लूँ गा—"

फिर उस ने महसूस किया कि लड़की न सिर्फ़ उसे शुबे की नज़र से देख रही थी बल्कि उस के चेहरे पर फैली हुई ज़र्दी कुछ और गहरी हो गई है—

"आप कुछ ख़ौफ़ज़दा सी हैं—" हमीद उस के सामने बैठता हुआ बोला—

"ओह.... नहीं तो.... क्यों....?" लड़की अब मुतहय्यिर (हैरान) नज़र आने लगी—

"आप ख़ौफ़ज़दा हैं—"

"फिर.... आप ने इस बे-तकल्लुफ़ी की जुर्रत कैसे की— मैं कोई सोसाइटी गर्ल नहीं हूँ—"

"और मैं भी कोई लफंगा नहीं हूँ— एक शरीफ़ आदमी—" हमीद मुस्कुराया—

लड़की कुर्सी की पुश्त से टिक कर उसे घूरने लगी— हमीद उस की आँखों में देखता हुआ मुस्कुराता रहा— दफ़अतन (अचानक) लड़की आगे झुक कर मेज़ पर कोहनियाँ टिकती हुई आहिस्ता से बोली—

"क्या तुम मुझे ख़ौफ़ज़दा कर सकते हो— हरगिज़ नहीं— यहाँ मेरे हिमायती भी मौजूद हैं— तुम कोई हरकत कर के देखो—"

"तुम किसी ग़लत फ़हमी में मुब्तला हो—"

"क्या मैं ने तुम से कहा था कि यहाँ बैठ जाओ—" लड़की ने ग़ुस्सैल आवाज़ में कहा—

"नहीं....!"

"फिर....?"

"फिर मैं क्या बताऊँ! आज मेरे और तुम्हारे सितारे कुछ इसी क़िस्म के हैं—"

लड़की कुछ कहने का इरादा रखती थी लेकिन हमीद ने उसे यक-ब-यक चौंकते देखा— वह हॉल के सदर दरवाज़े की तरफ़ देख रही थी—

हमीद भी मुड़ा लेकिन दूसरे ही लम्हे में उस के होंठ खुले और एक हल्की सी "सिसकी" दाँतों से बाहर आ गई— उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उस के बाज़ू में सुई चुभ गई हो— उस का बायाँ हाथ बे-इख़्तियार अंदाज़ में बाज़ू पर पड़ा और वह पलट कर लड़की की तरफ़ देखने लगा— लड़की ने कुछ इस

304

अंदाज़ में अपनी कुर्सी पीछे खिसकाई जैसे यह हरकत उसी ने की हो। हमीद को अपने सारे जिस्म में गर्म-गर्म लहरें सी महसूस हो रही थीं और जिस जगह सुई की चुभन सी महसूस हुई थी वहाँ अब इतनी तक़लीफ थी जैसे वह कोई मवाद भरा फोड़ा हो। लड़की उठ गई मगर हमीद ज़बान भी न हिला सका। वह उसे जाते देखता रहा लेकिन उस का जिस्म बे-हिस-ओ-हरकत था। ऑर्केस्ट्रा की मौसीक़ी उसे ऐसी लग रही थी जैसे वह किसी मछली मार्केट का बे-मानी शोर हो। उस ने उठने की कोशिश की लेकिन शायद पैरों में दम ही नहीं था।

□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□— □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□-□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□

□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□— "□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□— □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□— □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□—"

"□□□□□ □□□□□— □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□—" □□□□□□ □□□□□□ □□□□□

"□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□—" □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□— "□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□—"

□□□□□□ □□□□□

□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □ □□□□□

"□□□□ □□□□□ □□ □□□□□—"

"□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□—"

"□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□?"

"□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□—"

"□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□?" □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□□□ □□ □□□□□— □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □ □□ □□□□ □ □□□□□ □□□□—"

"□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□?"

305
"मेरे पास बर्बाद करने के लिये वक़्त नहीं है—"
"यह बहुत अच्छा है— वरना तुम इस वक़्त चाय में शकर की बजाए संखिया (ज़हर) इस्तेमाल करते—"
"क्यों....?"
"कल तुम ने आर लकनौ में किस लड़की को शराब पिलाई थी—"
"ओह.... तो क्या उस के मुतल्लिक़ कुछ है?"
"हाँ.... आं.... तो यह हक़ीक़त है?"
"क्या लिखा है उस ने?"
रशीदा अखबार उठा कर पढ़ने लगी—
"क्राइम रिपोर्टर के ज़राएम— एक मुक़ामी अखबार का क्राइम रिपोर्टर पिछली रात एक बड़े होटल में -शराब पी कर नंगा नाचता रहा— यह रिपोर्टर शहर में ख़ासी शोहरत रखता है और आला पुलिस अफ़सरों से उस के मरासिम (संबंध) हैं— ग़ालिबन यही वजह है कि अख़लाक़ी और समाजी पाबंदियों का क़ायल नहीं है— अगर यह हरकत किसी और से सरज़द होती तो वह इस वक़्त जेल में होता लेकिन ज़ाहिर है कि वह उन लोगों से मरासिम रखता है जो क़ानून के मुहाफ़िज़ कहलाते हैं पिछली रात आर लकनौ जो हंगामा हुआ अगर दुनिया के किसी दूसरे मोहज़्ज़ब मुल्क में हुआ होता तो—"
"बस बंद करो—" अनवर हाथ उठा कर बोला—
"तो यह हक़ीक़त है—" रशीदा ने कहा और जवाब का इंतज़ार किये बगैर बोली— "और वह सरमाया-दार लड़की कौन थी?"
"शाहिना.... उस के मुतल्लिक़ क्या है?"
"वह भी बरहना (नंगी) होकर उस क्राइम रिपोर्टर के साथ नाचती रही—"
"और ऑब्ज़र्वर का एडिटर अपने दफ़्तर में सारंगी बजाता रहा— खैर उस की भी शामत आ गई है—"
"क़िस्सा क्या था?"
"शाहिना पर किसी क़िस्म का दौरा पड़ा था और उस ने अपने कपड़े फाड़ डाले थे—"

"और तुम....?"

"और अब मुझ पर इस वक़्त दौरा पड़ने वाला है—"

"पर्वाह मत करो—" रशीदा गर्दन झटक कर बोली— "इस वक़्त भी मेरे पैरों में बाटा के चप्पल हैं— तुम आख़िर शाहिना को वहाँ ले क्यों गये थे?"

306

"क्योंकि उसी की बदौलत मेरे क़र्ज़-ख्वाहों ने फिर मुझ से मोहब्बत शुरू कर दी है

— "

"ओह.... तो क्या.... वह तुम से कोई काम ले रही है—"

अनवर कुछ न बोला— रशीदा चंद लम्हे उसे घूरती रही फिर बोली—

"तुम यह बात मुझ से क्यों छुपा रहे हो?"

"तुम पर ज़ाहिर ही कौन सी बात है—"

"मैं पूछना भी नहीं चाहती—" रशीदा चिढ़ कर बोली—

"शुक्रिया—"

अनवर चाय पी रहा था— अखबार उस के सामने था— दफ़अतन उस की नज़र एक दिलचस्प ख़बर पर पड़ी— ख़ुद उस का अखबार इस ख़बर से महरूम ही रह गया था— अगर पिछली रात वह ख़ुद भी एक मामले में न उलझ गया होता तो यह ख़बर नामुकम्मल सूरत में न शाया हुई होती—

ख़बर थी— "महकमा-ए-सुराग़रसानी के एक ऑफ़िसर कैप्टन हमीद का हैरत-अंगेज़ तजरबा— गुज़िश्ता शब ऑफ़िसर मज़कूर को एक हैरत-अंगेज़ वाक़िये से दो-चार होना पड़ा— वह मे- पॉल रक़्स-गाह (Dance Hall) में एक ग़ैर-मुल्की ख़ातून से गुफ़्तगू कर रहे थे— दफ़अतन उन्होंने अपने दाहने बाज़ू में चुभन सी महसूस की और उन का जिस्म बे-हिस-ओ-हरकत (गतिहीन) हो गया— उन का बयान है कि चुभन महसूस होने से क़ब्ल वह उस ख़ातून की तरफ़ मुतवज्जो नहीं थे— वह यक़ीन के साथ नहीं कह सकते कि इस वाक़िये में उस ख़ातून का हाथ था या वह भी इस से ला-इल्म थीं— ज़रा ही देर में ऑफ़िसर मज़कूर की हालत ग़ैर हो गई— वह उन ख़ातून से अपनी कैफ़ियत भी बयान न कर सके और वह उठ कर चली गईं— उन की मुलाक़ात इस वाक़िये से चंद मिनट पहले हुई थी— ऑफ़िसर मज़कूर उन के नाम से भी वाक़िफ़

नहीं हैं— उन का बयान है कि जिस जगह चुभन महसूस हुई थी वह ज़रा ही सी देर में किसी फोड़े की तरह दुखने लगी— वह इस तरह बे-हिस-ओ-हरकत हो गये थे कि उन के एक दोस्त उन्हें गोद में उठा कर रक़्स-गाह से बाहर ले गये और फिर जब वह उन की कार पर घर जा रहे थे तेज़ और ठंडी हवा के झोंके उन्हें हैरत-अंगेज़ तौर पर पहले की ही सी हालत में ले आए— उन का जिस्म पहले ही की तरह चाक-ओ-चौबंद हो गया और बाज़ू की तक़लीफ भी उतनी ही रह गई जितनी किसी सुई के चुभ जाने की बिना पर हो सकती है— बाद की इत्तला है कि उन के लम्बी मुआइने से बस इतना ही मालूम हो सका कि बाज़ू में कोई नुकीली चीज़ चुभी थी— लेकिन उस के ख़राब अ़सरात उन के ख़ून में नहीं मिल सके— डॉक्टरों की राय है कि वह चुभने वाली चीज़ एक मामूली सुई के इलावा और कुछ नहीं हो सकती—"

307

"वाह भई! क्या बात हुई—" अनवर बुदबुदाया।

"क्या....?" रशीदा चौंक पड़ी।

अनवर ने अखबार उस की तरफ़ बढ़ा दिया— जब रशीदा पढ़ चुकी तो उस ने कहा— "आख़िर इस ख़बर की इशाअत की क्या ज़रूरत थी—"

"है दिलचस्प....!"

"मगर वह तो आर लकनौ था और यह ख़बर मे - पॉल से ताल्लुक़ रखती है—"

इतने में फ़ोन की घंटी बजी और अनवर ने हाथ बढ़ा कर रिसीवर उठा लिया।

"अनवर....!" दूसरी तरफ़ से निस्वानी (जनाना) आवाज़ आई।

"कौन....?" "ओह.... कपड़े पहन रखे हैं तुम ने?"

"अनवर खुदा के लिये मेरा मज़हका (मज़ाक) न उड़ाओ— अब शायद ही तुम कभी मुझे घर से बाहर देख सको—"

"अनवर मैं इल्तिजा करती हूँ कि मेरी बात सुन लो— इस क़िस्म का दौरा मुझ पर कभी नहीं पड़ा— मैं किसी दिमाग़ी मर्ज़ में मुब्तला नहीं हूँ—"

"आर लकनौ के मैनेजर का ख़याल है कि तुम भंग पी कर आई थीं—"

"बकवास है— सिगरेट के इलावा और मैं हर क़िस्म के नशे से दूर रहती हूँ—"
"खैर.... तो अब क्या कहना चाहती हो?"
"मम्मी यक़ीनन किसी मुसीबत में मुब्तला हैं— वह कुछ खुल रही हैं लेकिन इसी हद तक कि मुझे तुम से न मिलने दें— उन का ख़याल है कि यह उसी ख़तरनाक आदमी की हरकत थी जो आज कल उन की परेशानी का बाइस (कारण) बना हुआ है— उस ने शायद उन्हें इस से आगाह भी कर दिया है— उस ने कहा है कि अगर अब इस लड़के के किसी फ़र्द ने पुलिस या किसी प्राइवेट सुराग-रसां से साज़-बाज़ करने की कोशिश की तो उसे इसी तरह ज़लील किया जाएगा—"
"ओह.... लेकिन तुम्हारी मम्मी कुछ बताने पर तैयार नहीं?"
"नहीं क़तई नहीं.... वह कहती हैं कि अगर तुम मेरी ज़िंदगी चाहती हो तो अपनी ज़बान हर मामले में बंद रखो—"
"यह बहुत बुरी बात है— फिर अब तुम क्या चाहती हो?"
"मैं अब भी वही चाहती हूँ जिस के लिये तुम से मिली थी—"

308
"अपनी मम्मी की तंबीह (चेतावनी) के बावजूद भी?"
"तुम वह तरीक़ा क्यों नहीं इख़्तियार करते कि किसी को उस का इल्म न हो सके—" "हो सकता है— मगर उस तरीक़े के अख़राजात (खर्च) ज़रा लंबे हो जाएँ गे—" अनवर ने रशीदा को आँख मार कर कहा और रशीदा होंठ सिकोड़ कर रह गई।
"अख़राजात की परवाह न करो—" दूसरी तरफ़ से आवाज़ आई— "और आज तुम मेरी सालगिरह की तक़रीब में शिरकत कर रहे हो?"
"आहा.... ओह.... अच्छा.... मगर तुम मुझे पहचानोगी कैसे?"
"बस जिसे न पहचानती हूँगी वही तुम होगे—"
"सब तुम्हारे जाने पहचाने आदमी होंगे?"
"हाँ....!"
"और तुम्हारे सभी दोस्तों से तुम्हारी मम्मी वाक़िफ़ होंगी?"

"नहीं बहुतों को नहीं जानतीं—"
"बस ठीक है— मैं आऊँ गा—"
"मैं दरअसल तुम्हें इस लिये बुला रही हूँ कि तुम उन दोनों गधों को देख लो—" "डंकी टिल्लू के मुतल्लिक़ कह रही हो?"
"हाँ.... वही दोनों— हो सकता है मम्मी की परेशानियों की वजह वही हों—"
"मैं आऊँ गा— अच्छा.... बस....!"
"नहीं और कुछ नहीं—"
अनवर ने रिसीवर रख दिया और रशीदा को आँख मार कर मुस्कुराने लगा।
"सुना तुम ने?" उस ने इस अंदाज़ में कहा जैसे रशीदा बरहम (नाराज़) हो— "मैं इस केस के इख़्तेताम (अंत) पर एक अच्छी सी कार ख़रीद रहा हूँ—"
"वह तो तुम कई केसों के इख़्तेताम पर ख़रीद चुके हो—"
"नहीं इस बार ज़रूर ख़रीद लूँ गा—"
"देखूँ गी—"
अनवर नाश्ता ख़त्म कर के उठ गया— रशीदा वहीं बैठी रही— लेकिन वह अनवर से कुछ बरगश्ता (नाराज़/खिन्न) सी मालूम हो रही थी—
उसी शाम को अनवर मेकअप में इरशाद मंज़िल जा पहुँचा— इस मेकअप में वह यूरीशियन...

309
मालूम होता था
इरशाद मंज़िल का बड़ा हॉल काफ़ी नफ़ासत के साथ सजाया गया था और शायद इस वक़्त तक आधे से ज़्यादा मेहमान वहाँ पहुँच चुके थे।
अनवर ने शाहिना की जुस्तजू में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई लेकिन वह कहीं नज़र न आई— अनवर ने सोचा कि वह पहचान न लिया जाए क्योंकि उस की मौजूदा हैसियत में वहाँ उस

का एक भी शनासा (जानने वाला) नहीं था— वह शाहिना की तलाश में इधर उधर भटकता रहा — वैसे इस भीड़ में किसी के पड़ी थी कि उस की तरफ़ तवज्जो देता— यह मजमा किसी पब्लिक जलसे की सी नौइयत का हामिल था।

लेकिन आख़िरकार अनवर ने अंदाज़े से उन बाप बेटे को पहचान लिया— जिन्हें खाने के लिये शाहिना ने मदऊ (आमंत्रित) किया था— वह दोनों एक मेज़ के क़रीब खड़े किसी मसले पर बहस कर रहे थे— अनवर उन की पुश्त पर खड़ा हो कर दीवार से लगी हुई एक पेंटिंग देखने लगा— मुअम्मर आदमी ख़ासा तंदुरुस्त था और उस की दाढ़ी सुर्खी माइल थी— अगर नौजवान के चेहरे पर भी वैसी ही दाढ़ी होती तो दोनों को पहचानना मुश्किल हो जाता— बेटा अपने बाप की हू-ब-हू नक़ल था— फ़र्क बस इतना ही था कि उस के चेहरे पर दाढ़ी नहीं थी।

"जब अक़्ल नहीं रखते तो बकवास क्यों करते हो—" बूढ़ा नौजवान से कह रहा था।

"डैडी मैं तुम से ज़्यादा अक़्ल रखता हूँ— जब दिल चाहे कर लो अक़्ल का मुक़ाबला—" नौजवान बुरा सा मुँह बना कर बोला।

"तुम गधे हो—"

"मेरी रगों में तुम्हारा ही ख़ून दौड़ रहा है डैडी—"

"तो इस से क्या होता है तुम इस के बावजूद भी गधे हो सकते हो—"

बात आगे न बढ़ सकी क्योंकि ठीक उसी वक़्त शाहिना उधर आन निकली— वह आज ख़िलाफ़-ए-मामूल साड़ी और फ़राक में थी।

नौजवान डंकी टिल्लू ने अपने हलक़ से अजीब सी आवाज़ निकाली और उसे रोक कर बोला— "मुझे माफ़ करना मिस इरशाद तुम इस लिबास में बहुत अच्छी लगती हो.... क्यों डैडी?"

"ओह.... यक़ीनन....!" बूढ़ा डंकी टिल्लू सर हिला कर शफ़क़त-आमेज़ मुस्कराहट के साथ बोला।

"शुक्रिया—" शाहिना बड़े दिल-आवेज़ अंदाज़ में मुस्कुराई और अनवर पर एक उचटती सी नज़र डालती हुई आगे बढ़ गई।

310

"डैडी—" नौजवान डंकी टिल्लू बोला— "यह लड़की मुझे ख़्वाब दिखाती है—"

"हाँ.... आं.... हो सकता है—" बूढ़े ने ठंडी सांस ली।
"तुम ने ठंडी सांस क्यों ली डैडी?" नौजवान बोला।
"हंटर.... मैं तुम्हें बहुत पीटूँगा गधे—"
"नहीं बताओ— क्या वह तुम्हें भी अच्छी लगती है?"
"हंटर.... प्लीज़.... होल्ड योर टंग वरना मुझे यहाँ इस तक़रीब के मौक़े पर भी ग़ुस्सा आ सकता है—"
"तुम्हें बहुत दिनों से ग़ुस्सा नहीं आया डैडी— मैं देखना चाहता हूँ—"
"बकवास बंद करो—" बूढ़े ने कहा और वहाँ से चला गया— हंटर डंकी टिल्लू इस अंदाज़ में उस के पीछे चल रहा था जैसे सर पर चपत रसीद करने का इरादा रखता हो।
अनवर भी वहाँ से हट गया— वह शाहिना से मिलना चाहता था आख़िर वह उसे एक जगह मिल ही गई।
"मुबारक हो मिस इरशाद—" उस ने कहा।
"शुक्रिया.... शुक्रिया—" शाहिना गर्म-जोशी से मुसाफ़ा (हाथ मिलाना) करती हुई बोली— वह टहलते हुए एक तरफ़ चले गये— शाहिना ने कहा।
"यह बिल्कुल ठीक है— अगर तुम अजनबी न होते तो मैं तुम्हें न पहचान सकती— वाक़ई कमाल करने में तुम भी.... उन दोनों के क़रीब खड़े थे—"
"हाँ.... मैं ने उन्हें देखा था और वह दोनों काफ़ी देर तक तुम्हारी हुस्न की तारीफ़ करते रहे थे—"
"मैं नहीं समझ सकती कि वह किस क़िस्म के बाप बेटे हैं—"
"मैं भी नहीं समझ सका—"
"अच्छा बस अब मैं चली—"
"मैं ज़रा इधर भी जाऊँ गा जहाँ उस रात तुम ने अपनी मम्मी को किसी से गुफ़्तगू करते सुना था—"
"जहाँ दिल चाहे जाओ मगर तुम्हारा अभी नाम क्या है?"
"जोज़फ़ पीटर....!"
"डिनर टेबल पर तुम्हारा कार्ड लगवाए देती हूँ—"

"हाँ.... आं.... मगर यह ज़रूरी नहीं है कि मैं डिनर तक यहाँ ठहरूँ—"

"ओह ऐसी ग़लती मत करना— यक़ीनन वह नामालूम आदमी बहुत चालाक है— वरना उसे हमारे मुतल्लिक़ (संबंधित)..."

311

कैसे मालूम होता "

"खैर जैसा मुनासिब समझूँ गा वैसा करूँ गा—" अनवर ने कहा।

वह चली गई और अनवर इधर उधर टहलता रहा— हॉल में शराब की ट्रालियाँ चल रही थीं— एक उस के पास भी रुकी लेकिन अनवर ने सिर्फ़ लेमन पर क़नाअत की— अगर वह शराब पीता भी होता तो कम से कम इस दफ़अ पर हरगिज़ न पीता।

इस दौरान में एक बार बेगम इरशाद से भी मुठभेड़ हुई और उस ने बड़े बे-तकल्लुफ़ाना अंदाज़ में मुबारकबाद पेश की लेकिन बेगम इरशाद ने शुक्रिया अदा करते वक़्त यह ज़ाहिर न होने दिया कि वह उसे पहचानती नहीं है।

अनवर ने सोचा कि अब इस तरह दूसरों से कटे कटे फिरना मुनासिब नहीं है लिहाज़ा वह जवानों के एक झुंड में जा मिला— इन लोगों ने नौजवान डंकी टिल्लू को घेर रखा था और उसे उर्फ़-ए-आम में बुरी तरह "घस" रहे थे— उन्होंने शायद उस के नाम पर बहस छेड़ रखी थी और हंटर डंकी टिल्लू कह रहा था—

"आप लोग ग़लत समझते हैं— हमारे नाम के हिज्जे वह नहीं हैं जो गधे की दुम के होते हैं, डी यू एन के.... डंकी.... टी ए, एल ई.... टिल्लू.... (DANKITALE)!"

"लेकिन अगर हम इसे अपनी ज़बान में लिखें गे तो गधे की दुम ही पढ़ेंगे—" किसी ने कहा।

"मजबूरी है—" हंटर डंकी टिल्लू मायूसाना अंदाज़ में सर हिला कर बोला।

"आप के दूसरे भाइयों के क्या नाम हैं?"

"डैडी ने एक ही शादी की थी—" हंटर ने आहिस्ता से कहा— "इस लिये और कोई दूसरा भाई नहीं है—"

इस पर क़हक़हा पड़ा और हंटर अहमाक़ाना अंदाज़ में एक एक की सूरत देखने लगा।

"तुम अपनी पैदाइश के वक़्त कितने बड़े थे?" किसी ने सवाल किया।

"ठहरिये.... डैडी से पूछ आऊँ—" हंटर ने कहा और भीड़ हटाता हुआ निकल गया।

लोग हँसते रहे लेकिन अनवर की नज़रें उस का तआक़ुब (पीछा) कर रही थीं— वह अपने डैडी के पास जाने के बजाए एक दरवाज़े में मुड़ गया— उस का डैडी राजर डंकी टिल्लू शहर के बड़े सरमाया-दार से गुफ़्तगू कर रहा था— अनवर भी टहलता हुआ उसी दरवाज़े की तरफ़ चला।

लेकिन अभी दरवाज़े तक पहुँचा भी नहीं था कि खाने के लिये गांग बजा— यह हक़ीक़त थी कि अनवर खाने के लिये वहाँ नहीं रुकना चाहता था— उस ने तेज़ी से क़दम बढ़ाए और उसी दरवाज़े...

312

से गुज़र गया जिस से हंटर डंकी टिल्लू गुज़रा था। उस ने खुद को राहदारी में पाया और इस तवक़्क़ो पर आगे बढ़ता चला गया कि मुमकिन है आगे जा कर उसे इमारत से बाहर निकलने के लिये रास्ता मिल जाए।

इस राहदारी में दोनों तरफ़ दरवाज़ों और खिड़कियों के सिलसिले फैले हुए थे। अचानक एक दरवाज़े से एक आदमी कुछ इतनी तेज़ी से निकला कि अनवर से टकरा गया और उस के हाथों में दबा हुआ डिब्बा फ़र्श पर गिर पड़ा। जिसे उठाने के लिये वह बड़ी फुर्ती से झुका। यह हंटर डंकी टिल्लू था और डिब्बा उठा लेने के बाद कुछ इस अंदाज़ में हँसने लगा था जैसे चोरी करता हुआ पकड़ा गया हो।

"यह.... यह....!" वह बौखलाए हुए अंदाज़ में बोला— "मिस इरशाद के लिये तोहफा है—"

"तो फिर मैं क्या करूँ—" अनवर उसे घूरने लगा।

"ओहो.... देखिये मैं इस मुल्क में नौ-वारिद हूँ— मैं नहीं जानता कि यहाँ की लड़कियां क्या पसंद करती हैं— इस लिये आप ज़रा इसे देख लीजिये.... जी हाँ.... मैं आप का यह अहसान हमेशा याद रखूँगा— वादा करता हूँ—"

फिर जैसे ही उस ने डिब्बे का ढक्कन खोला अनवर उछल कर पीछे हट गया क्योंकि डिब्बे में एक सियाह रंग का सांप फन काढ़े खड़ा बार-बार अपनी सुर्ख़ ज़बान बाहर निकाल रहा था। अनवर के होंठ भिंच गये और भौंहें तन गईं— ऐसा मालूम हुआ जैसे वह दूसरे ही लम्हे में डंकी टिल्लू पर हमला कर बैठेगा।

जुर्म या मुजरिम

डंकी टिल्लू खड़ा हँस रहा था।
"मैं बताऊँ तुम्हें—" अनवर दाँत पीस कर बोला—
"मैं शुक्रिया अदा करूँगा— पता नहीं वह इस तोहफे को क़बूल करे या न करे—" अनवर ने हाथ बढ़ा कर उस का गिरेबान पकड़ लिया।
"अरे.... अरे.... यह क्या....?" डंकी टिल्लू बौखला कर पीछे हटा।
"मैं भी मज़ाक करता हूँ—" अनवर ने गिरेबान पर गिरफ़्त मज़बूत करते हुए कहा— "और मेरा मज़ाक इसी क़िस्म का होता है—"
"यह नकली सांप है दोस्त....!" डंकी टिल्लू ने क़हक़हा लगाया।

313
"क्या....?" अनवर की गिरफ़्त ढीली पड़ गई।
"हाँ....!" डंकी टिल्लू सांप का सर छूता हुआ मुस्कुराया— "रबड़ का सांप और पारे का बैलेंस— यह ज़बान की हरकत पारे के बैलेंस का नतीजा है—"
"वाह....!" अनवर ने मुस्कुरा कर गिरेबान छोड़ दिया और डिब्बा अपने हाथों में ले कर सांप का जायज़ा लेने लगा— वह कारीगरी का एक बेहतरीन नमूना था।
"आओ.... आओ—" हंटर डंकी टिल्लू अनवर का हाथ पकड़ कर खींचता हुआ बोला— "ख़ासी तफ़रीह रहे गी—"
अनवर निहायत इत्मीनान से उस के साथ चलता रहा.... लोग डाइनिंग हॉल की तरफ़ जा रहे थे।
"हैं.... यह लोग कहाँ जा रहे हैं—" डंकी टिल्लू ने हैरत ज़ाहिर की।
"खाने के लिये गांग बजा है—"
"ओहो.... मगर अभी केक तो नहीं काटा गया—"

"ओह.... यह रस्म इस घर में नहीं होती—" अनवर बोला— "तब फिर मैं यह तोहफा किस वक़्त दूँ गा?"

"खाने के बाद....!"

"अजीब बे-तुकी बात है—"

"यह बास्टर्ड सालगिरह है— दो-ग़ली.... यूरीशियन....!" अनवर होंठ सिकोड़ कर बोला।

"हाहा....!" डंकी टिल्लू ने क़हक़हा लगाया— "तुम भी यूरीशियन हो— क्या तुम बास्टर्ड कहो गे खुद को?"

"यक़ीनन अगर मैं यूरीशियन हूँ तो ज़रूर बास्टर्ड कहूँ गा खुद को—"

वह दोनों भी डाइनिंग हॉल में आ गये और अनवर को अपनी नशिस्त (सीट) तलाश करने में थोड़ी दुश्वारी हुई क्योंकि हॉल में तक़रीबन डेढ़ सौ मेहमान थे।

दो तीन आदमी नशिस्तों के चार्ट लिये फिर रहे थे— एक ने अनवर की भी मदद की— डंकी टिल्लू भी उसी मेज़ पर थे— खाने की ट्रालियाँ गर्दिश में आ गईं।

अनवर दोनों डंकी टिल्लुओं को घूर रहा था— लेकिन शायद हंटर डंकी टिल्लू उसे भूल ही गया था क्योंकि उस ने एक बार भी उसे नज़र उठा कर नहीं देखा।

मध्यम सुरों में ऑर्केस्ट्रा बज रहा था और हाथ उठ-उठ कर मुँह की तरफ़ जा रहे थे।

अचानक पूरा हॉल तारीख (अंधेरा) हो गया और बैक-वक़्त बहुत सी तहय्युर आमेज़ (हैरान कर देने वाली) आवाज़ें सुनी गईं फिर किसी औरत की चीखें सुनाई देने लगीं और अनवर उछल कर खड़ा हो गया फिर ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई मेज़ उलट...

314

गई हो— बर्तनों के टूटने की आवाज़ें अंधेरे में चकराईं— ऑर्केस्ट्रा तो उसी वक़्त बंद हो गया था जब रोशनी ग़ायब हुई थी।

शोर बढ़ गया— फिर रोशनी भी नहीं थी— लोग हैरान और सहमे खड़े थे और शाहिना एक जगह उछल उछल कर अपने बाल नोच रही थी— कपड़े फाड़ रही थी।

चंद लम्हे सब के सब बे-हिस-ओ-हरकत (बिना हिले-डुले) खड़े रहे— फिर यक-ब-यक सारा हॉल गूँज उठा जिस के मुँह में जो भी आया कह रहा था।

अनवर ने बेगम इरशाद को देखा जो बिलबिलाती हुई शाहिना की तरफ़ दौड़ रही थी— "मेरी बच्ची.... मेरी बच्ची—"

लेकिन शाहिना के हाथ उसी रफ़्तार से कपड़ों पर चलते रहे और ज़रा ही सी देर में उस के जिस्म पर धज्जियां झूल रही थीं— तीन चार औरतें उसे पकड़ कर ब-दिक़्क़त (मुश्किल से) तमाम दूसरे कमरे में ले गईं।

मेहमान ज़हनी कशमकश में मुब्तला हो गये थे— उन्हें क्या करना चाहिये? चूँकि यह सब कुछ ग़ैर-मुतवक़्क़ो (Unexpected) तौर पर हुआ था इस लिये शायद उनकी सोचने समझने की सलाहियत ही जवाब दे गई थी।

और अनवर सोच रहा था कि वह पहचान लिया गया है वरना शाहिना इस हाल को क्यों पहुँचती— लेकिन अब यह भी दुश्वार था कि अनवर बाहर निकल जाता— वैसे यह और बात है कि इस वाक़िये से उसकी ज़िद्दी तबियत जाग उठी हो।

दफ़अतन उसे दोनों डंकी टिल्लुओं का ख़याल आया और उसकी नज़रें बे-चैनी से हॉल में चकराने लगीं— आख़िर एक जगह उसे हंटर डंकी टिल्लू दिखाई दिया— लेकिन बूढ़ा डंकी टिल्लू कहीं नज़र न आया।

"ख़वातीन-ओ-हज़रात—" बेगम इरशाद हिचकियों और सिसकियों के दरम्यान कह रही थी— "मुझे अफ़सोस है कि शाहिना पर आज फिर दौरा पड़ गया— इस से पहले भी एक बार पड़ चुका है— ऐसे हालात में मैं हमदर्दी की मुस्तहिक़ हूँ— मुझे इंतहाई शर्मिंदगी है—"

और फिर वह इस से आगे कुछ न कह सकी क्योंकि फूट-फूट कर रोने लगी थी।

"कोई बात नहीं— कोई बात नहीं—" चारों तरफ़ से आवाज़ें आईं— "हमें अफ़सोस है—"

दो चार लोग आगे बढ़े और बेगम इरशाद भी डाइनिंग हॉल से ले जाई जाने लगी— कुछ लोग बाहर जा रहे थे— अनवर ने सोचा कि अब उसका यहाँ ठहरना मुनासिब नहीं है लिहाज़ा वह भी दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा फिर शायद हंटर डंकी टिल्लू ने उसे पहचान लिया और आगे बढ़ कर बोला— "यह क्या हो गया? अब मेरे तोहफे का क्या होगा?"

315

"आइंदा सालगिरह के मुंतज़िर रहो—" अनवर लापरवाही से कहता हुआ डाइनिंग हॉल से निकल आया लेकिन वह अभी टिल्लू के मुतल्लिक़ बहुत कुछ सोच रहा था।

राहदारी इतनी कुशादा नहीं थी कि डेढ़ सौ आदमी बैक-वक़्त उस में से गुज़र सकते— इस लिये वहाँ भीड़ मालूम होने लगी और जब अनवर अपने लिये रास्ता बना रहा था— उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उस की बाईं रान में सुई चुभो दी गई हो।

अनवर बौखला कर पीछे हटा और एक आदमी से टकरा गया।

"ज़रा देख कर जनाब—" उस ने कहा और अनवर ने माज़रत (माफ़ी) कर के आगे बढ़ना चाहा मगर उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उस का जिस्म हैरत-अंगेज़ तौर पर हल्का हो गया हो और अगर उस ने एक पैर भी ज़मीन से उठाया तो फ़ज़ा में मुअल्लक (हवा में लटक) हो जाएगा— सारे जिस्म में गरम गरम सी लहरें दौड़ रही थीं— दूसरे ही लम्हे में उसे वह ख़बर याद आ गई जो उस ने कैप्टन हमीद के मुतल्लिक़ आज ही एक मुक़ामी रोज़नामे में पढ़ी थी— वह किसी न किसी तरह दीवार से जा लगा और दूसरे लोग उसे घूरते हुए गुज़रते रहे— उस ने दोनों दुबकी टिल्लुओं को भी देखा जो ख़रामाँ-ख़रामाँ (धीरे-धीरे) चले जा रहे थे लेकिन उस में इतनी सकत (हिम्मत) नहीं रह गई थी कि अपनी जगह से जुम्बिश (हलचल) भी कर सकता।

कुछ देर बाद राहदारी सुनसान हो गई— अब अनवर की रान में तक़लीफ़ भी बढ़ने लगी जहाँ कुछ देर पहले सिर्फ़ एक मामूली सी सुई की चुभन महसूस हुई थी वहाँ अब ऐसा मालूम हो रहा था जैसे आरी चल रही हो— खड़े रहना मुश्किल हो गया— वह महसूस कर रहा था कि वह दाहनी जानिब गिर रहा है— लेकिन खुद को गिरने से रोक न सका।

और फिर वह एक बे-बस चौपाए की तरह ज़मीन पर पड़ा गहरी गहरी साँसें ले रहा था— रान की तक़लीफ़ इतनी बढ़ गई थी कि वह मुश्किल तमाम अपनी कराहें रोक सका— यह सब कुछ था लेकिन सोचने समझने की सलाहियत नहीं ज़ाइल (ख़त्म) हुई थी— वह सोच रहा था कि अगर इस वक़्त कोई इधर आन निकला तो उसे एक बार फिर बेगम इरशाद की बकवास सुननी पड़ेगी— फिर उस ने सोचा मुमकिन है अब बेगम इरशाद इधर आ ही रही हो— शाहिना की हालत इसी लिये बिगड़ी थी कि वह उस वक़्त वहाँ मौजूद था— लिहाज़ा हो सकता है कि उसे बे-दस्त-ओ-पा (असहाय) कर देने का मक़सद भी यही हो कि बेगम इरशाद इस बार अच्छी तरह उस की ख़बर ले और वह फिर कभी इधर रुख़ करने की भी जुर्रत न कर सके।

अनवर ने ग़लत नहीं सोचा था— थोड़ी ही देर बाद बेगम इरशाद उस के सर पर मौजूद थी— उस के साथ चार मुलाज़िम भी थे।

"मिस्टर.... जोज़फ़.... पीटर....!" वह रुक-रुक कर दाँत पीसती हुई बोली— फिर नौकरों से कहा— "इसे उठाओ—"

अनवर कुछ न बोला— हक़ीक़त यह थी कि वह बोल ही न सकता था— क्योंकि उस की ज़बान भी बक़िया जिस्म की तरह हरकत नहीं कर सकती थी— मगर यह बड़ी अजीब बात थी कि वह सोच सकता था—

नौकर उसे उठाए हुए एक कमरे में लाए और बेगम इरशाद के इशारे पर उसे आराम कुर्सी में डाल दिया गया— "इस के कपड़े उतार कर पंखे खोल दो—"

इतना कह कर वह वहाँ से चली गई— जिस आराम कुर्सी पर अनवर को बिठाया गया था उस के तीन तरफ़ तीन मेज़ों पर पंखे रखे हुए थे— थोड़ी देर बाद अनवर के जिस्म पर सिर्फ़ ज़ेर-जामे रह गये और तीन पंखों की तेज़ हवा उसे जिस्म के अंदर उतरती सी महसूस हो रही थी—

और फिर वह हैरत अंगेज़ तौर पर ठीक होता गया— पंद्रह मिनट बाद वह अपनी असली हालत पर आ गया— रान की रिलीफ़ भी घट कर सुई की चुभन के बराबर रह गई थी—

"अब पंखे बंद कर दो—" अनवर ने नौकरों से कहा— "मैं बिल्कुल ठीक हूँ— मेरे कपड़े उठाओ—"

कपड़े उसे दे दिये गये और एक नौकर बाहर चला गया— अनवर समझता था कि वह बेगम इरशाद को इस की इत्तला देने गया है— उस ने बड़ी तेज़ी से कपड़े पहने और जेब से सिगरेट केस निकाल कर एक सिगरेट मुंतख़ब की और फिर उसे होठों में दबा कर सुलगाने ही वाला था कि बेगम इरशाद कमरे में दाख़िल हुई—

"तुम यहाँ क्यों आए थे?" वह गरजी—

अनवर ने सिगरेट सुलगा कर लापरवाही से दियासलाई एक तरफ़ डालते हुए कहा— "मदऊ किया गया था—"

"मैं तुम पर केस दायर कर दूँगी— तुम मेरी बच्ची को बहला फुसला कर उस से बड़ी बड़ी रक़में ऐंठ रहे हो—"

"आहा.... मिस शाहिना मेरी क़र्ज़-दार हैं— वह मुझ से दस हज़ार रुपये क़र्ज़ ले कर जुए में हार चुकी हैं—"

"मैं.... देखो! मैं तुम्हें फिर समझाती हूँ कि उस से मिलना जुलना तर्क कर दो— वरना तुम्हारे अंजाम पर कोई रोने वाला भी न मिले गा—"

"शहर की दो बड़ी माँ-बेटी मेरी क़ब्र पर दो आँसू ज़रूर गिराएँगी— मुझे यही तो तवक़्क़ो है लेकिन बेगम इरशाद मुझे हैरत है कि आप इस नई बीमारी के इलाज से ब-ख़ूबी वाक़िफ़ हैं— पिछली रात यही बीमारी महकमा-ए-सुराग़रसानी के एक ऑफ़िसर कैप्टन हमीद को भी हो गई थी—"

317

"हो गई होगी—" बेगम इरशाद ने लापरवाही से कहा— "तुम मुझे किसी तरह भी धमका नहीं सकते। मैं जानती हूँ कि क़ानून का सामना किस तरह करना चाहिये—"

"शाहिना का अब क्या हाल है?"

"बस अब तुम चुप-चाप यहाँ से चले जाओ—"

"क्या शाहिना ने आप को जोज़फ़ पीटर की असलियत से आगाह किया था?"

"मैं कुछ नहीं जानती— अगर अब तुम तीन मिनट के अंदर ही अंदर यहाँ से न चले गये तो मैं तुम्हें सड़क पर फिंकवा दूँगी—"

अनवर ने मेज़ से अपनी फ़ैल्ट हैट उठाई और ख़त्म होते-होते सिगरेट से दूसरा सिगरेट सुलगाया। फिर मुस्कुरा कर बोला— "जब कोई मुसीबत पड़े मुझे ज़रूर याद कीजियेगा बेगम इरशाद....!"

वह दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा लेकिन फिर रुक गया और बेगम इरशाद की तरफ़ मुड़े बग़ैर बोला— "मेरी रूह इस इमारत के गिर्द हमेशा मँडलाती रहेगी—"

वह तेज़ी से चलता हुआ इमारत के बाहर निकल आया। कंपाउंड में कई जगह बल्ब रोशन थे और शायद किसी गोशे में भी अंधेरा नहीं था वह वहाँ रुकना नहीं चाहता था— वैसे अगर अंधेरा होता तो उस से फ़ायदा उठाने की कोशिश ज़रूर करता— वह सड़क पर आ गया।

मगर इस तरह चुप-चाप चले जाना उस की तबियत के ख़िलाफ़ था— उस ने एक ज़िद्दी तबियत पाई थी और इंतक़ाम का जज़्बा दबा लेने में उसे कामयाबी नहीं हुई थी— पिछली रात आर

लकनौ में भी बेगम इरशाद ने सख़्त सुस्त कहा था और अब इस वक़्त भी— हालाँकि उस के रवैये का मुहर्रिक कोई और था— कौन?

अनवर फुटपाथ पर रुक कर सोचने लगा— वैसे उसे यूँ भी किसी टैक्सी के इंतज़ार में रुकना ही था।

वह सोच रहा था— आख़िर बेगम इरशाद शहर की गंदी गलियों में क्यों भटकती फिर रही है — उसे कौन किस क़िस्म की सज़ाएं दे रहा है और क्यों? वह सब कुछ बर्दाश्त कर रही है — लेकिन पुलिस को इस की इत्तला नहीं दे सकती— वैसे वह पुलिस से भी ख़ाइफ़ (डरी हुई) नहीं मालूम होती— अगर वह पुलिस से ख़ाइफ़ होती तो अनवर को इस हाल में उठवा कर सड़क पर फिंकवा देती— उस ने उस के लिये इतनी तक़लीफ़ नहीं उठाई और फिर जब कि महकमा-ए-सुराग़रसानी का एक ऑफ़िसर न सिर्फ़ ऐसे ही एक तजरुबे से दो-चार हो चुका था बल्कि अख़बारात के ज़रिये उस की पब्लिसिटी भी कराई थी— बेगम इरशाद ने इस क़िस्म का ख़तरा मोल लिया— वैसे यह तो ज़ाहिर है कि उस के मुतल्लिक़ उसी आदमी से हिदायात मिली होंगी जो इस वक़्त का ज़िम्मेदार था।

318

क्या वह यहाँ रुक कर उस पुर-इसरार आदमी को तलाश करे? मगर यह ज़रूरी नहीं था कि वह अब भी यहीं मौजूद होता। फिर ऐसी सूरत में यहाँ रुकना ही फ़ज़ूल था— अनवर ने फ़ैसला किया कि इस वक़्त तो उसे टल ही जाना चाहिये।

और अब वह सोच रहा था कि इस वाक़िये की इत्तला कर्नल फ़रीदी को ज़रूर ही देनी चाहिये — चूँकि हमीद को भी इसी क़िस्म का एक वाक़िया पेश आ चुका था इस लिये हो सकता है कि वह इस से कोई फ़ायदा उठा सकें। बेगम इरशाद के रवैये ने उसे फिर उलझन में डाल दिया — आख़िर उस ने यह जताने की कोशिश क्यों की थी कि वह इस मर्ज़ का इलाज जानती है— मगर हो सकता है उसे इसी पर मजबूर किया गया हो— अनवर इस ख़याल पर क़ायम न रह सका क्योंकि अगर वह आदमी यही चाहता था तो उस का मतलब यह था कि वह खुद ही अपने पीछे पुलिस को भी लगाना चाहता है— फिर आख़िर अनवर ही से बैर क्यों?

वह सोचता रहा लेकिन किसी ख़ास नतीजे पर न पहुँच सका।

अचानक एक मोटर साइकिल आकर फ़ुट पाथ से लग गई।

"क्यों.... क्या निकलवा दिये गये?" उस ने रशीदा की तंज़-आमेज़ आवाज़ सुनी।
"अगर कुछ देर और ठहरता तो यही हादसा पेश आता—" अनवर आगे बढ़ता हुआ बोला— "चलो.... पीछे कैरियर पर चलो—"
रशीदा कैरियर पर चली गई— अनवर ने सीट पर बैठ कर मशीन स्टार्ट की और फिर मोटर साइकिल सड़क पर फ़र्राटे भरने लगी।
"क्यों क्या तुम इसी इंतज़ार में थे?" रशीदा ने उस की पुश्त पर चुटकियाँ लेते हुए कहा।
"चैन से बैठो वरना गाड़ी फ़ुट पाथ पर चढ़ा दूँगा—"
"यह एक शानदार एडवेंचर होगा— ज़रूर ऐसा करो—" रशीदा ने संजीदगी से कहा— लेकिन मोटर साइकिल सड़क ही पर दौड़ती रही।
"हाँ तो आज फिर उस पर वही कल का सा दौरा पड़ा था?" रशीदा ने कुछ देर बाद कहा। "तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"
"मेरे अपने ज़रिया भी हैं—" रशीदा अकड़ कर बोली— "और यह तक़रीब इसी तरह ख़त्म हो गई—"
अनवर कुछ न बोला— मोटर साइकिल फ़रीदी की कोठी की तरफ़ जा रही थी।
कुछ देर बाद वह कोठी की कंपाउंड में दाख़िल हुए— फाटक अभी बंद नहीं किया गया था — अनवर मोटर साइकिल को पोरच में लिटा चला गया।

319
लेकिन फिर उसे यह मालूम कर के बड़ी मायूसी हुई कि फ़रीदी और हमीद घर पर मौजूद नहीं हैं।
"फिर अब खड़े क्यों हो? वापस चलो—" रशीदा ने उसे घूरते हुए कहा।
"नहीं मैं इंतज़ार करूँ गा—" अनवर ने कहा और ड्रॉइंग रूम की तरफ़ बढ़ गया।

अनवर मेकअप में था— इस लिये अगर उस के साथ रशीदा न होती तो शायद वह इतनी बे- तकल्लुफ़ी से ड्रॉइंग रूम में दाख़िल न हो सकता— फ़रीदी के मुलाज़िम रशीदा को पहचानते थे— इस लिये उन्होंने कोई तआरुज़ (एतराज) न किया।
"क्या तुम इस वाक़िये की इत्तला फ़रीदी साहब को दे चुके हो?"
"किस वाक़िये की इत्तला?" अनवर ने पूछा और उस मुलाज़िम को घूरने लगा जो दरवाज़े में खड़ा उसे घूर रहा था— आख़िर उस ने रशीदा से पूछा— "अनवर साहब कहाँ हैं—" "क्यों....?"
"साहब उन्हें फोन पर बुला रहे हैं—" नौकर ने कहा।
रशीदा और अनवर हैरत से एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे फिर अनवर उठा और मुलाज़िम से बोला— "चलो....!"
लेकिन मुलाज़िम जो उस की आवाज़ नहीं पहचान सका था इस अंदाज़ में उसे देखने लगा जैसे उस के इस तर्ज़ पर बहुत सख़्त सुस्त कहे गा।
"अरे चल ना....!"
"ओह.... हो.... आप हैं—" नौकर हँसने लगा— फिर वह दोनों उस कमरे में आए जहाँ फोन रखा हुआ था।
अनवर ने मुज़्तरिबाना (बेचैनी के) अंदाज़ में रिसीवर उठाया और दूसरी तरफ़ से फ़रीदी की आवाज़ आई।
"तुम अगर मुझे यह बता भी दोगे कि तुम भी आज उसी तजरुबे से दो-चार हुए हो जो पिछली रात को हुआ था तो इस से क्या फायदा होगा?"
"आप जानते हैं!" अनवर ने हैरत से दोहराया।
"बिल्कुल इसी तरह जैसे पांचों उंगलियाँ एक दूसरी को जानती हैं—" फ़रीदी की आवाज़ आई— "और तुम यह भी सोच रहे हो कि बेगम इरशाद ने तुम से परख़ाश (दुश्मनी) रखने के बावजूद भी हमदर्दाना रवैया इख़्तियार किया था—"
"अरे.... तो आप यह भी जानते हैं?"

320
"हाँ.... मुझे इस का भी इल्म है लेकिन तुम ख़ाह-म-ख़ाह अपना वक़्त बर्बाद कर रहे हो

— "

"नहीं जनाब, मैं अब तक शाहीन से दो हज़ार रुपये वसूल कर चुका हूँ—"
"लेकिन अब शायद शाहीन भी तुम्हारी तरफ़ रुख़ करने की जुर्रत न करे गी— वैसे मुझे तुम्हारे इस नाकारा-पन पर अफ़सोस है कि मेकअप के बावजूद भी पहचान लिये जाते हो

— "

"मुझे इस का एतराफ़ है—"
"खैर तुम अब इस चक्कर में न पड़ो—"
"लेकिन अगर शाहीन ने मजबूर किया तो?"
"फिर मैं तुम्हें मशविरा दूँ गा कि जो कुछ भी करता है खुल कर करो—"
"मैं नहीं समझा—"
"बेगम इरशाद से ख़ौफ़ खाने की ज़रूरत नहीं है— वह तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई क़ानूनी कार्रवाई नहीं कर सके गी—"
"देखिये.... फिर आप को यह भी मालूम होगा कि बेगम इरशाद रात गये भी घोड़ागाड़ी में शहर की गलियों के चक्कर क्यों लगाती फिरती है—"
"नहीं मैं अभी इस के मुतल्लिक़ कुछ नहीं जानता— और न जानना चाहता हूँ—" "क्यों?"
"जुर्म से ज़्यादा मुझे मुजरिम की फ़िक्र है— अच्छा बस अब तुम घर जा सकते हो—" दूसरी तरफ़ से आवाज़ आई और सिलसिला मुनक़ता (टूट) हो गया।

पीला फ़रिश्ता

ठंडक से बचने के लिये हमीद ने कानों को रूमाल से जकड़ रखा था— इस के बावजूद भी उस के दाँत बज रहे थे और बर्फ़ से भी ज़्यादा ठंडा लोहा उसे अपने हाथों में चिपका हुआ सा महसूस हो रहा था— उस ने कार्निस पर दोनों पैर जमा कर नीचे देखा और उस की रूह फ़ना हो गई— वह ज़मीन से तक़रीबन साठ फुट की बुलंदी पर था और इत्मीनान की साँस लेने के लिये ज़रूरी था कि वह किसी न किसी तरह दस फुट की मजीद बुलंदी तय कर के छत पर पहुँच जाये—

321

वैसे अगर उसे अपनी हड्डियों का सफ़ूफ़ (powder) देखने की ख्वाहिश होती तो दोनों हाथों से ज़रूर छोड़ देता। लेकिन इस वक़्त वह उस पाइप को मज़बूती से पकड़े रहना चाहता था जिस के सहारे उस ने दो मंज़िल की दूरी तय की थी और जो मजीद दस फ़ुट की बुलंदी तय कराने के बाद उसे दोबारा ज़मीन पर बैठने का ज़ामिन (guarantor) था। उस ने यह खतरनाक सफ़र तनहा नहीं बल्कि शरीक-ए-सफ़र "फादर हार्ड" के साथ तय किया था? लेकिन अब वह कहाँ था?

हमीद ने एक ठंडी सांस ली और फिर ऊपर चढ़ने लगा क्योंकि "फादर हार्डस्टोन" की तरफ से आवाज़ आई थी। हकीक़त यह अरसा तीन मिनट से ज्यादा का नहीं था। मगर हमीद को ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वह तीन हज़ार साल से इस दीवार और पाइप पर तबअ-आज़माई (experimenting) करता आया हो। सिर्फ तीन मिनट पहले फ़रीदी ऊपर पहुँच गया था और शायद इतनी जल्दी में था कि उसे पलट कर हमीद की खबर लेने की भी फुर्सत न मिल सकी थी।

हमीद किसी न किसी तरह ऊपर पहुँचा। यह तीसरी मंज़िल की सपाट छत थी। ऊपर पहुँचते ही वह चित लेट गया। उस का सीना लुहार की धौंकनी की तरह चल रहा था। उस का दिल चाह रहा था कि हलक फाड़-फाड़ कर गाने लगे।

ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार

हाउ आई वंडर व्हाट यू आर

तकरीबन दस मिनट तक वह इसी हालत में पड़ा रहा। फिर सोचने लगा— अब नीचे पहुँचने की क्या सूरत होगी। लेकिन फिर ख्याल आया कि अगर यह कोई दुश्वार मसला होता तो फ़रीदी

उस की रहनुमाई के लिये वहाँ ज़रूर रुकता। वह लेटे ही लेटे छत के उन किनारों की तरफ खिसकने लगा जहाँ से वह नीचे पहुँचने के रास्तों का जायज़ा ले सकता था। वह यहाँ क्यों आया था— उस के फरिश्तों को भी खबर नहीं थी। बल्कि हकीक़त तो यह थी कि अब उस के "फरिश्तों" ने "खबर" के चक्कर में पड़ना ही छोड़ दिया था।

दीवार के किनारे पहुँच कर उस ने नीचे झाँका और उस की बांछें खिल गईं क्योंकि सहन में रोशनी थी और नीचे पहुँचना भी निहायत आसान था। रोशनी देख कर वह इस लिये खुश हुआ था कि मामलात यूनानी मालूम होते हैं वरना फादर हार्ड की तरह रोशनी गुल करना न भूलता। वह कार्निस पर पैर रख कर धम्म से सहन में कूद गया। और कमरे के अंदर से आवाज़ आई "वाह.... वाह.... दूसरा फरिश्ता, मैं बहुत खुश-क़िस्मत हूँ—"

322

हमीद बौखला कर खड़ा हो गया— कमरे की खिड़कियाँ और दरवाज़े खुले हुए थे—

उस ने फरीदी को देखा जो कमर पर दोनों हाथ रखे सीधा खड़ा था और उस के होंठों में दबे हुए सिगार का धुआँ फ़ज़ा में लहरें बना रहा था और एक दुबला-पतला आदमी जिस के जिस्म पर ज़र्द रंग का लबादा था एक आराम कुर्सी में नीम-दराज़ (अधलेटा) था—

हमीद फूँक-फूँक कर क़दम रखता हुआ कमरे में दाख़िल हुआ और जैसे ही वह वहाँ पहुँचा दुबला-पतला आदमी कुर्सी से उछल कर खड़ा हो गया— उस की आँखें धुंधली थीं और गाल पिचके हुए से.... लेकिन उम्र तीस से ज़्यादा नहीं मालूम होती थी—

"खुश आमदीद.... ऐ मुबर्रक (पवित्र) फरिश्ते—" वह हमीद की तरफ दोनों हाथ बढ़ा कर बोला— "मैं बड़ा खुश-क़िस्मत हूँ—"

हमीद ने भी बिल्कुल उसी के से अंदाज़ में हाथ आगे बढ़ाए लेकिन दूसरे ही लम्हे में वह आदमी फिर आराम कुर्सी में ढेर हो गया— उस की रंगत ज़र्द थी और वह खुद ही अपनी वज़अ-क़तअ (रहन-सहन) से फरिश्ता मालूम हो रहा था—

"क्या आप मुझे अपना नाम नहीं बताएँ गे?" फरीदी ने उस से कहा—

"मेरा नाम वफ़ादार कुत्ता है—" उस आदमी ने जवाब दिया—

"मैं आप जैसे संजीदा आदमी से संजीदगी ही की तवक़्क़ो (उम्मीद) रखता हूँ—"

"मुझे इल्म है कि किसी के मुतल्लिक़ कुछ मालूम कर लेना फरिश्तों के लिये ना- मुमकिन नहीं है—" वह मुस्कुराया—
"आप यहाँ कब से मुक़ीम (रह रहे) हैं?"
"इब्तिदा-ए-आफरीनिश (सृष्टि के आरंभ) से—"
"मैं उस वक्त कहाँ था?" हमीद चारों तरफ देखता हुआ बड़बड़ाया—
"भाई मारूत.... तुम तो मेरी साथ ही लटकाए गए थे—" उस ने हमीद की तरफ देख कर संजीदगी से कहा—
"क्या फ़रमाया....?" हमीद उस की तरफ मुड़ कर घूरता हुआ बोला—
"आह.... भाई.... क्या तुम्हें यूनान की ज़ोहरा याद नहीं?"
"मैं जापान तक की ज़हराओं से वाक़िफ़ हूँ— तुम अपना मतलब बयान करो—"
"ये बताओ कि तुम अब तक कहाँ रहे?" उस आदमी ने कहा— "मुझे तो अब सिर्फ़ इतना ही याद है कि ज़लज़ला आया था और चाह-ए-बाबुल के परखचे उड़ गए थे और फिर होश में आने के बाद तुम्हें अपने पहलू में

323
" ही पाया, हाँ— हाँ.... उफ़.... ओह.... भाई मारूत.... क्या तुम्हें वह प्यास याद है— हमारी ज़बानें निकली पड़ रही थीं और पानी सिर्फ़ एक बालिश्त के फ़ासले पर था—" "आहा....!" हमीद ने सर हिला कर कहा— "और हम उलटे लटके हुए थे—"
"ख़ुदा का शुक्र है.... प्यारे भाई कि तुम्हें याद तो आया— अब तुम कहाँ रहते हो?" "ज़ोहरा के घर—" हमीद फ़रीदी को आँख मार कर मुस्कुराया। लेकिन फ़रीदी शायद इन दोनों की बकवास में ज़र्रा बराबर भी दिलचस्पी नहीं ले रहा था।
"क्या....?" वह आदमी यक-ब-यक उछल कर खड़ा हो गया— "तुम ज़ोहरा के साथ रहते हो....?" "हाँ.... और मरीख़ मेरा साला लगता है—"
"अगर ऐसा है तो तुम ने बद-अहदी की है मारूत.... बहुत बुरा किया तुम ने— मैं तुम्हें कभी नहीं माफ़ करूँ गा—"

दफ़अतन फ़रीदी ने हाथ उठा कर कहा— "ग़ालिबन तुम्हारा नाम हारूत है—"
"उसी से पूछो—" उस ने हमीद की तरफ़ इशारा किया।
"हाँ....!"
"हाँ.... ये मिस्टर हारूत हैं—" हमीद संजीदगी से सर हिला कर बोला— "हम दोनों फ़रिश्ते थे— लड़कों-ज़ोहरा के इश्क़ में गिरफ़्तार हुए और चाह-ए-बाबुल के क़ैदी बना दिये गये— आज कल मैं जूते गाँठता हूँ और ये शायद बुक-बाइंडर हैं—"
"मैं अज़ल से हारूत हूँ और अबद तक हारूत रहूँ गा—" उस ने बुरा सा मुँह बना कर कहा — "मैं वज़अदारी के ख़िलाफ़ समझता हूँ कि आज लफ़ंगा हूँ कल फ़रिश्ता हो जाऊँ—"
"तो फिर तुम ज़ोहरा के मामले में मुझ से झगड़ा नहीं करोगे— क्यों....?" हमीद ने कहा।
"ख़त्म करो—" फ़रीदी झुँझलाए हुए लहजे में बड़बड़ाया। फिर उस आदमी से बोला— "ज़ोहरा तुम्हें मिल जाये गी मैं वादा करता हूँ— लेकिन तुम हम फ़रिश्तों की आमद का तज़किरा किसी से नहीं करोगे—"
"हाँ....!" हमीद फ़रीदी की तरफ़ इशारा कर के बोला— "ये भाई इज़राईल हैं—" "डिलाइटेड सर....!" वह झुक कर फ़रीदी से मुसाफ़ा करता हुआ बोला— "मुझे क्या पड़ी है कि मैं तुम्हारा तज़किरा करूँ—"
फ़रीदी ने हमीद को बैठने का इशारा किया और खुद भी बैठ गया।
"आप हज़रात कौन सी शराब पसंद करते हैं?" ज़र्दपोश पीले फ़रिश्ते ने उन से पूछा।

324
"जो भी वक़्त पर मिल जाये—" फरीदी बिल्कुल उसी अंदाज़ में जमाही ले कर बोला जैसे सच-मुच शराब का आदी हो और देर से उसे शराब न मयस्सर आई हो।

"क्या मैं एक बहुत पुरानी और पुर-तगाली शराब पेश करने का फख़्र हासिल कर सकता हूँ?"

"मैं मशकूर हूँगा— लेकिन मेरी आदत है कि अपने साथ पीने वालों के लिये मैं ही मिक्स करता हूँ—"

"मुझे ख़ुशी होगी अगर मैं अपने मेहमानों की ख्वाहिशात का एहतराम कर सकूँ—" ज़र्दपोश फ़रिश्ते ने कहा और उठ कर एक अलमारी खोली— फिर ज़रा ही देर बाद मेज़ पर तीन गिलास एक बोतल और सोडे का साइफ़न नज़र आने लगे।

हमीद फरीदी को हैरत से देख रहा था लेकिन कुछ बोला नहीं— वैसे उस वक्त उस की आँखें हलक़ों से निकली पड़ रही थीं— जब फरीदी तीनों गिलासों में शराब डाल चुकने के बाद साइफ़न से सोडे की बौछारें कर रहा था।

तीनों ने गिलास टकराये और एक दूसरे को तरक़्क़ी और खुशहाली की दुआएं दे कर गिलासों को होठों से लगा लिया— पहले ही घूँट ने हमीद की आँखों पर ठोकर मारी और उस की कनपटियां गर्म हो गईं— शराब वाक़ई बहुत पुरानी और तेज़ थी— उस ने देखा कि ज़र्दपोश फ़रिश्ते ने दो ही तीन साँसों में अपना गिलास ख़त्म कर के मेज़ पर पटक दिया— हमीद ने भी उसी की तक़लीद की लेकिन उस के सीने का जो हाल था शायद पहले कभी नहीं हुआ— वह अपना गिलास मेज़ पर पटक कर फातिहाना अंदाज़ में फरीदी की तरफ मुड़ा जो खूँखार नज़रों से उसे घूर रहा था।

अब हमीद ने देखा कि फरीदी का गिलास ज्यों का त्यों रखा हुआ है— शायद उस ने एक हल्की सी चुस्की भी नहीं ली थी।

हमीद के हवास गायब हो गये— वह न जाने किस धुन में समझ बैठा था कि फरीदी ने अपने लिये भी शराब पीने ही की ग़रज़ से उंडेली है—

"यह तुम ने क्या किया?" वह किसी दरिंदे की तरह गुर्राया।

हमीद ने कुछ कहना चाहा लेकिन हकला कर रह गया— न ज़हन साथ दे रहा था और न ज़बान—

"वह ज़रूर आएँ गे— मुझे यक़ीन है—" ज़र्दपोश फ़रिश्ता कुर्सी की पुश्त से टिका हुआ बड़बड़ा रहा था और उस की आँखें छत से लगी हुई थीं।

"सदियां गुज़र गईं.... हाँ.... हाँ.... मैं ने उसे झील में नहाते देखा था—" ज़र्दपोश फ़रिश्ता अपने

325

अंदाज़ में बड़बड़ाता रहा— "शफ़क़ उस के गालों को चूम रही थी— एक सुनहरा बजरा उस के क़रीब गुज़रा जिसे हंस अपने परों पर उठाए हुए था.... और.... हाथों के फूल हवा में तैर रहे थे.... गु-ग़म-ज़-ग़ी.... ग़े.... ग़री-सकी.... ग़ु-सु-आल.... ग़ी....!"

फिर वह न सिर्फ़ बेहोश हो गया बल्कि उस की गर्दन भी एक तरफ़ ढुलक गई— फरीदी ने उठ कर उसे हिलाया-डुलाया लेकिन उसे होश ही नहीं था—

पुरानी शराब आहिस्ता-आहिस्ता हमीद के ज़हन पर सिक्का जमा रही थी लेकिन अभी उस में सोचने समझने की सलाहियत बाक़ी थी— यह और बात है कि हाथ-पैर क़ाबू में न रहे हों—

उस ने देखा कि फरीदी गिलास और बोतल उठा कर उसी अलमारी में रख रहा है जिस से वह निकाले गये थे— फिर उस ने बे-होश फ़रिश्ते को भी उठा कर मसहरी पर डाल दिया और हमीद का गिरेबान पकड़ कर झुकाते हुए बोला— "यह शराब तेज़ और पुरानी मालूम होती है अगर तुम औंधे हो गये तो क्या होगा?"

"मैं भी फ़रिश्ते हूँ और इसी फ़रिश्ते के साथ दफ़न हो जाऊँ गा—" हमीद ने मसहरी की तरफ़ इशारा किया—

"अबे बद-बख़्त.... अब तुम यहाँ से निकलोगे कैसे? क्या तुम पाइप के सहारे नीचे उतर सकोगे—"

"हरगिज़ नहीं—" हमीद मुट्ठियाँ भींचने की कोशिश करता हुआ बोला— "नामुमकिन.... मैं पाइप ही न पकड़ सकूँ गा—"

"जहन्नम में जाओ—" फरीदी ने कहा और कमरे की तलाशी लेने लगा यहाँ तीन कमरे थे— एक छोटा सा सहन था और एक बरामदा.... साज़-ओ-सामान से ज़र्दपोश फ़रिश्ता कोई कम हैसियत आदमी नहीं मालूम होता था—

हमीद फरीदी के साथ लड़खड़ाता फिरता रहा— और अब उस के ज़हन में बे-रब्त और ऊट-पटांग ख़यालात चकराने लगे थे—

"मुझे यूनान की ज़हरा के वालिद से मिला दीजिये—" उस ने फरीदी के शाने पर हाथ रख कर कहा—

"पीछे हटो....!" फरीदी उसे धक्का देता हुआ बोला—

"अरे.... वाँ.... मैं कमज़ोर हूँ क्या—" हमीद आस्तीन चढ़ाने लगा— "यह हक़ीक़त है कि हल्की शराब ने उस का भेजा खोपड़ी के ऊपर ला रखा था—

"मैं बहुत बुरी तरह ख़बर लूँ गा—"

"मैं इस से भी बुरी तरह पेश आऊँ गा—" हमीद ने सीना ठोक कर जवाब दिया—

326

फ़रीदी फिर अपने काम की तरफ़ मुतवज्जह हो गया। वह एक-एक चीज़ को उलट-पलट कर देख रहा था।

"बस दम निकल गया.... हाहाहा....!" हमीद ने झूमते हुए क़हक़हा लगाया।

लेकिन फ़रीदी ने उसकी तरफ़ मुड़ कर देखा तक नहीं। हमीद की खोपड़ी आउट ही होती जा रही थी और उसने भी फ़रीदी की तक़लीद (नकल) में चीज़ें उठा-उठा कर इधर-उधर फेंकनी शुरू कर दीं। मेज़ पर से घड़ी उठाई। उसे उलट-पलट कर देखा और फिर कान से लगा कर उसकी 'टिक टिक' सुनने लगा। कुछ देर बाद खुद भी टिक-टिक शुरू कर दी— बिल्कुल उसी अंदाज़ में जैसे घड़ी को चिढ़ा रहा हो।

"साली को ठीक से चलना भी नहीं आता—" उसने झुँझला कर कहा और घड़ी को फ़र्श पर पटक दिया।

"यह क्या बेहूदगी है—" फ़रीदी मुड़कर गुर्राया।

"ऐ बड़े भाई तुम अपना काम करो—" हमीद दोनों हाथ आगे बढ़ा कर बोला— "वरना मुझे ख़ाह-म-ख़ाह ग़ुस्सा आ जायेगा— क्या तुम मुझे उल्लू समझते हो?"

"अगर तुम नशे में न होते तो मैं तुम्हारी खाल खींच लेता—"

"मैं नशे में नहीं हूँ— ज़रा खींचों तो खाल— मैं भी देखूँ कि कितने ताक़तवर हो

— "

फ़रीदी बुरा सा मुँह बनाये हुए एक सूट केस पर झुक पड़ा। इतने में हमीद की नज़र मलबुसात (कपड़ों) की अलमारी के बड़े आइने पर पड़ी और वह ठिठक गया। फिर मुट्ठी बाँध कर दाँत पीसता हुआ आइने की तरफ़ बढ़ा। साथ ही वह बड़बड़ाता भी जा रहा था— "यो इडियट.... उल्लू का पट्ठा.... साला हमारा भेस बदल कर आया है तुम—"

"थैं....!" उसका मुक्का आइने पर पड़ा और फिर उसके चेहरे पर यतीमी बिखर गई क्योंकि आइना मामूली भी नहीं था कि एक-आध घूँसा भी बर्दाश्त कर सकता— वैसे कोई हमीद के दिल से पूछता कि उसके पंजे की हड्डियों का क्या हश्र हुआ था।

"अरे क्यों पागल हुआ है हमीद के बच्चे! क्यों शामत आई है—" फ़रीदी उसकी तरफ़ मुड़कर बोला।

"मैं अपनी तौहीन नहीं बर्दाश्त कर सकता— तुम खुद हमीद के बच्चे—" हमीद ने कहा और अलमारी से कपड़े निकाल-निकाल कर उनकी धज्जियाँ बिखेरने लगा।

"अरे यह क्या कर रहा है—"

"मज़े कर रहा हूँ—" हमीद का जवाब था।

"अच्छा तो करो मज़े—" फ़रीदी उसकी तरफ़ बढ़ता हुआ बोला। हमीद ने झपटना चाहा लेकिन फ़रीदी ने इतनी फुर्ती से चपत रसीद की कि दूसरे ही लम्हे में वह दाहिने शाने के बल ज़मीन पर था।

327

अरे बाप रे—" वह किसी ज़ख़्मी बैल की तरह कराह रहा था— लेकिन उसे फिर उठना नसीब न हुआ— हमीद ने दो मिनट के अंदर ही अंदर उसे बे-बस कर दिया— उस की टाई खोल कर उस ने उस के हाथ-पाँव बाँध दिये थे और हमीद ज़मीन पर बैठा खोलने की कोशिश कर रहा था—

जब गिरहें किसी तरह न खुलतीं तो उस ने कान पर हाथ रख कर गाना शुरू कर दिया—

बुलबुलो मत रो यहाँ आँसू बहाना है मना

इन क़फ़स के क़ैदियों को ग़ुल मचाना है मना

"ओ बुलबुलों के बच्चे! मैं तुम्हारे हलक़ में कपड़ा ठूँस दूँगा—" फरीदी पैर पटक कर बोला—

"तुम मुझे रोने भी नहीं देते.... हाय! हाय! रे ज़ालिम ज़माना—" उस ने कान पर हाथ रख कर तान लगाई और फरीदी ने आगे बढ़ कर उस के गालों पर थप्पड़ रसीद करने शुरू कर दिये

—

"अरे.... अरे.... वाह भई—" हमीद हाथ पकड़ने की कोशिश करने लगा लेकिन कामयाबी न हुई और उस के दोनों गाल सुर्ख हो गये—

"मार लो.... मार लो.... अच्छी तरह मार लो.... अल्लाह तुम्हें ग़ारत करे गा.... जैसे तुम ने एक बेवा का दिल दुखाया है—" हमीद सच-मुच बेवा ही के अंदाज़ में बिलबिला कर बोला और फ़र्श पर लेट कर चेहरा आंचल में छुपा लिया— फरीदी की आँखें सुर्ख हो रही थीं—

हमीद उस के लिये इस वक़्त एक मसला बन गया था— अव्वल तो वह उस के काम में ख़ारिज हो रहा था और दूसरे कुछ देर बाद दूसरी सूरत में वबाल-ए-जान बनने वाला था— वह दोनों इसी लिये इमारत की छत से अंदर दाख़िल हुए थे कि सदर दरवाज़े से दाखिला ना-मुमकिन था— और अब भी बाहर निकलने के लिये सिर्फ़ वही रास्ता इस्तेमाल किया जा सकता जिस रास्ते से वह यहाँ तक पहुँचे थे— सदर दरवाज़ा बाहर से मुक़फ़्फ़ल था और उसे खुलवाना ना-मुमकिन ही में से था— अगर फरीदी को इल्म होता कि हमीद से शराब की ऐसी हिमाक़त सरज़द ही हो जाये गी तो वह उसे पहले से इशारा कर देता— उस का मक़सद तो दर-अस्ल उस ज़र्दपोश फ़रिश्ते को बे-होश कर के यहाँ की तलाशी लेना था— उस के गिलास में उस ने एक बहुत ही महलक (घातक) असर क़िस्म की ख़्वाब-आवर (नींद की) दवा मिलाई थी— हमीद को इसी हालत में छोड़ कर वह फिर अपने काम की जानिब मुतवज्जह हो गया— वह कुछ इसी क़िस्म का आदमी था— उसे इस की परवाह नहीं थी कि पाँच मिनट बाद क्या हो गा— उस ने एक संदूक खोल डाला और उस में रखी हुई चीज़ें उलटने-पलटने लगा — इस में ज़्यादा-तर औरतों के इस्तेमाल की चीज़ें थीं— यहाँ कई सूट केसों में भी उसे ज़नाना इस्तेमाल के

328

मलबुसात मिले थे और वह सोच रहा था कि अगर यहाँ कोई औरत भी रहती है तो उसे इसका इल्म पहले से क्यों नहीं हुआ। उसे जो कुछ भी इत्तलाआत मिली थीं वह सिर्फ़ इतनी ही थीं कि यहाँ एक फ़ातिरुल-अक़्ल (पागल) आदमी रहता है। ख़बरगीरी के लिये दो आदमी हैं जो मुख्तलिफ़ औक़ात में उसकी देख-भाल करके उसे मकान में मुक़फ़्फ़ल (बंद) कर जाते हैं। इस वक़्त भी उसे मालूम हुआ था कि वह मकान में ही है। अगर वह चाहता तो सदर दरवाज़े का क़ुफ़्ल आसानी से खोल सकता था मगर शायद वह अपनी आमद के निशानात नहीं छोड़ना चाहता था। इसी लिये उसने दूसरे तरीक़े को तरजीह दी थी। वैसे अब वह सोच भी नहीं सकता था कि मुताल्लिक़ा लोगों को इस ख़ाना-तलाशी का इल्म न हो सकेगा क्योंकि हमीद ने नशे की हालत में वहाँ कुछ ऐसी अब्तरी (अव्यवस्था) फैला दी थी जिसका इज़ाला तक़रीबन नामुमकिन ही था।

दफ़अतन हमीद ने सर उठा कर कहा— "अल्लाह करे तुम्हारी क़ब्र से धुआँ उठे— तन तन कीं— पड़ें....!" न जाने उसके ज़हन में किसी बेवा का तसव्वुर कहाँ से आ घुसा था।

"ख़ुदा करे मरते वक़्त कलमा नसीब न हो.... मैं जनम जली.... पिंहे.... पिंहे.... पिंहे.... पिंहे....!" वह औरतों के से अंदाज़ में फूट-फूट कर रोने लगा।

शअ्बदों का जवाब

फ़रीदी को बे-साख़्ता हँसी आ गई और वह मुड़कर बोला— "ज़रा तुम होश में आ जाओ तो फिर मिज़ाज पूछूँगा।"

"छेड़ोगे तो शोर मचा दूँगी—" हमीद रोता हुआ नाक के बल बोला।

फ़रीदी जल्द से जल्द पूरे मकान को देख डालना चाहता था। अभी एक कमरा और बाक़ी था वह हमीद को वहीं छोड़कर तीसरे कमरे में चला आया लेकिन बमुश्किल तमाम एक मिनट गुज़रा होगा कि उसे एक अजीब क़िस्म की आवाज़ सुनाई दी और साथ ही दाहिनी जानिब वाली खिड़की के पाट लरज़ने लगे। ऐसा मालूम होता था जैसे कोई उसे खोलने की कोशिश कर रहा हो।

फ़रीदी आहिस्ता-आहिस्ता पीछे हटता हुआ दरवाज़े के क़रीब आ गया और उसे ब-आहिस्तगी बंद करके वहीं खड़ा रहा लेकिन उसकी एक आँख खुदकार क़ुफ़्ल के सुराख़ से लगी हुई थी और दाहिना हाथ जेब में पड़े हुए रिवॉल्वर पर था। बिल्कुल ऐसा मालूम हो रहा था जैसे कोई बिल्ली शिकार के घात में हो।

उसने रोशनी नहीं गुल की थी और क़ुफ़्ल के सुराख़ से हिलती हुई खिड़की साफ़ दिखाई दे रही थी।

329

दफ़अतन (अचानक) उस के दोनों पाट खुल गये और एक आदमी अंदर कूद आया। उस के जिस्म पर स्याह (काले) कपड़े थे और उस ने अपना चेहरा भी स्याह नक़ाब में छुपा रखा था।

उस ने चारों तरफ़ देखा और फिर बड़ी एहतियात (सावधानी) से उसी दरवाज़े की तरफ़ देखने लगा जिस के क़रीब फ़रीदी खड़ा हुआ था।

फ़रीदी ने उसे बहुत ग़ौर से देखा। आने वाला या तो कोई अनाड़ी था या इंतहाई बेबाक आदमी जिस ने रोशनी गुल करने की भी ज़रूरत नहीं महसूस की थी। वैसे उस का दाखिला भी उसी रास्ते से हुआ जिस से फ़रीदी और हमीद यहाँ तक पहुँचे थे। ये दोनों तो सीधे छत पर निकल आये थे लेकिन इस आने वाले ने छत की बजाये कारनिस पर चल कर खिड़की तक पहुँचने की कोशिश की थी और इस में कामयाब भी हो गया था।

फ़रीदी एक तरफ़ हट कर दीवार से चिपक गया। उस ने सहन (आँगन) की रोशनी उसी वक़्त गुल कर दी थी जब तलाशी का आग़ाज़ किया था।

आने वाले ने ब-आहिस्तगी (धीरे से) दरवाज़ा खोला और सहन में आ गया। लेकिन दूसरे ही लम्हे में फ़रीदी के रिवॉल्वर की नाल उस की गर्दन से जा लगी।

"अपने हाथ ऊपर उठा लो—" उस ने आहिस्ता से कहा और नक़ाबपोश के हाथ बे-अख्तियाराना (अनजाने में) तौर पर ऊपर उठ गये।

"चलो.... आगे बढ़ो....!" फ़रीदी रिवॉल्वर की नाल पर थोड़ा ज़ोर सर्फ़ (प्रयोग) करता हुआ बोला।

नक़ाबपोश ने बे-चूँ-ओ-चरा (बिना किसी सवाल के) तामील की।

"अंदर चलो....!" फ़रीदी बोला— वह उस कमरे के दरवाज़े पर थे जहाँ ज़र्दपोश फ़रिश्ता बेहोश पड़ा था— नक़ाबपोश ने पैर से दरवाज़े को धक्का दिया और दरवाज़ा खुल गया।

लेकिन फ़रीदी की हैरत की कोई इंतहा न रही क्योंकि मसहरी (पलंग) पर ज़र्दपोश फ़रिश्ते की बजाये कैप्टन हमीद पड़ा हुआ था और ज़र्दपोश फ़रिश्ता सिरे से गायब।

अभी उस की हैरत दूर नहीं हुई थी कि उसे दूसरे हादसे से दो-चार होना पड़ा। यानी बे- ख़बरी में किसी ने उस के हाथ से रिवॉल्वर छीन लिया। वह बड़ी तेज़ी से मुड़ा लेकिन बैक-वक़्त (एक साथ) दो रिवॉल्वरों की नालें उस के सीने से आ लगीं।

"हाथ ऊपर उठाओ—" बोलने वाला लहजे से ग़ैर-मुल्की मालूम होता था और जुमला अंग्रेज़ी में अदा किया गया था— फ़रीदी ने हाथ उठा दिये— साथ ही उसे अपनी पुश्त (पीठ) पर कहकहा सुनाई दिया।

330

वह नक़ाबपोश हँस रहा था जिस की गर्दन पर कुछ देर पहले फरीदी ने रिवॉल्वर रख दिया था।

"हलो.... माई डियर.... हाउ डू यू डू—" उस ने फरीदी की कमर थपथपा कर कहा— "आओ.... आओ.... बाहर क्यों खड़े हो— तुम्हारा असिस्टेंट गहरी नींद सो रहा है— इस लिये उस की नींद में खलल पड़ने का अंदेशा नहीं है—"

फरीदी चुप-चाप कमरे में दाख़िल हो गया।

"बैठ जाओ—" नक़ाबपोश ने आराम कुर्सी की तरफ़ इशारा किया।

"और अगर मैं इनकार कर दूँ तो....?" फरीदी मुस्कुराया।

"तब फिर तुम से ज़्यादा बद-बख़्त आदमी रू-ए-ज़मीन पर न मिलेगा— क्योंकि डॉक्टर ड्रेड ने आज तक इतनी मोहलत किसी को नहीं दी—"

"ओह.... तो तुम डॉक्टर ड्रेड हो?"

"और तुम्हें इस पर हैरत है?"

"नहीं हैरत क्यों होती—" फरीदी ने लापरवाही से कहा— "इस आदमी के हाथों रुक (झुक) जाने में मुझे क़तई शर्मिंदगी न होगी जो दो बार मेरे हाथों ज़लील हो चुका है

— "

"आहा.... वह मेरी तफ़रीह (मनोरंजन) थी कर्नल—"

"और यह मेरी तफ़रीह है—" फरीदी ने लापरवाही से शानों को जुम्बिश दी।

"खैर मुझे मालूम है कि तुम बहुत दिलेर और चालाक हो—" नक़ाबपोश ने सर्द लहजे में कहा— "लेकिन तुम मेरे उसूल से वाक़िफ़ नहीं हो— मैं जब भी किसी नई सरज़मीन पर क़दम रखता हूँ अपने लिये ला-तादाद ख़तरात खुद ही पैदा करता हूँ ताकि खुद को वहाँ के माहौल से हम-आहंग (Harmonize) कर सकूँ— क्या समझे.... वरना जानते हो मेरा एक हल्का सा इशारा तुम्हारी मौत के लिये काफ़ी होता— क्या मेरी सिंगलटन हमीद के बाज़ू में कोई ऐसी ज़हरीली सुई नहीं चुभो सकती थी जिस से उस की मौत वहीं वाक़े हो जाती—"

"चुभो सकती थी—" फरीदी ने बड़ी सादगी से जवाब दिया।

"फिर क्या वजह हो सकती है कि तुम दोनों अभी तक ज़िंदा हो?"

"यही कि हम दोनों ने फ़िलहाल मर जाने का प्रोग्राम मुल्तवी (Postpone) कर दिया है — " फरीदी ने मुस्कुरा कर कहा।

"लेकिन तुम्हें यक़ीन होना चाहिये कि यह हमारी आख़िरी मुलाक़ात है—" नक़ाबपोश ने मुस्कुरा कर बोला—

"हम तुम्हें अलविदा कहने हवाई अड्डे पर ज़रूर आएँगे—"

"तुम ग़लत समझे यह सरज़मीन मुझे बहुत पसंद आई है— क्योंकि यहाँ दौलत हासिल करने के—"

331

मौके दूसरी जगहों से बेहतर और ज़्यादा हैं— लिहाज़ा मैं अब तुम जैसे काँटों को अपनी राह से हटा देना चाहता हूँ—"

"मगर इस नन्ही सी फाँस के लिये क्या करोगे जो तुम्हारे ज़हन में हर वक़्त खटकती है

— "

"ग़ालिबन तुम्हारा इशारा फिंच की तरफ़ है—" नक़ाबपोश बे-तहाशा हंसने लगा— "अरे वह मेरे दरबार का मज़खरा है—"

"बहुत खूब—" फरीदी इस जुमले से महज़ूज़ (आनंदित) हुआ।

"इधर सुनो....!" दफ़अतन (अचानक) नक़ाबपोश का लहजा बदल गया— "तुम्हारी हक़ीक़त ही क्या है— मेरी एक मामूली सी चाल भी तुम्हारी समझ में न आ सकी— तुम मेरी सिंगलटन के पीछे दौड़ते रहे— तुम ने ये न सोचा कि कैप्टन हमीद के बाज़ू में ज़हरीली सुई चुभोने के बाद भी एलानिया (खुलेआम) क्यों घूमती फिर रही है— तुम ने ये भी न सोचा कि वैसा ही एक तजुर्बा उस क्राइम रिपोर्टर को क्यों हुआ?"

"अगर क्राइम रिपोर्टर अनवर को भी ऐसे ही वाकये से दो-चार न होना पड़ा होता तो मैं इस के मुताल्लिक ज़रूर सोचता—" फरीदी ने मुस्कुरा कर जवाब दिया।

"तुम लोग मेरी सिंगलटन का तआक़ुब करते हुए यहाँ तक आये और तुम्हें पड़ोसियों ने बताया कि यहाँ एक पागल आदमी रहता है और उस के मुताल्लिक़ीन उसे मुक़फ़्फ़ल (बंद) रखते हैं—" नक़ाबपोश मज़े ले-ले कर कहता रहा— "फिर हम ने एक दिलचस्प मंज़र देखा— तुम्हारा असिस्टेंट वाक़ई बड़ा अहमक़ है— उस ने तुम्हारे लिये दोहरी परेशानियाँ पैदा कर दीं— अब तुम सोच रहे होगे कि अगर मैं किसी तरह निकल भी जाऊँ तो इस गधे का क्या होगा—"

"माई डियर डॉक्टर ड्रेड— तुम हैरत-अंगेज़ आदमी हो—" फरीदी ने मुतय्यराना (हैरानी भरे) अंदाज़ में कहा— "तुम ने मेरे दिल की बात कह दी लेकिन सुनो दोस्त तुम्हें शायद इस का इल्म नहीं है कि मैं अरसे से तुम्हारी मौत का ख्वाहिशमंद हूँ—"

"मेरे लिये बिल्कुल नई इत्तिला है—"
"हाँ.... मगर तुम्हारा रवैया बड़ा बुज़दिलाना है— मैं बिल्कुल निहत्था हो चुका हूँ— इस के बावजूद भी मेरी तरफ़ चार रिवॉल्वर उठे हुए हैं—"
" ग़लत नहीं है—"
"न होगा— मगर मुझे उलझन होती है— अपने एक आदमी से कहो कि मेरी जामा तलाशी ले डाले—"
"क्यों....?"

332
"ताकि तुम लोग मेरी तरफ से मुतमइन (आश्वस्त) हो कर रिवॉल्वर अपनी जेबों में रख लो—"
"क्या यह ज़रूरी है कि हम वही करें जो तुम चाहते हो—"
"यक़ीनन अख़लाक़ का तो यही तकाज़ा होना चाहिये कि तुम इस वक्त मेरी हर ख्वाहिश पूरी करो— क्योंकि तुम्हारे ही कौल (कथन) के मुताबिक हम थोड़ी ही देर के मेहमान हैं— जब किसी मुजरिम को सज़ा-ए-मौत दी जाने लगती है तो उसकी आखिरी ख्वाहिश भी पूरी करनी पड़ती है—"
नक़ाबपोश कुछ देर खामोश रहा फिर अपने आदमियों की तरफ देख कर बोला—
"इस की जामा तलाशी लो—"
जामा तलाशी शुरू हो गई लेकिन फरीदी के पास से कोई ऐसी चीज़ बर-आमद (बरामद) न हुई जिस से उन को खतरा होता—
फरीदी आराम कुर्सी पर बैठ गया.... और कुछ देर बाद बोला— "हाँ.... कहो.... अब क्या कहते हो?"
"कुछ नहीं— अभी तुम ने फिंच के सिलसिले में मुझ पर तंज़ (व्यंग्य) किया था— मैं सोच रहा हूँ कि तुम्हें इस वक्त तक ज़िंदा रखा जाए जब तक कि तुम फिंच का अंजाम अपनी आँखों से न देख लो—"
"मगर डॉक्टर ड्रेड मैं अब ज़िंदा नहीं रहना चाहता—"

"क्यों....?"

"बस यूँही— दिल नहीं चाहता— ऐसी शिकस्त के बाद कौन ज़िंदा रहना पसंद करेगा जैसी इस वक्त मुझे नसीब हुई है—"

नक़ाबपोश हंसने लगा लेकिन फरीदी के चेहरे पर बदस्तूर (लगातार) मायूसी नज़र आती रही—

"नहीं....!" नक़ाबपोश बोला— "तुम्हें उस वक्त तक हमारी कैद में रहना पड़ेगा जब तक कि मैं फिंच को एक हक़ीर (तुच्छ) कीड़े की तरह मसल नहीं डालता—"

फरीदी ने जेब में हाथ डाल कर अपनी जेबी घड़ी निकाली और उसे कान से लगाता हुआ बोला — "ये कम-बख़्त भी आज ख़िलाफ़-ए-मामूल (नियम के विरुद्ध) बंद हो गई— क्या सचमुच ये मेरी ज़िंदगी की आखिरी रात है—"

फरीदी उस में चाबी देने लगा फिर डॉक्टर ड्रेड से बोला— "क्या वक्त हुआ है?"

नक़ाबपोश ने अपनी कलाई की घड़ी देखते हुए कहा— "ढाई—"

"शुक्रिया—" फरीदी अपनी घड़ी की सुइयों को हरकत देता हुआ बोला— "मगर दोस्त ड्रेड ये पागल आदमी कौन था— मैं इस में बहुत शिद्दत से दिलचस्पी ले रहा हूँ—"

"सोने की चिड़िया—" नक़ाबपोश ने कहकहा लगाया— "बस इस से ज़्यादा और कुछ नहीं बताया जा सकता—"

333

"आदमी के खून की हर बूंद से एक तोला सोना बनाता हूँ।"

"तुम वाकई बहुत बाकमाल आदमी हो— बहुत ज़्यादा मगर यह हक़ीक़त है कि एक हक़ीर से कीड़े फिंच ने तुम्हारी ज़िंदगी तल्ख़ कर रखी है— तुम दूसरों को ब्लैकमेल कर के रुपया ऐंठते हो और वह तुम्हें ब्लैकमेल कर के उस में हिस्सा लगा लेता है

— "

"शेर का झूठा गीदड़ ही खाते हैं—" नक़ाबपोश ने अपने शानों को लापरवाही से जुम्बिश दी।

"हाँ भाई इस हक़ीक़त से भी इनकार नहीं किया जा सकता—" फ़रीदी उसे तहसीन आमेज़ नज़रों से देखता हुआ बोला— "तुम आदमियों के साथ ही साथ अल्फ़ाज़ के भी शिकारी हो—"

"हाँ....!" नक़ाबपोश ने सर हिला कर कहा। फिर अपने आदमियों से बोला— "इन दोनों को क़ैद कर दो—"

"क्या यहीं क़ैद करोगे—" फ़रीदी ने हैरत से कहा। "क़तई.... लेकिन—" वह मज़ाक़ उड़ाने वाले अंदाज़ में बोला— "क़ैद तो ज़हनी होगी जिस्मानी तौर पर तुम बिल्कुल आज़ाद होगे— बाहर क़ुफ़्ल नहीं डाला जाएगा— तुम बाहर जा सकोगे लेकिन वापसी यहीं होगी—"

"ओह....!" फ़रीदी ने हैरत से कहा— "मैं बिल्कुल नहीं समझा डॉक्टर ड्रेड—"

"तुम दोनों को एक ख़ास क़िस्म के इंजेक्शन दिये जाएँगे और तुम अपनी पिछली ज़िंदगी के मुताल्लिक सब कुछ भूल जाओगे—"

"बहुत दिलचस्प—" फ़रीदी अपनी जेबी घड़ी की तरफ देखता हुआ बोला फिर यक-ब-यक खड़े होकर उसने घड़ी छत की तरफ उछाल दी और क़ब्ल इसके कि वह लोग संभलते एक ज़ोरदार धमाका हुआ और तेज़ क़िस्म की रोशनी से उनकी आँखें चुंधिया गईं। हमीद चीख़ मार कर उठ बैठा— शायद उसका नशा हिरन हो गया था। चारों नक़ाबपोश बे-हिस-ओ-हरकत हो गए थे और कमरा जहन्नम का नमूना बनता जा रहा था— ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वह किसी नज़दीक आने वाली आग की लपटों में घिर गया हो—

"हाँ डॉक्टर ड्रेड....!" फ़रीदी ने हल्का सा क़हक़हा लगाया— "अब आओ— दो-दो हाथ हो जाएँ— तुम्हारे शोअदे सारी दुनिया में मशहूर हैं— लेकिन क्या इसका जवाब पेश कर सकोगे?"

गर्मी की शिद्दत से परेशान होकर वह चारों अपने कपड़े नोचने लगे और ज़रा ही सी देर में उनके जिस्मों पर ज़ेर-जामों के अलावा और कुछ न रह गया—

उनकी निगाहें भी पथरा सी गई थीं और वह मुँह फाड़े हुए थे लेकिन इसके बरख़िलाफ़ फ़रीदी और हमीद पर इस गर्मी का कोई असर नहीं मालूम होता था—

हमीद मसहरी से उठ कर फ़रीदी के पास आ खड़ा हुआ और उन चारों को आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगा।

334

"यह रायबहादुर शेखर की कोठी वाले धुएँ का जवाब है डॉक्टर ड्रेड—" फ़रीदी ने संजीदगी से कहा।

"हाइँ! यह डॉक्टर ड्रेड है—" हमीद आँखें मल मल कर उन नीम बरहना (अर्धनग्न) आदमियों को घूरता हुआ बोला।

"हाँ.... यह डॉक्टर ड्रेड है—" फ़रीदी ने एक आदमी की तरफ इशारा कर के कहा।

"अरे तो फिर.... बाँध लो ना.... खड़े खड़े क्या कर रहे हैं हम—"

"नहीं....!" फ़रीदी ने सर्द लहजे में कहा— "ड्रेड को अपनी सलाहियतों पर बड़ा ग़ुरूर है। उसने अपनी दानिस्त (जान-बूझकर) में हमें ढील दे रखी थी। उसका कहना है कि वह अपने लिये दीदा-ओ-दानिस्ता (जान-बूझकर) ख़तरात पैदा कर के उनमें से सही-ओ-सलामत निकल जाने को तफ़रीह (मनोरंजन) समझता है— मेरी सिंगलटन वाला जाल हमें फँसाने ही के लिये उसने बिछाया था.... लिहाजा.... हमीद साहब फ़िलहाल उसे बाँध लेने की ज़रूरत नहीं है—"

"कमाल करते हैं आप भी—"

लेकिन फ़रीदी हमीद की तरफ तवज्जो दिये बग़ैर डॉक्टर ड्रेड से बोला— "क्या अब तुम्हारे जिस्म में इतनी सकत रह गई है कि हम पर हमला कर सको—"

डॉक्टर ड्रेड कुछ न बोला।

"इतनी सकत न होगी— इसलिये मैं तुम्हें इस हाल में गिरफ़्तार नहीं कर सकता—"

"ऐ जनाब.... ऐ जनाब—" हमीद दोनों हाथ उठा कर चीख़ा— "आप किसी जासूसी नावल के हीरो नहीं हैं, होश में आइये—"

"मैं होश में हूँ—" फ़रीदी ने अपने शाने को जुम्बिश (हरकत) दे कर कहा— "अगर तुम बे-होश न होते तो मैं यह शोअदा ज़ाया किये बग़ैर ही डॉक्टर ड्रेड पर हाथ डाल सकता था— मगर उसका एक शोअदा मुझ पर उधार भी तो था—"

"मैं शायद अब भी नशे में हूँ—" हमीद ने बड़बड़ा कर अपने बाज़ू में चुटकी ली और "सी" कर के रह गया— उसे शायद अपने कानों पर यक़ीन नहीं आ रहा था— यक़ीन भी कैसे

□□□— □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□

"□□ □□□ □□□□ □□□□□□—" □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□

"□□ □□□□—" □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□

"□□□.... □□□—" □□□□ □□□ □□□□□ □□□□-□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□— "□□□□

335

"□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□?"

"□□ □□....!" □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□

□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□— "□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□"

□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□

□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□— "□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□— □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□—"

"□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□?" □□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□□ □□□ □□□□□....!" □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□

"□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□—"

"□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□?"

"□□□□ □□ □□□ □□□□— □□ □□ □□□□□□□— □□ □□□□!"

"□□□ □□ □□—" □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ (Locked) □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□

"□□ □□□□ □□□□ □□ □□?"

"□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□—" □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□

"आप ने इतने बड़े मुजरिम को छोड़ दिया—"
"घास तो नहीं खा गये हो?"
"क्या मतलब....?"
"वह डॉक्टर ड्रेड नहीं था— जिस तरह वह लोग मुझे मरऊब (आतंकित) करने की कोशिश कर रहे हैं इसी तरह अगर मैं भी.... हमीद साहब मैं भी आदमी हूँ— और दुनिया का हर आदमी दूसरे पर अपनी बरतरी (श्रेष्ठता) और जिताना चाहता है—"
"लेकिन आप किसी ऐसे आदमी को क्या कहेंगे जो मौक़े से फ़ायदा न उठाए—" "अहमक़....!"

336
"इस मामले में अपने मुताल्लिक क्या ख्याल है?"
"मैं भी एक बहुत बड़ा अहमक हूँ— यह हिमाक़त नहीं तो और क्या है कि मैं ने उन्हें एक शोअदा दिखा कर चलता कर दिया— अगर तुम इसका तज़किरा दूसरों से करो तो वह इसे लतीफ़ा कहेंगे।"
"ख़ुदा के लिये मुझे बताइये— क्या आप ने पी थी?"
"नहीं फ़र्ज़न्द.... मैं कभी नहीं पीता—"
"फिर मुझे आपके सही-उद-दिमाग़ होने पर शुबहा है—"
"मैं नहीं कहता कि तुम अपना शुबहा दूर कर दो—"
वह कार में बैठ गये और कार चल पड़ी।
"लेकिन वह बे-हिस-ओ-हरकत क्यों हो गये थे और वह धमाका कैसा था?" हमीद ने पूछा। "एक शोअदा जो अर्से से जेब में पड़ा हुआ था— इसी तवक़्क़ो पर कि कभी न कभी डॉक्टर ड्रेड या उसके ख़ास आदमियों से ज़रूर मुलाकात होगी—"
"कैसा शोअदा....?"
"तेल मालिश वाला शोअदा—"
"मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इस वक्त कर्नल फ़रीदी से गुफ्तगू कर रहा हूँ या ग्रैंडियल अहमक क़ासिम से—"

फ़रीदी ने हल्का सा क़हक़हा लगाया और बोला— "इसी तेल मालिश की वजह से तुम अपने पैरों पर खड़े रहे थे— वरना उन्हें लोगों जैसा हश्र तुम्हारा भी होता—" "क्या मतलब....?" हमीद चौंक कर बोला।
"मतलब पूछने का जुनून हो गया है तुम्हें—"
"इसके अलावा भी कई किस्म के जुनुनों का शिकार हूँ— लेकिन अब आख़िरी जुनून बाक़ी रह गया है— वह यह कि किसी दिन आप को शूट करने के बाद अपने भी गोली मार लूँ

— "

"नहीं तुम पहले खुद को गोली मार लो— अगर मैंने ज़रूरत समझी तो उसके बाद तुम से इस्तदुआ करूँगा कि अब मुझे भी गोली मार दो— डियोट.... यह तो बताओ कि मैं रोज़ाना तुम्हारे जिस्म में एक खास किस्म के तेल की मालिश क्यों कराता था?"
"ओह.... ओह.... उसके मुताल्लिक तो मैंने फ़र्ज़ कर लिया था कि अभी हाल ही में ज़च्चगी से फारिग हुआ हूँ।"

337
"वह उसी मालिश का असर था कि तुम्हारे आज़ा-ए-रईसा (महत्वपूर्ण अंग) इस शोअदे (साजिश) की शिद्दत से बेकार नहीं हुए।"
"मेरे खुदा....!" हमीद हैरत से आँखें फाड़ कर बोला— "आप ने इतने दिन पहले से इस शोअदे की तैयारी की थी।"
"फ़िक्र न करो— आज कल दो चार शोअदे हर वक़्त जेब में पड़े रहते हैं— डॉक्टर ड्रेड से मुकाबला है ना—"
"मगर यह शोअदा कैसा था?"
"जीबी घड़ी की साख़्त का एक टाइम बम जिस में एक मख़सूस (विशेष) क़िस्म का मादा था—" "यह आपकी लेबोरेटरी किसी न किसी दिन ज़वाल (पतन) ज़रूर लाएगी।"
"जिस दिन वह ज़वाल लाई हम दोनों भी अफ़सोस करने के लिए ज़िंदा नहीं होंगे—" "मुआफ़ कीजियेगा— इस वक़्त आपने बिल्कुल शाको उर्फ बहराम का बेटा वाली हरकत की है—"
"बाज़ हक़ीक़त, अफ़साने से ज़्यादा दिलचस्प होते हैं—"

कुछ देर ख़ामोशी रही फिर फरीदी ही बोला— "मेरी सिंगलटन वाले मामले पर हमें गौर करना पड़ेगा— मगर खैर छोड़ो डॉक्टर ड्रेड के शोअदों का जवाब भी तो होना ही चाहिये था—"
"लेकिन आप ने उन लोगों को छोड़ कर अच्छा नहीं किया—"
"ओह.... फिर डॉक्टर ड्रेड तक इस वाकये की खबर कौन पहुँचाता—"
"मगर ठहरिये.... ज़रा ये तो बताइये कि बेगम इरशाद के यहाँ अनवर के किस ने सुई चुभोई थी—"
"खुद बेगम इरशाद ने—" फरीदी ने जवाब दिया— " "और वही एक ऐसा वाकया था जिस की बिना पर मेरी सुई चुभोई थी—
"क्या आप बेगम इरशाद से जवाब नहीं तलब कर सकते?"
"ज़रूर करूँगा— यह भी बहुत ज़रूरी है और इसी वक़्त.... अभी—"
"आप की कोई बात मेरी समझ में नहीं आती—"
"यह मेरी खुश किस्मती है— जिस दिन मेरी बातें तुम्हारी समझ में आ गईं तुम बराबरी का दावा करने लगोगे—"
"हम बेगम इरशाद के बारे में क्या नहीं जानते—"
"क्या तुम जानते हो कि डॉक्टर ड्रेड उसे क्यों ब्लैक मेल कर रहा है?"
"नहीं....!"

338
"अच्छा मैं समझा—" फ़रीदी ने तंज़िया (व्यंग्यपूर्ण) लहजे में कहा— "तुम यह जानते हो कि शाहिना उस की लड़की है जो जवान है, हसीन है और अभी तक उसकी शादी नहीं हुई। पाँच सौ सिगरेट पीती है और फ़खरिया कहती है कि पाँच सौ पचपन शौहर हर वक़्त उसके बैग में पड़े रहते हैं—"
"लड़की अजीब है— इसमें शक नहीं।" हमीद सर हिला कर बोला।
"तुम गधे हो.... अब मुझे सोचने दो।"
"सोचिये....!" हमीद ने लापरवाही से कहा और कार की पुश्त से टिक गया।

"मगर नहीं— पहले यह बताओ कि तुम ने शराब क्यों पी थी?"
"अगर आप पेश करें तो मैं मिट्टी का तेल भी पी सकता हूँ— शराब क्या हक़ीक़त है

— "

"तुम मैं अभी तक इतना भी सलीक़ा नहीं पैदा हो सका कि किसी सिचुएशन को समझ सको—" "मैं ने जब भी किसी सिचुएशन को समझने की कोशिश की है मेरा हाज़मा ठीक नहीं रहा

— "

"बस अब ख़ामोश रहो।"
हमीद फिर पुश्तगाह से टिक कर ऊंघने लगा। कुछ देर बाद उनकी कार इरशाद मंज़िल के फाटक पर रुक गई लेकिन ठीक उसी वक़्त एक घोड़ा गाड़ी भी वहीं आ रुकी। फ़रीदी ने अपनी कार बैक की ताकि घोड़ा अंदर जा सके मगर दफ़अतन कोचवान ने घोड़ों को दूसरी तरफ सड़क पर मोड़ दिया। ऐसी मौक़े पर फ़रीदी से सुस्ती की तवक़्क़ो (उम्मीद) नहीं की जा सकती थी— वह कार से उतरा और झपट कर घोड़े की रास पकड़ ली।
"कौन है?" कोचवान की सीट से एक खौफ़ज़दा सी आवाज़ आई और यह किसी औरत ही की आवाज़ थी।
"ओहो.... बेगम इरशाद....!" फ़रीदी ने खुश होकर कहा— "यह बड़ा अच्छा हुआ कि बाहर ही आपसे मुलाकात हो गई— वरना ख़्वाह-मख़्वाह अंदर इत्तिला भिजवाने की ज़हमत करनी पड़ती—"
"आप कौन हैं?"
"महकमा सुराग़रसानी का कर्नल फ़रीदी।"
"ओह.... इतनी रात गये.... फरमाइये?"
"मुझे नहीं मालूम था कि आपसे इस हाल में मुलाकात होगी।"
"आप मुदआ (उद्देश्य) बयान कीजिये— आपको मेरे हालात से कोई सरोकार नहीं होना चाहिये—"
"एक साहब मिस्टर जोज़फ़ पीटर ने आपकी शिकायत की है—"
"लेकिन मैं किसी जोज़फ़ पीटर को नहीं जानती—"
"वह आपकी साहबज़ादी की सालगिरह के मौक़े पर मदऊ (आमंत्रित) थे— आपने किसी बात पर ख़फ़ा होकर उनके..."

339

कपड़े उतरवा लिये और उन्हें इसी हालत में तीन पंखों के दरम्यान बैठने पर मजबूर किया हालाँकि आप जानती हैं कि इस मौसम में वह निमोनिया के शिकार भी हो सकते थे।"

ऐसा मालूम होता था जैसे बेगम इरशाद को साँप सूंघ गया हो— वह कुछ न बोली।

ताक़ुब

"जवाब दीजिये! मोहतरमा! मैं आप ही से मुख़ातिब हूँ—" फ़रीदी ने कुछ देर बाद कहा।

"समझ में नहीं आता कि क्या जवाब दूँ—" बेगम इरशाद ने मुज़महिल (कमज़ोर) आवाज़ में कहा— "यह हक़ीक़त है कि मैं ने सज़ा के तौर पर एक आदमी के कपड़े उतरवा लिये थे लेकिन क्या क़ानून उसे जुर्म क़रार देगा?"

"सज़ा देने का हक़ सिर्फ़ अदालत-हाए-आलिया को पहुँचता है— किसी भी मुल्क के शहरीयों से यह तवक़्क़ो (उम्मीद) नहीं की जा सकती कि वह क़ानून को अपने हाथ में लेंगे—"

"वह जोज़फ़ पीटर नहीं बल्कि नियो स्टार का क्राइम रिपोर्टर अनवर था—"

"नहीं....!" फ़रीदी के लहजे में हैरत थी।

"यक़ीन कीजिये— वह ख़्वाह-मख़्वाह मेरी बच्ची के पीछे पड़ गया है— ज़रा ठहरिये— मुझे याद करने दीजिये— मुझे नाम नहीं याद आ रहा है बहरहाल पिछले दिनों एक रात आलखू में आप ही के महकमे के एक अफ़सर के सामने उसे तंबीह (चेतावनी) की थी— अफ़सर का नाम मुझे याद नहीं आ रहा.... अनवर मेरी लड़की शाहिना को नशे की आदत डाल रहा है— उस रात भी ख़ुफ़िया पुलिस के अफ़सर ने उसकी जेब से हिरोइन बरामद की थी— फिर हो सकता है बात रिश्वत पर ख़त्म हो गई हो— बहरहाल मुझे उससे कोई हमदर्दी नहीं— मैं ने अनवर को तंबीह की थी कि वह शाहिना से न मिला करे— लेकिन इसके बावजूद भी वह भेष बदल कर कोठी में आ घुसा— आप बताइये— आप क्या करते ऐसी किसी मौक़े पर—"

"मैं उसे पुलिस के हवाले कर देता—"

"हाँ मुझसे ग़लती ज़रूर हुई—"

"मगर बेगम साहिबा—" फ़रीदी ने मुतय्यराना (हैरानी भरे) अंदाज़ में कहा— "मेरे पास ऐसे शाहिद (गवाह) मौजूद हैं जिन्होंने खाने की मेज़ पर जोज़फ़ पीटर के नाम का कार्ड भी देखा था—"

340
"वो गवाह आप को अनवर ही के तवस्सुल से मिले होंगे—" बेगम इरशाद ने लापरवाही से जवाब दिया।
"कुदरती बात है— गवाह हमेशा मुद्दई ही की तरफ से पेश होते हैं—"
"कुछ भी हो— वो गवाह झूठे हैं—"
"इसे तो अदालत ही में चैलेंज कीजिएगा—"
"अदालत....!" बेगम इरशाद की आवाज़ फिर काँप गई और कुछ देर के लिए फिर सकूत तारी हो गया।
"जी हाँ अदालत—" फरीदी आहिस्ता से बोला— "वो आप पर इज़ाला-ए-हैसियत-ए-उर्फी का दावा करने जा रहा है— उसका कहना है कि आपकी बेटी ने उसे अपनी सालगिरह की तकरीब में शिरकत पर मजबूर किया था— उसने कहा था.... आओ ज़रूर ख्वाह भेस ही बदल कर आना पड़े—"

"यह सरासर गलत है—"
"यह भी आप अदालत ही में साबित कीजिएगा—"
"फिर आप किस लिए तशरीफ लाए हैं?" बेगम इरशाद का लहजा बहुत तलख था।
"मैं इसलिए हाज़िर हुआ हूँ कि एक दूसरा मामला भी है— आपने अखबारों में पढ़ा होगा कि मेरे असिस्टेंट कैप्टन हमीद को मय-पोल में एक अजीब वाकया पेश आया था— उसने अपने बाज़ू में सुई की चुभन महसूस की और कुछ देर के लिए उसका जिस्म बिल्कुल बेकार हो गया—"
"मेरा ख्याल है कि मैंने यह खबर देखी थी—"
"वैसा ही वाकया आपकी कोठी में अनवर को भी पेश आया था— उसने अपने बाज़ू में सुई की चुभन महसूस की और कुछ देर के लिए उसका जिस्म बिल्कुल बेकार हो गया—"
"मेरे खुदा— वो हर ज़ाविये से एक नई चाल चल रहा है—" बेगम इरशाद बड़बड़ाईं।
"मैं नहीं समझा—"
"वो चाहता है कि किसी न किसी सूरत से मुझे ज़क पहुँचाए— हाँ उसने और क्या कहा था?"
"उसने कहा था कि जब उसका जिस्म बे-हिस-ओ-हरकत हो गया तो आप उसे एक कमरे में उठवा ले गईं— वहाँ आपके मुलाज़मों ने उसके कपड़े उतार कर तीन पंखे खोल दिए और फिर हवा के इस तूफ़ान में उसकी खोई हुई कुवतें आहिस्ता-आहिस्ता वापस आने लगीं— इसके बाद वो बिल्कुल ठीक हो गया—"
"उफ़्फ़ोह—" बेगम इरशाद ने एक तवील सांस ले कर कहा— "किस-किस तरह बातें बनाई हैं उस सूअर ने— वो किसी न किसी तरह मुझे कानूनी गिरफ्त में लेने की कोशिश कर रहा है— यकीन कीजिए—"

341
"कर्नल साहब! बात सिर्फ इतनी ही है कि मैंने गुस्से में उसके कपड़े उतरवा लिए थे और बस! इसका एतराफ़ है लेकिन साथ ही साथ यह भी कहूँगी कि मेरी जगह जो भी होता यही करता—"
"तो दूसरा वाकया गलत है?" फरीदी ने पूछा।
"क़तई गलत है जनाब— आप खुद ख्याल कीजिए— मगर उसकी ज़हानत की दाद देनी पड़ेगी कि उसने कितनी एहतियात से मेरे खिलाफ यह प्लाट गढ़ा है— उफ़ मेरे खुदा— मेरी तो अक्ल भी वहाँ न पहुँचती— उस खबर में था कि उन साहब की हालत ठंडी हवा लगने से बेहतर हो गई थी लिहाजा इस खबीस ने तीन पंखों का इज़ाफ़ा कर दिया— मैं फिर कहती हूँ कि कपड़े मैंने बिला-शुबा उतरवाए थे मगर यह प्लाट खुदा की पनाह....!"

"तो यह गलत है?"
"क़तई गलत है—"
"शुक्रिया! मोहतरमा मैंने आपको बहुत तकलीफ दी—" फरीदी ने कहा और घोड़े की रास छोड़कर गाड़ी के पास से हट आया— फिर कार में बैठते हुए उसकी टॉर्च की रोशनी गाड़ी पर पड़ी— बेगम इरशाद सर से पैर तक स्याह लबादे में लिपटी हुई कोचवान की सीट पर मौजूद थी— टॉर्च बुझ गई— फिर फरीदी ने इंजन स्टार्ट करके कार बैक की और कुछ देर बाद हमीद ने कहा— "उस वक्त की इस गाड़ी का क्या मकसद था?"
"बड़ी घाघ औरत है—"
"है तो—"
"लेकिन आज हमने भी उसे इस हाल में देख लिया— आखिर वह इस तरह क्यों करती फिरती है—"
"इस पर कानून कोई पाबंदी नहीं आयद कर सकता—"
"शाहिना उसके लिए बहुत परेशान मालूम होती है—"
फरीदी कुछ न बोला— कार सड़क पर दौड़ती रही— दफ़अतन हमीद ने कहा— "अब हम कहाँ जा रहे हैं?"
"वहीं जहाँ से यह सफर शुरू हुआ था— अब वह इस काबिल हुए होंगे कि अपनी जगह से जुम्बिश कर सकें—"
"तो आप उन्हें छोड़ ही क्यों आए थे?"
"इतनी देर में एक दूसरा काम भी हो गया—"
हमीद ने बेबसी से एक ठंडी सांस ली और सीट की पुश्त से टिक गया।

342

चारों की हालत अबतर थी— कुछ देर वो खड़े रहे फिर बे-जान होकर फर्श पर गिर गए— उनकी ज़बानें निकली पड़ी थीं और वो चौपायों की तरह हांफ रहे थे—

कुछ देर बाद उनमें से एक बदक़्त तमाम घिसटता हुआ दरवाज़े तक पहुँच सका— उसका एक हाथ हैंडल की तरफ उठा और थोड़ी देर तक उठा ही रह गया— ऐसा मालूम हो रहा था जैसे हाथ में तवाज़न की हस ही न रह गई हो— वो खला में झूलता रहा— कई बार वो हैंडल से भी टकराया लेकिन उसे गिरफ्त में न ले सका—

आधा घंटा गुज़र गया— कमरे की फ़ज़ा में अचानक पैदा हो जाने वाली हद्दत ख़त्म हो गई थी और उनके नीम-बरहना जिस्मों पर सर्दी की लहरें असर अंदाज़ होने लगी थीं लेकिन वो अब भी इस काबिल नहीं थे कि उठकर कपड़े पहन सकते—

"अब उठने की कोशिश करो—" उनमें से एक बोला—

"मुश्किल.... नहीं.... नहीं.... ओड.... ड....!" दूसरे ने कुछ कहना चाहा लेकिन ज़बान ऐंठ गई—

और फिर वही पहले सा सकूत तारी हो गया— दरवाज़े के करीब पड़ा हुआ आदमी शायद बक़िया तीन आदमियों से ज़्यादा ताक़तवर था क्योंकि वो दरवाज़े का हैंडल पकड़कर उठने की कोशिश कर रहा था—

वो उठ गया और थोड़ी देर तक दीवार से हाथ टिके खड़ा रहा— फिर इस तरह दूसरों की तरफ मुड़ा जैसे वो उन्हें भी इसी हालत में देखना चाहता हो—

फिर वो दीवार पर हाथ रखे ही रखे उधर बढ़ने लगा जहाँ उनके कपड़े पड़े हुए थे—

वो कपड़े पहनने में कामयाब हो गया और दूसरे उसे इस अंदाज़ में देखते रहे जैसे रहम की भीक मांग रहे हों—

"हमें भी सर्दी लग रही है—" एक ने कमज़ोर सी आवाज़ में कहा—

"ठहरो....!" वह आदमी बोला— "मैं तुम सबको कपड़े पहनाऊँगा—"

और इस काम में तक़रीबन दस मिनट सर्फ़ हुए— वो फुरती से इस काम को अंजाम देने के काबिल अब भी नहीं था—

"मैं महसूस कर रहा हूँ कि कपड़े पहन लेने के बाद से तवानाई वापस आ रही है—" उसने कहा—

343

दूसरों की तरफ देख कर कहा और फिर एक कुर्सी पर बैठ कर उन्हें तश्वीशनाक नज़रों से देखने लगा।

"समझ में नहीं आता कि वो दोनों कैसे अपने पैरों पर चल कर गए होंगे—" उसने सर उठा कर कहा।

उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया— उसके अंदाज़ से साफ़ ज़ाहिर हो रहा था कि वो इस मसले पर गुफ्तगू नहीं करना चाहता— उसकी पेशानी पर शिकनें थीं और आँखों से कीना-तौज़ी झलक रही थी— होंठों के गोशे नफ़रत-आमेज़ अंदाज़ में खिंच कर नीचे झुक गए थे और ऊपरी होंठ ने कौस की शक्ल इख्तियार कर ली थी—
कुछ देर बाद उसने कहा— "यह खेल मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है— मैं इस का कायल हूँ कि जब दुश्मन सामने आए उस से आग की ज़बान से गुफ्तगू करनी चाहिए—"
"मगर हम क्या करें—" दूसरा बोला— "जो कुछ कहा गया था उसी के मुताबिक़ अमल कर रहे थे— मगर वो चकमा दे गए— मैं सोच भी नहीं सकता था कि उसकी जेबी घड़ी ऐसा वक्त भी हम पर लाएगी—"
"इत्तेफाक....!" वह आदमी हाथ उठा कर बोला— "खैर अब इस किस्से को दफ़न करो— सवाल यह है कि अब हमें क्या करना चाहिए—"
"क्यों....?"
"बहुत मामूली सी बात है— क्या तुम यकीन कर सकते हो कि वो हक़ीक़तन हमें इतनी लापरवाही से छोड़ कर गया होगा—"
"यकीनन उसके आदमी नीचे मौजूद होंगे—" दूसरा बोला—
"फिर ऐसी सूरत में हमें क्या करना चाहिए?"
"उन रिवॉल्वरों को बाहर फेंक दो— वो हमारे खिलाफ कोई सबूत फ़राहम न कर सकेगा— हम पासपोर्ट पर यहाँ आए हैं और हमारे मुल्क का सिफ़ारत-खाना हमारा ज़िम्मेदार है

— "

"ठीक है— मगर यहाँ तो कोई काबिल-ए-गिरफ्त चीज़ मौजूद नहीं है—"
"कुछ भी नहीं—"
"तब तो आओ हम बे-खतर चलेंगे—"
"लेकिन ठहरो— गो कि यह इमारत मेरे नाम से हासिल की गई थी लेकिन शायद ही यहाँ किसी ने मेरी शकल देखी हो— मेरी स्मगलिंग यहाँ आती रही है—"
"उस की फ़िक्र न करो— मेरी भी सफ़ेद फाम ही है—"

344
"अगर हम यहीं ठहरें तो क्या मज़ायका है—"
"तुम घास खा गए हो शायद— हमें हर हाल में इस वाकये की खबर इसी वक्त पहुँचानी है — वरना डॉक्टर कच्चा ही चबा जाएगा—"
इन अल्फाज़ के सुनते ही फिर किसी ने कोई नई तजवीज़ नहीं पेश की— लेकिन यह सवाल अब उनके ज़हनों को मथ रहा था कि यह इत्तला पहुँचायी किस तरह जाएगी—
"मुझे यकीन है—" तवाना आदमी बोला— "कि इस वक्त तक इमारत का मुहासरा हो चुका होगा और यह भी समझ रखो कि फरीदी हमारे फिकरे में नहीं आया— वह हम में से किसी को भी डॉक्टर समझने पर तैयार नहीं— लिहाजा इस तरह चुपचाप चले जाने का मकसद यही हो सकता है कि वह हमारा तआकुब करके डॉक्टर तक पहुँचने का इरादा रखता है—"
एक बार फिर कमरे पर सकूत तारी हो गया—
दफ़अतन एक आदमी ने उठकर कहा— "मैं इत्तला पहुँचाऊँगा— तुम तीनों यहीं ठहरो—" "किस तरह?"
"बस आओ मेरे साथ—"
वह चारों उस कमरे में आए जिसका रुख सड़क की जानिब था— यहाँ एक बहुत बड़ी खिड़की थी जिसमें धुंधले शीशे लगे हुए थे— वह आदमी जिसने कोई राह निकालने का ख्याल जाहिर किया था अंधेरे में ही कुर्सियां खिसकाने लगा—
"खबरदार.... स्विच ऑन मत करना—" उसने आहिस्ता से कहा—
कोई कुछ न बोला— कुछ देर बाद उसने आहिस्ता से कहा— "एक आदमी यहाँ आए— इधर आओ मेरा हाथ उसे पकड़वा दो—"
तीन हाथ बैक वक्त उसके हाथ से मस हुए— लेकिन उसने सिर्फ एक को अपने करीब खींच लिया और बोला— "यहाँ बैठ जाओ—"
इसी तरह उसने तीनों आदमियों को यके बाद दीगरे कुर्सियों पर बिठा दिया—
और फिर जब कमरे में रोशनी हुई तो उन्होंने देखा कि वह आदमी ज़मीन पर चित पड़ा हुआ है— चौथी कुर्सी पर एक तकिया रखा हुआ था और टिके पर एक बैज़वी शक्ल का गुलदान उलट कर रख दिया गया था—
"यह क्या पागलपन है—" एक ने हैरत से पूछा—
ज़मीन पर पड़े हुए आदमी ने बड़ी खिड़की की तरफ इशारा करके कहा— "चार बैठे हैं—"

345
"उन के साए—"

हकीकतन खिड़की पर चार साए नज़र आ रहे थे— तकिये पर रखा हुआ गुलदान भी सर और शानों का सा शबा पेश कर रहा था—
"अब मैं.... दूसरी तरफ से नीचे उतर जाऊँगा—" ज़मीन पर लेटे हुए आदमी ने आहिस्ता से कहा और रेंगता हुआ दरवाज़े से निकल गया—

****

"अरे सुबह होने वाली है जनाब! क्या आप ऊंघ रहे हैं?" हमीद भर्राई हुई आवाज़ में बड़बड़ाया— लेकिन दूसरे ही लम्हे में फरीदी का हाथ हमीद के बाज़ू पर पड़ा और वह उसे दबाता हुआ बोला—
"वाह भई ज़रा देखना तो—"
वह उस बड़ी खिड़की की तरफ इशारा कर रहा था जिसके धुंधले शीशों पर परछाइयां नज़र आ रही थीं—
"वह तो निहायत इत्मीनान से बैठे हुए हैं—" हमीद बड़बड़ाया—
"ओह.... हमीद.... ज़रा देखना— क्या बाएं गोशे वाली परछाईं.... किसी आदमी की नहीं है — तीन परछाइयां कभी-कभी मुतहर्रक सी नज़र आती हैं— मगर चौथी.... आओ—"
वह उसका हाथ पकड़ कर खींचता हुआ बोला—
"इस शोबदे ने उनकी अक्लों पर पत्थर डाल दिए हैं— ये रूस हैं हमीद.... और इसीलिए उनसे ये हिमाकत सरज़द हुई है— इमारत में फ़ोन नहीं है लिहाजा यहीं बैठे-बैठे ड्रेड को असल वाकये की इत्तला न दे सकेंगे—"
वह इमारत की पुश्त पर आ गए—
"आहा....!" फरीदी ने फिर उसका बाज़ू दबाया— "मेरा ख्याल गलत नहीं था— वह देखो—" तीसरी मंज़िल की खिड़की से एक स्याह धब्बा सा बाहर रेंग आया था और अब वह फ़सील पर चलता हुआ पाइप की तरफ बढ़ रहा था—
"आप अगर सड़क किनारे बैठकर लोगों को उनकी किस्मत का हाल बताने लगें तब भी आप इतने ही मालदार रहेंगे—"
वह उसे पाइप के सहारे नीचे उतरते देखते रहे— नीचे पहुँचते ही वह दम लिए बगैर बड़ी तेज़ी से सड़क की तरफ मुड़ गया— वह दोनों भी बिल्कुल उसी अंदाज़ में आगे बढ़े

जैसे शब-गुज़ार आवारा गर्द हों— उनके फेल्ट हैट पेशानियों पर झुके हुए थे और ओवरकोटों के कॉलर कानों तक उठे हुए थे।—

346

"आहा.... पैदल नहीं जाएगा हमीद साहब.... जल्दी करो— वहाँ उस गली में मैंने एक कार पहले भी देखी थी— गालिबन ये लोग उसी पर आए थे—"
हमीद दौड़ता हुआ अपनी कार की तरफ चला गया— इतनी देर में वह कार स्टार्ट होकर चल भी पड़ी थी और फरीदी खड़ा बेबसी से अपने हाथ मल रहा था— हमीद से उसे इतनी फुर्ती की तोक्को नहीं थी कि वह वक्त ही पर कार वहाँ ले आएगा— लेकिन इस वक्त उसे भी मान लेना पड़ा कि हमीद बिल्कुल ही नाकारा नहीं है— अगली कार गली के आखिरी सिरे पर मुड़ ही रही थी कि उसकी लैंकिन उसके करीब पहुँच गई—
"सीधे चलो....!" फरीदी दरवाज़ा खोलकर हमीद के बराबर बैठते हुए बोला।
और फिर कुछ देर बाद वह अगली कार के रास्ते पर लग गए—
"मैं क्या करूँ— कुछ समझ में नहीं आता—" हमीद बड़बड़ा रहा था।
"क्या समझ में नहीं आता—"
"यह रात तो यूँ ही गई— क्या मैं दिन को सो सकूँगा?"
"क़तई सो सकोगे— मुझे कोई एतराज़ न होगा—"
"मगर क्या आपको यकीन है कि ये डॉक्टर ड्रेड ही के आदमी हैं— हो सकता है कि फिंच के आदमियों ने डॉक्टर ड्रेड के लिए कोई नई उलझन पैदा करने की कोशिश की हो—" "फिंच नहीं.... हरगिज़ नहीं— फिंच हमेशा कानून से कतराता रहता है— वह बहुत चालाक है— डॉक्टर ड्रेड की तरह अहमक नहीं है—"
"आप डॉक्टर ड्रेड को अहमक कह रहे हैं—"
"हाँ वह बिला-शुबा अहमक है— वह मुजरिम जो कानून पर अपनी बरतरी जताने की कोशिश करते हैं मैं उन्हें अहमक समझता हूँ— क्योंकि उनका इज़हार-ए-बरतरी ही उनके लिए फाँसी का फंदा बन जाता है— फिंच जैसे लोग उमूमन महफूज़ ही रहते हैं—"
"आख़िर ये लोग कानून पर अपनी बरतरी जताने की कोशिश ही क्यों करते हैं?" "फितरत.... इम्तियाज़ी खुसूसियात के हामिल होने का शौक़— जिस तरह आम आदमी किसी ख़ास मामले में शोहरत हासिल करने के मुतन्नी होते हैं इसी तरह बाज़ मुजरिम भी आम रफ़्तार से हटकर अपनी कोई इम्तियाज़ी खुसूसियात पेश करना चाहते हैं— आम

मुजरिमों में तो इतनी हिम्मत नहीं होती कि वह कानून के मुहाफिज़ों को चैलेंज कर सकें लेकिन बाज़ मुजरिम ऐसा भी करते हैं.... और डॉक्टर ड्रेड..."

347
तरह के मुजरिमों में से है और उसकी यह आदत ही एक दिन उसके अंजाम का ज़रिया बन जाएगी।"
"मगर यह आज तक न मालूम हो सका कि फिंच से उसका झगड़ा क्यों चल रहा है।"
"यह तो उसी वक्त मालूम हो सकेगा जब उन दोनों में से कोई हाथ आ जाए।" फरीदी ने कहा।
फिर वह दोनों ही खामोश हो गए— दोनों कारें आगे पीछे दौड़ती रहीं—
थोड़ी ही देर बाद अगली कार शहर की उस बस्ती में दाखिल हुई जहाँ गैर मुल्की सफ़ीरों की कोठियाँ थीं.... और फिर वह एक इमारत के सामने रुक गई और वह आदमी उतर कर कंपाउंड का फाटक खोलने लगा— फरीदी की कार आगे निकलती चली गई।
"क्या मतलब....?" हमीद उस वक्त बड़बड़ाया जब फरीदी की कार फिर उसी रास्ते पर मुड़ने लगी जिस पर वह यहाँ तक आए थे।
"कुछ नहीं अब घर चल कर सोएंगे।"
"मैं स्टीयरिंग छोड़कर बाहर छलांग लगा दूँगा—" हमीद झुंझला कर बोला।
"बिगड़ो नहीं फर्ज़न्द! क्या तुम यह चाहते थे कि हम भी उसके साथ ही इमारत में घुस पड़ते— यह एक गैर मुल्की सफ़ीर की कोठी है— डॉक्टर ड्रेड बड़ी मुश्किलों से गिरफ्त में आएगा—"
हमीद बुरा सा मुँह बना कर बोला— "कभी वह आपकी जेब में रखा रहता है और कभी मुश्किल से हाथ आता है— कभी आप फिंच के लिए रोते-चिंगाड़ते हैं— मेरी जवानी मुफ्त में बर्बाद हो रही है—"
फरीदी एक हल्का सा कहकहा लगा कर खामोश हो गया— इसका मतलब जो कुछ भी रहा हो।

नन्हा शैतान

उस आदमी ने कंपाउंड तय किया और बरामदे में पहुँच गया लेकिन वह इससे बे-खबर था कि उसका तआकुब हो रहा है— वह कुछ इतना ही बद-हवास था कि जब फरीदी की कार उसके करीब से आगे निकल गई थी तो उसने उसकी तरफ ध्यान तक नहीं दिया था— फिर उसे उस बे-आवाज़ मोटरसाइकिल का इल्म कब हो सकता था जो फरीदी की कार निकल जाने के बाद ठीक उसी की कार के करीब रुकी थी।
वह बे-तहाशा इमारत के अंदर दाखिल हुआ और राहदारी में रुक कर उस बटन को बार-बार दबाने लगा जिसके ऊपर एक नन्हा सा सुर्ख रंग का बल्ब रौशन था।

348
सामने वाला दरवाज़ा फ़ौरन ही खुला और एक आदमी ने उसे अंदर आने का इशारा किया— यह आदमी शायद जानता था कि उसे कहाँ जाना है क्योंकि वह किसी राहबर की मदद के बगैर ही मुख्तलिफ सिम्टों में मुड़ता रहा और फिर कुछ देर बाद वह ऊपरी मंज़िल के ज़ीने तय करता हुआ नज़र आया।

यह एक बड़ा कमरा था जहाँ रुक कर वह चारों तरफ मुतजस्सिसाना नज़रों से देखने लगा— इस कमरे में न तो किसी किस्म का फर्नीचर ही नज़र आ रहा था और न ही इसकी दीवारों ही सजाई गई थीं— फर्श पर अलबत्ता एक दबीज़ सा कालीन पड़ा हुआ था— कुछ देर बाद बाईं जानिब का एक दरवाज़ा खुला और एक दराज़-कद आदमी अंदर दाखिल हुआ— उसका चेहरा सुता हुआ था और होंठ पतले थे— आँखें बहुत चमकीली थीं।

"तुमने रेड सिग्नल क्यों दिया था?" उसने पुर-सुकून लहजे में पूछा।

उस आदमी ने हाफंते हुए पूरी दास्तान दोहरा दी और फिर बोला— "डॉक्टर.... अगर मैं यह तदबीर न करता तो यहाँ तक पहुँचना मुहाल हो जाता—"

"तदबीर....!" डॉक्टर के चेहरे पर एक तल्ख सी मुस्कराहट नज़र आई— वह चंद लम्हे उसे घूरता रहा फिर बोला— "क्या तुम मुझे यह इत्तला किसी पब्लिक टेलीफोन बूथ से नहीं दे सकते थे यहाँ दौड़े आने की क्या ज़रूरत थी?"

"मैंने.... सोचा.... सोचा....!" उसने कुछ कहना चाहा लेकिन सोचता ही रह गया।

"बको.... क्या बक रहे थे— क्या फरीदी अभी तक इतना ही अहमक साबित हुआ है कि तुम इस-साथ इस किस्म की कोई चाल चल सको—"

वह आदमी कुछ न बोला— डॉक्टर कहता रहा— "अगर तुम सुबह तक वहीं ठहरते तो क्या हर्ज था?"

"मम.... मैंने सोचा—"

"कुछ नहीं सोचा— तुम में सोचने का सलीका ही नहीं है— तुमने यह भी न सोचा कि वह इसी बिना पर तुम्हें हिरासत में ले सकता था कि तुम्हारे पास रिवॉल्वर थे—"

"अगर मुझसे गलती हुई तो मैं शर्मिंदा हूँ जनाब—"

"तुम बकवास कर रहे हो— अगर तुम लोगों को अपनी गलतियों पर शर्मिंदगी हो तो यह नहीं कभी न दोहराओ—"
वह कुछ न बोला— सर झुकाए खड़ा रहा— डॉक्टर ने कहा— "वह तुम्हें इसी लिए छोड़ कर चला गया था कि तुम्हारे ज़रिए मुझ तक पहुँच सके—"

"ओह....!" वह मजनूनाना अंदाज़ में अपनी पेशानी रगड़ने लगा।

"मुझे यकीन है कि वह तुम्हारा तआकुब करता हुआ यहाँ तक आया होगा—"

349
"फिर अब क्या होगा?"
"मुझे भी मशवरा दो कि यहाँ से अब निकल भागूँ।"
वह कुछ न बोला— डॉक्टर ने फिर कहा— "तुम लोग अपनी अक़्लें दुरुस्त कर लो वरना मुझे ही दुरुस्त करनी पड़ेंगी।"
"एक बार और माफ़ कीजिये जनाब—" वह गिड़गिड़ाया— "दरअसल इस गर्मी का असर अब भी मेरे ज़हन पर बाकी है—"
"मैं न जाने क्यों इतना रहम दिल हो गया हूँ—" डॉक्टर ने बुरा सा मुँह बना कर

कहा।
ठीक उसी वक्त एक खिड़की के पट दीवारों से टकराए और एक नन्हा सा आदमी अंदर कूद पड़ा। उसके दाहिने हाथ में रिवॉल्वर था— उसका चेहरा बिल्कुल स्याह था और होंठ सुर्ख। जिस्म पर स्याह लिबास और सीने पर सफ़ेद हुरूफ़ में तहरीर था— "शैतान 1/2

— "

"वाकई यह बहुत बुरा है—" वह गुनगुनाती हुई आवाज़ में बोला— "कि तुम इतने रहम दिल हो गए हो लेकिन मुझे देख कर बे-रहम होने की कोशिश न करना— आज बहुत दिनों के बाद मैं तुम्हें इतने करीब से देख रहा हूँ— लिहाज़ा अपने हाथ ऊपर उठा लो—" डॉक्टर के हाथ ऊपर उठ गए और दूसरे आदमी ने भी उसकी तक़लीद की।
"तुम्हारे आदमी सचमुच बिल्कुल गधे हो गए हैं— फरीदी ने तुम्हारी रिहाइश की जगह देख ली है या देख ही ली होगी मैं ने आज देख ली—"
"जाओ.... मेरा वक्त न बर्बाद करो—" डॉक्टर ड्रेड ने कुछ ऐसे अंदाज़ में कहा जैसे किसी मुअम्मर आदमी ने किसी बच्चे को मशवरा दिया हो— और उसने अपने हाथ भी नीचे गिरा दिए।
"यह तुम्हारी ज़िंदगी की आखिरी रात है डॉक्टर ड्रेड.... अपने हाथ ऊपर उठा लो—" नन्हे शैतान ने कहा।
डॉक्टर ड्रेड ने फिर हाथ ऊपर उठा दिए।
"मैं सर्कस का एक मस्खरा— आज तुम्हें इस तरह क़त्ल करूँगा कि सारी दुनिया हैरान रह जाएगी।"
"बकवास बंद करो—" डॉक्टर ड्रेड फर्श पर अपना दाहिना पैर पटक कर गरजा और एक रौशनदान से कुछ बुलबुलों सी रोशनी फूटने लगी लेकिन वह रोशनी सिर्फ छत तक महदूद रही और किसी ने भी उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया।

350
नन्हा शैतान कह रहा था— "बेकार है डॉक्टर! तुम मुझसे इतनी ज़्यादा बुलंदी पर वाकये हुए हो कि मुझ तक तुम्हारी यह गरज तक़रीबन एक हज़ार दो सौ बहत्तर साल में पहुँचेगी लेकिन उस यतीम लड़की की चीखें हर वक्त मेरे कानों में गूंजती रहती हैं जो सिर्फ तेरह साल की थी— तेरह साल की नन्ही सी जान.... जिसे तुमने बड़ी ही बे- दर्दी से अपनी हवस की भेंट चढ़ा दिया था और जिसकी लाश दूसरी सुबह सड़क पर पड़ी ऊँची-ऊँची इमारतों पर तंज़ कर रही थी—"

डॉक्टर ड्रेड ने अपने हाथ नीचे गिरा दिए और बड़ी लापरवाही से अपने आदमी से बोला

— "मैं पिछली रात भी देर तक जागता रहा हूँ और अब इस वक्त तुमने मेरी नींद में खलल डाला है— मुझे तुम पर बहुत गुस्सा आ रहा है—"

"फ़िक्र न करो— इसका इलाज हो जाएगा डॉक्टर—" नन्हा शैतान चहक कर बोला— "मैं तुम्हें ऐसी नींद सुलाऊँगा कि ये गधे फिर तुम्हें जगा न सकेंगे— तुम्हारे कारनामे हैरत से सुने जाते हैं— लिहाज़ा तुम्हारी मौत भी दूसरों के लिए हैरत-अंगेज़ होनी चाहिए— इंतहाई हैरत-अंगेज़— सर्कस के एक नन्हे से मस्खरे ने डॉक्टर ड्रेड को मार डाला.... हाहा.... सर्कस का बे-ज़रर मस्खरा....!" फिर वह दांत पीस कर बोला— "मैं एक अच्छा आदमी था मेहनत से रोज़ी कमाता था लेकिन.... उस नन्ही सी बच्ची की चीखों ने मुझ जैसे हक़ीर आदमी को डॉक्टर ड्रेड से टकरा दिया— अब मैं सोचता हूँ कि मैं क्या नहीं कर सकता— अब मुझे मालूम हुआ है कि मैं गैर मामूली सलाहियतों का मालिक हूँ— मैं सर्कस में भिखारियों की तरह क्यों पेट पर हाथ रख कर खड़ा रहूँ— हराम खोरों के लिए तफ़रीह क्यों बनूँ जब कि मैं उनकी जमा की हुई दौलत पर ब-आसानी हाथ डाल सकता हूँ— हाहा.... डॉक्टर ड्रेड.... अब मरने के लिए तैयार हो जाओ—"

दफ़अतन नन्हे शैतान के रिवॉल्वर से एक शोला निकला लेकिन खुद उसका पूरा जिस्म काँप गया— क्योंकि छत में नज़र आने वाली रौशनी आसमानी बिजली की तरह पूरे कमरे में कौंधती हुई सी मालूम हुई थी.... हक़ीक़तन नन्हा शैतान चुंधिया गया था— ज़ाहिर है ऐसी सूरत में निशाना क्यों न खता करता— वैसे नन्हा शैतान उछल-उछल कर फायर करता ही रहा— हर फायर पर रौशनी का झमाका ज़रूर होता और इस दौरान में डॉक्टर ड्रेड के कहकहे भी बराबर गूँजते रहे।

जब रिवॉल्वर के सारे राउंड ख़त्म हो गए तो डॉक्टर ड्रेड ने गरज कर कहा— "पकड़ लो इस खबीस को—"

दूसरा आदमी जो अभी तक सहमा हुआ खड़ा था नन्हे शैतान पर झपट पड़ा— लेकिन वह उसे अपनी गिरफ़्त में न ले सका— क्योंकि नन्हे शैतान के दोनों पैर उसके मुँह पर पड़े थे— वह कराह कर दूसरी तरफ

ही उलट गया। फिर खुद डॉक्टर ड्रेड ने उस पर छलांग लगाई लेकिन मुँह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा और नन्हा शैतान दूर खड़ा एक बड़ा सा चाकू खोल रहा था। ड्रेड ने फिर अपने आदमी को ललकारा। लेकिन इस बार उस पर झपटने की हिम्मत नहीं की बल्कि उसके चाकू पर नज़र जमाए हुए बहुत एहतियात से आगे बढ़ने लगा। नन्हे आदमी की छोटी-छोटी आँखें किसी ऐसे साँप की आँखों से मुशाबह नज़र आ रही थीं जो किसी पर हमला करने के लिए तैयार हो।

और फिर क़ब्ल इसके कि ड्रेड का आदमी उस तक पहुँचता उसने खुद ही उस पर छलांग लगाई। एक दिल-खराश चीख़ कमरे में गूँज कर रह गई। ठीक उसी वक्त किसी ने दरवाज़ा पीटना शुरू कर दिया। नन्हे शैतान ने खिड़की की तरफ जस्त लगाई मगर डॉक्टर ड्रेड भी हैरत-अंगेज़ फुर्ती के साथ उसके करीब पहुँच गया। नन्हा शैतान फिर पलटा लेकिन इस बार चाकू की नोक दीवार से टकराई। डॉक्टर ड्रेड बाल-बाल बचा था। दरवाज़ा बदस्तूर पीटा जाता रहा।

जितनी देर में डॉक्टर ड्रेड संभलता, नन्हा शैतान गायब हो चुका था। ड्रेड खिड़की पर झुका और बाहर फैले हुए अंधेरे में आँखें फाड़ने लगा।

तक़रीबन दो मिनट तक वह इसी तरह खड़ा रहा। दरवाज़ा पीटने की आवाज़ें अब भी उसके कानों से टकरा रही थीं लेकिन ऐसा मालूम होता था जैसे उसे इसकी परवाह ही न हो।
फिर उसने मुड़कर एक बुझी हुई सी नज़र उस आदमी पर डाली जिसके सीने से खून बह-बह कर कालीन में जज़्ब हो रहा था और यह देखे बगैर कि वह ज़िंदा है या मर गया उस दरवाज़े की तरफ बढ़ गया। जिसे दूसरी तरफ से पीटा जा रहा था।

उसने दरवाज़ा खोला। दूसरी तरफ से एक ज़रद-पोश आदमी उस पर आ गिरा।

"ओह....!" वह उसे झंझोड़ कर अलग हटाता हुआ बोला— "तुम दरवाज़ा क्यों पीट रहे थे?"

ज़रद लबादे वाला चंद लम्हे खड़ा पलकें झपकाता रहा फिर बोला— "मैं फ़रिश्ता हूँ। मुझसे ऊँची आवाज़ में गुफ्तगू न किया करो— मैं अपने साथी फ़रिश्ते की तलाश में हूँ— जो कुछ देर पहले मेरे साथ था— क्या तुम मेरी मदद कर सकोगे?"

"जाओ सो जाओ—" डॉक्टर ड्रेड हाथ हिलाकर बोला— "तुम हमेशा सोते-सोते जाग कर बकवास करने लगते हो। तुमने कोई ख्वाब देखा होगा—"

"तुम खुद बकवास कर रहे हो— उसके साथ मौत का फ़रिश्ता भी था और हम तीनों ने एक ही सागर से शराब पी थी—"

352
"तुम जाते हो या मैं अपना हंटर मँगवाऊँ?"
"मैं जा रहा हूँ—" ज़रद-पोश फ़रिश्ता दोनों हाथ हिला कर बोला— "लेकिन तुम्हें बद-दुआ ज़रूर दूँगा— तुम्हारी कश्ती ज़रूर डूबेगी— इसे लिख लो— तूफ़ान-ए-नूह फिर आएगा तुम सब गर्क हो जाओगे—"
"जाओ—" ड्रेड ने उसे धक्का देकर कहा और दरवाज़ा बंद कर लिया।

*****

क्लाक ने दिन के दस बजाए और कैप्टन हमीद ने इस तरह मुँह बना कर करवट ली जैसे कोई उसकी मर्ज़ी के खिलाफ उसे जगाने की कोशिश कर रहा हो।

तक़रीबन पाँच बजे वह और फरीदी घर पहुँचे थे और हमीद कपड़ों और जूतों समेत ही बिस्तर में जा घुसा था। घण्टे की आवाज़ से उसकी नींद उचट गई थी और फिर वह कोशिश के बावजूद भी न सो सका— आख़िर उसे उठना ही पड़ा— और वह टिक-टिक करते हुए क्लाक को घूरता हुआ बोला— "मैं तेरे मोजिद पर भी लानत भेजता हूँ—"

और फिर इस तरह मुतमइन नज़र आने लगा जैसे सचमुच क्लाक ने उसकी बात से बड़ा असर लिया हो— बाथरूम की तरफ जाते वक्त फरीदी से मुलाकात हो गई जो अंदरूनी बरामदे में बैठा अखबार देख रहा था— लेकिन यह अखबार देखने का वक्त न था और फरीदी का वहाँ इस वक्त मौजूद होना भी खिलाफ-ए-मामूल था क्योंकि वह ठीक नौ बजकर पैंतालीस मिनट पर दफ्तर चला जाया करता था।

"हाइँ! तुम जाग क्यों पड़े—" फरीदी ने अखबार एक तरफ डालते हुए कहा।
"एक ख्वाब अटक गया था—" हमीद ने लापरवाही से कहा और गुसलखाने में चला गया— कुछ

देर बाद जब वापस आया तो फरीदी वहाँ नहीं था— नौकरों से मालूम हुआ कि वह बाहर जा चुका है— हमीद काहिलों और सुस्त आदमियों की तरह आहिस्ता-आहिस्ता दिन गुज़ारने की तैयारियां करता रहा।

ठीक ग्यारह बजे फरीदी का फ़ोन आया— वह उसे उसी बस्ती में तलब कर रहा था जहाँ सफ़ीरों की कोठियां थीं— हमीद बुरी तरह झुंझला गया और इसी झुंझलाहट में उसने चौड़े पायंचों का पाजामा पहन लिया— पाजामा पहनने के बाद कद-आदम आईने पर नज़र पड़ी और ज़्यादा गुस्सा आया— इसी गुस्से के आलम में उसने एक संदूक उलट-पुलट डाला और वह शेरवानी निकाली जो आज से पाँच साल पहले उसका एक शायर दोस्त उसके उस सूट के बदले में छोड़ गया था जिसे हमीद ने बड़े चाव से सिलवाया था लेकिन एक बार भी पहनने की नौबत नहीं आई थी— हुआ यह कि उस अवामी शायर को एक सरमायादार लड़की ने..

353

चाय पर बुलाया। ज़ाहिर है ऐसे मौके पर "अवामियत" की हवा निकल जाना लाज़मी थी। वह हमीद के पास पहुँचा और अपने कपड़े वहीं उतार कर हमीद का सूट पहन कर जो गायब हुआ तो आज कई साल बाद हमीद को उसकी शेरवानी याद आई।

शेरवानी पहन कर उसने फिर आईने पर नज़र डाली और आपे से बाहर हो गया— संदूक पूरी तरह उलट-पुलट हो गया था और एक सुर्ख रंग की फुंदनेदार तुर्किश कैप ऊपर ही पड़ी नज़र आ रही थी। हमीद ने उसे उठा कर सर पर मंढ लिया अब उसका दिल चाह रहा था कि आईने ही को फोड़ डाले। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

अब वह कमरे में रुकना ही नहीं चाहता था लिहाजा बाहर निकल आया लेकिन जब नौकरों को मुँह फेर-फेर कर हंसते देखा तो आतिश-फ़िशां की तरह फट पड़ा— "क्यों हंसते हो उल्लू के पट्ठों—"

लेकिन वह कोई जवाब दिए बगैर इधर-उधर हो गए।
कुछ देर बाद वह मोटरसाइकिल पर उसी मकाम के लिए रवाना हो गया जहां फरीदी ने तलब किया था। पजामे के पायंचे फड़फड़ा रहे थे और तुर्किश कैप का फुंदना पुश्त पर

लहराता चला जा रहा था।

फरीदी उसे उसी इमारत के कंपाउंड में नज़र आया जहां पिछली रात उन्होंने डॉक्टर ड्रेड के आदमी को दाखिल होते देखा था लेकिन फरीदी तन्हा नहीं था— कंपाउंड में कई वर्दी वाले आदमी भी मौजूद थे। हमीद अपनी हईत पर बुरी तरह झेंपा— वह समझा था कि शायद फरीदी तन्हा होगा लेकिन वहां पुलिस का आईजी मौजूद था— इन सबने हमीद को हैरत से देखा जो उसे करीब से जानते थे मुँह फेर कर मुस्कुराने लगे।

मगर फरीदी ने इस पर न तो हैरत का इजहार किया और न गुस्से का बल्कि इस अंदाज़ में हमीद से गुफ्तगू करने लगा जैसे हमीद हमेशा से इसी किस्म का लिबास इस्तेमाल करता आया हो और उसकी नज़रों में इसकी कोई अहमियत न हो— वह उससे किसी लाश के मुताल्लिक गुफ्तगू कर रहा था और हमीद का ज़हन कहीं और था— वह सोच रहा था कि किस हरकत पर फरीदी बहुत सख्ती से जवाब तलब करेगा।

लेकिन कुछ देर बाद जब वह उसका हाथ पकड़ कर उसे इमारत में ले जा रहा था उसने आहिस्ता से कहा—
"ये उन्हें चारों आदमियों में से एक की लाश है—"
"ओह.... तो उसे डॉक्टर ड्रेड ही ने ख़त्म किया होगा—" हमीद बोला।
"हो सकता है— लेकिन मुझे यकीन है कि वह इस जगह नहीं कत्ल किया गया जहां इस वक्त इसकी लाश पड़ी हुई है—"

354
वह एक राहदारी में दाखिल हुए— लाश सामने ही पड़ी हुई थी।
"यह आप किस बिना पर कह रहे हैं कि उसे यहाँ नहीं क़त्ल किया गया—"
"इसका लिबास खून से चिकना हुआ है लेकिन फर्श पर खून का एक हल्का सा धब्बा नज़र आ रहा है— ऐसा मालूम नहीं होता कि यहाँ ज़्यादा मिकदार में खून बहा हो—"
"और मक़्तूल के मुताल्लिक क्या बताया गया है?"
"वह सफ़ारत खाने के एक अहल्कार का अज़ीज़ था और अभी हाल में बाहर से आया था—" "इसका पासपोर्ट तो आप देख ही चुके हैं—"
"हाँ.... और उसे जाली भी नहीं कहा जा सकता—"

"जाली कैसे हो सकता है जब कि सफ़ारत खाने से उसका ताल्लुक है—"
"यह ज़रूरी नहीं है—"
"क्या आपका ख्याल है कि डॉक्टर ड्रेड अब भी यहाँ मौजूद है—"
"क्या मैंने पहले कभी यह ख्याल ज़ाहिर किया था— मुझे तो नहीं याद पड़ता है कि मैंने यह कहा हो कि डॉक्टर ड्रेड इसी इमारत में मौजूद है—"
"फिर क्या यह आदमी यहाँ पिछली रात झक मारने आया था—"
"यह भी नहीं कहा जा सकता कि यह वही आदमी है जिसका तआकुब हमने पिछली रात किया था — क्या हमने उसकी शक्ल देख सके थे— अलबत्ता यह बात तो है कि यह उन्हीं चारों में से एक है—"
"फिर आप किस नतीजे पर पहुँचे हैं?"
"फी-अल-हाल किसी पर भी नहीं.... तुम्हें आखिर नतीजे पर पहुँचने की जल्दी क्यों पड़ जाती है—"
"ताकि जल्द फैसला हो और अपनी गर्दन छूटे—"
"जल्द फैसला होने का इम्कान नहीं है—"
हमीद सिर्फ एक ठंडी सांस ले कर रह गया— कुछ देर खामोश रहा फिर बोला— "लेकिन आपने मुझे क्यों बुलाया था—"
"यही दिखाने के लिए— अगर मैं पिछली रात इस इमारत में दाखिल होने की कोशिश करता तो इस लाश का पता भी न चलता— ये लोग इसे इतनी दिलेरी से यहाँ डाल कर पुलिस को इत्तला न दे सकते—"
"लेकिन इससे क्या फायदा हुआ?"

355
"ये लोग अच्छी तरह रोशनी में आ गए वरना पहले इस सफ़ारत खाने में यह भी सुना जा सकता था कि अपने किसी मुलाज़िम या उसके अज़ीज़ की निजी ज़िंदगियों से कोई ताल्लुक नहीं रखता और हो सकता है कि इस पर यकीन भी आ जाता— लेकिन....!"

फरीदी कहते-कहते रुक गया और फिर बोला— "आओ....!"
वह इमारत से फिर कंपाउंड में आ गए। हमीद उससे आहिस्ता-आहिस्ता कह रहा था— "क्या यह मुमकिन नहीं है कि हम इस इमारत की तलाशी ले सकें?"

"मैं पहले भी देख चुका हूँ लेकिन डॉक्टर ड्रेड या उसका कोई साथी यहाँ नहीं

दिखाई दिया अलबत्ता ऊपरी मंज़िल के एक कमरे की दीवारें दागदार ज़रूर मिली हैं—" "मैं नहीं समझा—"
"वह निशानात गोलियों ही के हो सकते हैं—"
"आहा तब तो....!"

"कुछ भी नहीं हमीद साहब— यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसकी बिना पर इस इमारत का रहने वाला गिरफ्त में आ सके— क्योंकि वह खुद भी रिवॉल्वर रखने का मजाज़ (अधिकारी) है और अगर वह रिवॉल्वर रखता है तो उसे दुनिया का कोई कानून इमारत को छलनी कर डालने से नहीं रोक सकता—"
"तब फिर हम अपना वक्त यहाँ क्यों बर्बाद कर रहे हैं—"

फरीदी ने इसका कोई जवाब नहीं दिया— वह कुछ सोचने लगा था— हमीद चुप-चाप इधर-उधर देख रहा था— वह जल्द से जल्द यहाँ से चला जाना चाहता था— क्योंकि तक़रीबन सारे ही ऑफिसर उसे बुरी तरह घूर रहे थे—

"अगर कहिये तो मैं वापस जाऊँ?" हमीद ने आहिस्ता से कहा— "वह तो मैं एक मुशायरे में शिरकत के लिए जा ही रहा था कि आपका फ़ोन मिला— और मैं मुशायरे की सदारत से महरूम हो गया—"

"चोंच बंद करो अपनी—" फरीदी ने ना-खुशगवार लहजे में कहा और फिर बड़ी तेज़ी से बाहर निकल कर अपनी कार की तरफ चला— हमीद भी झेंपता पीछे चला लेकिन उतनी ही देर में फरीदी की लैंकिन स्टार्ट हो चुकी थी— हमीद ने उस तक पहुँचने की कोशिश नहीं की— करता भी कैसे क्योंकि वह खुद मोटरसाइकिल पर आया था—

फरीदी की कार आगे और मोटरसाइकिल उसके पीछे फर्राटे भर रही थी वैसे यह और बात है कि हमीद इसके रवैये पर चिराग-पा हो गया हो— कार और मोटरसाइकिल सड़कों पर दौड़ती रहीं— हमीद नहीं समझ सका था कि इसका क्या मकसद हो सकता है— आखिर बैक वक्त वह कहाँ के लिए चल पड़ा था— वह मोटर…

356
साइकिल पर था— वरना कम से कम इतना तो मालूम ही कर लेता कि अब कहाँ रुकना पड़ेगा।

पिछली रात फरीदी ने जो कुछ भी किया था हमीद उससे मुतमइन नहीं था लेकिन इसके बावजूद भी उसकी मोटरसाइकिल फरीदी की कार के पीछे दौड़ रही थी।

फिर वही लड़की

एक बार हमीद की मोटरसाइकिल कार के बराबर आ गई और फरीदी ने बुलंद आवाज़ में कहा— "तुम दफ़ा हो जाओ—"

"बुलाया क्यों था?"

"इसलिये नहीं बुलाया था कि तुम किसी महफ़िल में लखनऊ के भांड़ को शिकस्त देने के साज़ो-सामान समेत आओ— यकीन रखो कि आज की इस हिमाक़त के लिये तुम्हें काफ़ी भुगतना पड़ेगा— क्योंकि तुमने ड्यूटी के औकात में डिसिप्लिन को नज़र-अंदाज़ किया है—"

हमीद ने अगले ही मोड़ पर अपनी मोटरसाइकिल घुमा दी— उसके ज़हन में क़ासिम का पेटेंट जुमला "मेरे ठेंगे से" गूँज रहा था और उसने यह दहिया कर लिया कि वह इसी हईत में ऑफिस भी जाएगा— आख़िर फरीदी ने उसके लिबास पर क्यों नुक्ताचीनी की— उसे डिसिप्लिन के ख़िलाफ़ क्यों क़रार दिया।

वह किसी बनास्पती और मेंढक का सा दिमाग़ रखने वाले लीडर की तरह कौमी लिबास के मसले पर झक मारने लगा— एक लंबी चौड़ी तकरीर तैयार की और मोटरसाइकिल फर्राटे भरती रही।

आख़िरकार वह दफ्तर पहुँच गया और उसे जिसने भी देखा हंसी के मारे दोहरा हो गया— लेकिन क्या मजाल कि हमीद की संजीदगी में फर्क आता।

वह निहायत इत्मीनान से सारा दिन दफ्तर में फाइलें उलटता-पलटता रहा और ऑफिस बंद होने का वक्त होते ही उठ गया— लेडी इंस्पेक्टर रेखा से दिन में कई बार मुलाकात हुई थी लेकिन उसने उसके लिबास के मुताल्लिक इज़हार-ए-ख़्याल नहीं किया था और हमीद के अंदाज़ से तो ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वह हमेशा से यही लिबास इस्तेमाल करता आया हो— वैसे हकीकत यह थी कि ऑफिस वालों ने आज तक उसे पाजामे में नहीं देखा था।

शाम को जब वह वापसी के लिये मोटरसाइकिल की तरफ जा रहा था रेखा से फिर मुठभेड़ हो गई और…

357
ने मुस्कुराकर कहा— "आज यह नया खब्त कैसा?"
"क्यों....?" हमीद पहाड़ खाने वाले अंदाज़ में पलटा।
"इसलिये कि एक मौलवी ने अपना संदूक चोरी हो जाने की रिपोर्ट दर्ज कराई है—" "तुम मेरे कौमी लिबास का मज़ाक नहीं उड़ा सकतीं—" हमीद को सचमुच गुस्सा आ गया। "किस कौम से ताल्लुक रखते हो?" रेखा ने बड़े तल्ख लहजे में पूछा— "मुझे नहीं मालूम था कि कौम और कौमी चीज़ों का तज़किरा करने वाले मसर्रतों में से तुम भी हो

— "

"ज़ुबान को लगाम दो— वरना अच्छा नहीं होगा—"
"तुम अपने कौमी लिबास में बिल्कुल हुद-हुद मालूम होते हो—"
हमीद ने झुंझलाहट में मोटरसाइकिल स्टार्ट की।
"अरे.... हाँ.... कौम के बेटे.... तुम्हारे लिये एक गैर कौम की लड़की का पैगाम है— मेरी संगलटन....!"
"क्या....?" हमीद ने हैरत से कहा और मशीन बंद कर दी— मेरी सिंगलटन के मुताल्लिक फरीदी के अलावा और किसी को इल्म नहीं था—
"वह आज नौ बजे रात को मय पोल में मिलेगी— तुम्हारी अदम मौजूदगी में फ़ोन आया था — मैं बताना भूल गई—"
"शुक्रिया—" हमीद कुछ सोचता हुआ बड़बड़ाया— "अच्छा.... चलो....!"
वह ऑफिस से घर आ गया— फरीदी मौजूद था— हमीद सीधा अपने कमरे में चला गया और कौमी लिबास से पीछा छुड़ाने के बाद गुसलखाने की राह ली— कौमी बुख़ार की इब्तदा तफ़रीह से हुई थी लेकिन दफ़्तर में तफ़रीह और बुख़ार दोनों ने बैक वक्त सरसाम की शक्ल इख़्तियार कर ली थी— जैसे-जैसे लोग हँसते थे हमीद के गुस्से में इज़ाफा

होता रहा था— यह और बात है कि मेरी सिंगलटन का तज़किरा आते ही वह बिल्कुल मामूल पर आ गया हो— फिर न सिर्फ उसका कौमी लिबास उतर गया बल्कि कौम परस्ती के सिलसिले में उसने दिल ही दिल में जो तकरीरें तैयार की थीं वह भी ताक-ए-निसयान की नज़र हो गईं और वह सोचने लगा— दुनिया के सारे आदमी मिट्टी की एक ही काली मिट्टी से बना है और कोई सफ़ेद मिट्टी से— ज़मीन एक ही है और इस पर छाया हुआ आसमान भी मुख्तलिफ़ हिस्सों में तक़्सीम नहीं है—
और फिर थोड़ी ही देर में वह यह भी भूल गया कि मेरी सिंगलटन की असलियत क्या थी— वह यह भी भूल गया कि खुद डॉक्टर ड्रेड के आदमियों ने मेरी सिंगलटन के मुताल्लिक बहुत कुछ कहा था— यह तो बहुत

358

दूर की बात है— हमीद खुद भी एक बार उसकी ज़ात से एक तल्ख तजुर्बे का शिकार हो चुका था लिहाजा ऐसी सूरत में यही कहना चाहिये कि उसके सितारे ही गर्दिश में थे

—

हमीद आठ ही बजे मय पोल जा पहुँचा— ज़रूरी नहीं था कि उस वक्त मेरी सिंगलटन भी मौजूद ही मिलती क्योंकि रेखा के बयान के मुताबिक उसे नौ बजे का वक्त दिया था—

यह कहना गलत होगा कि हमीद ने इस मुलाकात के बारे में सिरे से कुछ सोचा ही नहीं— उसने इस मसले पर कई पहलुओं से गौर किया था लेकिन चूंकि उसने पहले ही फर्ज़ कर लिया था कि मेरी सिंगलटन मासूम है इसलिये वह इसके खिलाफ कुछ भी न सोच सका— इसका ख्याल था कि वह डॉक्टर ड्रेड के लिये काम ज़रूर कर रही है लेकिन नादानिस्तगी में— उसे इल्म नहीं है कि वह किस के लिये काम कर रही है— इससे पहले भी हमीद की नज़रों से ऐसी ही सध (सैकड़ों) मिसालें गुज़र चुकी थीं इसलिये वह अपने इसी ख्याल पर जमा रहा—

ठीक नौ बजे उसे मेरी सिंगलटन दिखाई दी— हमीद ने उसे इशारा किया और वह बड़े पुर-इश्तियाक अंदाज़ में उसकी तरफ बढ़ी— हमीद उसकी चाल को बड़े इन्हमाक से देखता हुआ दिल ही दिल में कुर्बान हो रहा था— उस लड़की के हर अंदाज़ में बड़ी सेक्स अपील थी

—

पहले तो वह उसे देख कर मुस्कुराई थी लेकिन करीब पहुँचते ही कुछ घबराई सी नज़र आने लगी—

हमीद ने बड़ी तपाक मुस्कराहट से उसका इस्तक़बाल किया—

"मैं दरअसल इक़बाल-ए-जुर्म करने आई हूँ—" उसने कँपकँपाती हुई सी आवाज़ में कहा—

"भूल जाओ इस वाकये को—" हमीद ने लापरवाही से कहा—

"लेकिन मुझे आपके इस रवैये पर हैरत है जनाब—"

"क्यों....?"

"एक मुजरिम आपकी नज़रों के सामने है—"

"मैं समझता हूँ कि तुम धोखे से किसी के जाल में फँस गई हो—"

"आप क्या जानें—" मेरी ने हैरत से कहा—

"मैं जानता हूँ—"

"मैं तो समझी थी कि अब गर्दन छुड़ाना मुहाल हो जाएगा—"

"तुमने नाहक किसी ऐसे फ़ज़ूल ख्याल को दिल में जगह दी थी— मैं तो उसी दिन समझ गया था—"

"किस दिन....?"

359

"जब तुमने मेरे बाज़ू में सुई चुभोई थी और तुम बुरी तरह ख़ौफ़ज़दा थीं—"
"और फिर जब मैंने अखबार में आपका नाम देखा तो मेरा दम निकल गया और वहीं से मुझे शुबहा हुआ कि धोखा दिया जा रहा है—"
"क्यों तुम्हें धोखा किस तरह दिया गया?"
"मैं दरअसल एक मज़हबी ख्याल की लड़की हूँ— कट्टर रोमन कैथोलिक प्रोटेस्टेंट लोगों को देख कर मेरे जिस्म में आग लग जाती है— लेकिन कुछ दिन पहले ही मेरी मुलाकात अपने ही फ़िरक़े के एक पादरी से हुई— हम अक्सर मिलते रहे उसने मुझे बताया कि प्रोटेस्टेंट लोगों का एक गिरोह हमारे फ़िरक़े को नुकसान पहुँचाने के दर-पे है— मैंने इसके लिये काम करने पर रज़ामंदी ज़ाहिर कर दी— उस रात हमारे फ़िरक़े का एक आदमी मेरे साथ था और उसने ख़ौफ़ज़दा होकर बताया था कि यहाँ मुखालिफ़ फ़िरक़े के कुछ खतरनाक आदमी मौजूद हैं और ग़ालिबन हमारी ही ताक में यहाँ बैठे हैं

— हो सकता है कि बात बढ़े और झगड़ा हो जाए— फिर उसने मुझे एक सुई दी और कहा कि अगर ऐसा कोई वाकया आए तो मैं उसे हमला आवर के जिस्म में किसी जगह चुभो दूँ— फिर आप मेरी मेज़ पर आ गए और मैं यही समझी कि आप भी हमारे दुश्मनों में से हैं— यह है पूरी दास्तान—"
"लेकिन तुम्हें शुबहा क्यों हुआ इन लोगों पर— क्या उन्होंने ख़ुसूसियत से मेरी ही तरफ इशारा किया था?"
"नहीं.... आपकी तरफ इशारा नहीं किया था—"
"फिर शुबहा क्यों और कैसे हुआ?"
"मुझे शर्म आती है बताते हुए— बस आप यह समझ लीजिये कि यह बद-माशों का कोई गिरोह है जो भोली-भाली लड़कियों को अपने जाल में फंसाता रहता है—"
"नहीं मुझे इसके मुताल्लिक ज़रूर बताओ— तुम जानती ही हो कि मेरा ताल्लुक किस महकमे से है—"
"वह देखिये तारिक़ रोड पर एक इमारत है तनवीर बिल्डिंग— इसकी तीसरी मंज़िल पर एक फ़रिश्ता सूरत आदमी रहता है— इसके मुताल्लिक मुझे बताया गया कि वह हमारे ही फ़िरक़े का एक बहुत बड़ा आलिम है लेकिन मुखालिफ़ गिरोह के किसी बद-बख़्त ने इसकी ज़िंदगी बर्बाद कर दी है— उस पर कोई ऐसा ज़हर आज़माया गया था जिसने उसे ज़हनी एतबार से मजहूल कर दिया और वह फ़ातिर-उल-अक़्लों की सी ज़िंदगी बसर कर रहा है— उन्होंने मुझसे कहा कि अगर मैं इसकी देख-भाल कर सकूँ तो यह एक कार-ए-सवाब होगा— मैंने मंज़ूर कर लिया— मगर आप से क्या बताऊं— शर्म की वजह से मेरी ज़बान नहीं खुलती—"

360

"नहीं मुझे ज़रूर बताओ—"

"उसने एक दिन मुझ पर हमला किया— मैं अपनी पूरी कुव्वत से उसके मुकाबले में तैयार हो गई और उसने हंस कर कहा कि रोज़ाना कितनी ही लड़कियां इसी बहाने से उसके लिए लाई जाती रही हैं— मैं यह सुन कर सन्नाटे में आ गई— लेकिन खुदा का शुक्र है कि किसी न किसी तरह उस वहशी से खुद को बचाने में कामयाबी नसीब हुई— दो दिन तक इस मसले पर गौर करने के बाद आज आप से मिली हूँ—"

"फिक्र न करो— मैं उन्हें ठीक कर दूँगा— क्या तुम उस मक़ाम से वाकिफ हो जहाँ उनका कयाम है?"

"हाँ मैं जानती हूँ—"
"मुझे बताओ— मैं इसी वक्त उनका क़ला-क़मा कर दूँगा—"
"वह एक बड़ी गंदी सी बस्ती में रहते हैं अर्जुनपुरे में—"
"अर्जुनपुरे में?" हमीद ने हैरत से दोहराया।
"जी हाँ.... उनका कहना है कि वह वहाँ रह कर गरीब आदमियों में तबलीग़ करते हैं—" "पता बताओ?"
"ज़बानी बताना बड़ा मुश्किल है— पेच-दर-पेच गलियाँ हैं— लेकिन मैं आप को वह मकान दिखा ज़रूर सकती हूँ जहाँ वह रहते हैं—"
"मैं इसी वक्त देखूँगा—"
"मैं ज़रूर चलूँगी आपके साथ— उनके खिलाफ़ मेरे सीने में आग भरी हुई है—"
दफ़अतन हमीद की नज़र क़ासिम पर पड़ी जो उसी की तरफ आ रहा था— उसका दम निकल गया कब्ल इसके कि मेरी से उठने के लिये कहता,क़ासिम सर पर सवार था—
"सामालेकुम हमीद भाई—" उसने कुर्सी खींच कर बैठते हुए कहा और मेरी कुछ नर्वस सी नज़र आने लगी— हमीद का भी यही हाल हुआ था—
"अरे हमीद भाई.... ही, ही.... कितना ढूंढा कहाँ-कहाँ ढूंढा मगर तुम हो कि तुम्हारा कहीं पता ही नहीं—"
"मैं इस वक्त अच्छे मूड में नहीं हूँ—" हमीद ने आहिस्ता से उर्दू में कहा— "उर्दू नहीं समझती क्या?"
"नहीं तुम इस वक्त चले जाओ—"
"इस की बड़ी बहन नहीं आई क्या....?"
"क़ासिम बकवास न करो— चुप-चाप उठ जाओ—"

361
"मैं तो नहीं उठूँगा.... ही, ही, ही.... देखता हूँ तुम क्या करते हो.... ही, ही, ही—"

क़ासिम आज बड़े बे-झिझक हो रहा था— न जाने क्या बात थी— वरना वह तो औरतों की मौजूदगी में बाज़ औक़ात हाथ-पैर भी नहीं हिला सकता था।
"मैं तुम्हें पुलिस के हवाले कर दूँगा—" हमीद ने कहा।
"तुम मुझे पागल कुत्तों के हवाले कर दो लेकिन मैं आज इसकी बड़ी बहन से ज़रूर मिलूँगा— बिल्कुल....!"
"अरे तुम ग़लत समझे— यह उस दिन वाली लड़की नहीं है—" दफ़अतन हमीद का मूड बदल गया— "ए जाओ.... किसी और को उल्लू बनाना—"
"यकीन करो प्यारे—"
"क्यों यकीन करूँ— क्या मैं अंधा हूँ—"
"आओ चलें—" हमीद झुंझला कर मेरी की तरफ़ मुड़ा—
"ये कौन साहब हैं और क्या कह रहे हैं?"
"अरे ये यूँ ही हैं तुम चलो—"
"अबे तुम खुद ही होगे यूँ ही— बल्कि जो नहीं.... सो नहीं वग़ैरह—" क़ासिम बिगड़ गया।
"क्यों जनाब! क्या बात है— आप क्यों ख़फ़ा हो रहे हैं?" मेरी ने क़ासिम को मुख़ातिब किया।
"ख़फ़ा होने की बात नहीं— ये एक चार सौ बीस आदमी है—" क़ासिम ने बुरा सा मुँह बना कर कहा— "इस के साथ कहीं न जाइये वरना यह आप को कुएं में धकेल देगा—"
मेरी के लब व लहजे पर बे-अख्तियार हँसी आने लगी— क़ासिम का कलेज गज भर का हो गया और हमीद की जान निकल गई।
"उठो जल्दी करो—" उसने कहा।
"नहीं ये बहुत दिलचस्प आदमी मालूम होते हैं—" मेरी बोली।
क़ासिम की बांछें जो खिलने से बाक़ी रह गई थीं वह भी खिल गईं और उसने हमीद से कहा— "नहीं ये तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं जाएँगी— अगर तुम ज़बरदस्ती करोगे तो खून ख़राबा हो जाएगा— लंबे आए कहीं के अजी वाह—"

"क़ासिम गिन-गिन कर बदले लूँगा—" हमीद ने उर्दू में कहा— उसे हैरत थी कि आज क़ासिम की कायापलट कैसी हो गई।

362

"मेरे ठेंगे से— मैं तुम से कमज़ोर नहीं हूँ— क्या सिर्फ तुम ही मज़ा करना जानते हो—"

मेरी ने अपने बैग से चाकलेट का पैकेट निकाला और क़ासिम उस पर नज़र जमाए हुए मुँह चलाने लगा— अब हमीद को मेरी पर भी गुस्सा आ चला था— आख़िर वह उठती क्यों नहीं— फिर क़ासिम की तरफ उसने देखा जो ललचाई हुई नज़रों से चाकलेट के पैकेट को घूर रहा था—

मेरी ने पैकेट फाड़ कर चाकलेट निकाली और कुछ हमीद की तरफ बढ़ा दी और कुछ क़ासिम की तरफ— क़ासिम ने कुछ इस अंदाज़ में झपट्टा मारा जैसे शुबहा रहा हो कि कहीं हमीद उन्हें भी न उचक ले जाए— उसने फाड़ कर सामने रख दिए और हमीद उसे ग़ुस्सैल नज़रों से घूरता रहा—

"फिर उन्हें भी ले चलिये क्या हर्ज़ है—" मेरी ने मुस्कुराकर कहा— "ये आप के कोई बे-तकल्लुफ़ दोस्त मालूम होते हैं—"

हमीद चाकलेट के टुकड़ों को हाथ में लिये बैठा था— उसने झुंझलाकर कहा— "नहीं—"

"जैसी आपकी मर्ज़ी—"

"आप कुएं में गिरने जा रही हैं समझें—" क़ासिम उंगली उठा कर बोला और फिर चौंक कर इस तरह आँखें फाड़ने लगा जैसे नींद के खिलाफ जद्दोजहद कर रहा हो— दफ़अतन खड़ी होकर बोली—

"चलिये—"

मगर क़ासिम ख़ामोशी से बैठा रहा— ऐसा मालूम हो रहा था जैसे उस पर सचमुच शदीद तरीन नींद का हमला हुआ हो—

हमीद ने महसूस किया कि लड़की कुछ बौखला सी गई है— उसका माथा ठनका और वह कनखियों से क़ासिम को देखता हुआ क्लॉक रूम की तरफ बढ़ा— क्लॉक रूम की तीन बड़ी खिड़कियाँ डाइनिंग हॉल की तरफ खुलती थीं— हमीद ने हैंगर पर से अपना अल्स्टर उतारते हुए देखा कि क़ासिम कुर्सी की पुश्त से टिका हुआ बे-ख़बर सो रहा है—

हमीद के हाथ में अब भी चाकलेट के टुकड़े दबे हुए थे— उसने जेब में डाल लिये और फिर वह दरवाज़े की तरफ मुड़ा और मुस्कुराकर बोला— "मैं तो समझता था कि इस अहमक से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाएगा—"

"सच.... जी हाँ—" मेरी चौंक पड़ी— "जी हाँ.... मैंने इतना लंबा और इतना मोटा आदमी आज तक नहीं देखा—"

363

"हाँ.... वह हर मामले में गैर मामूली है— आइये—"

****

डॉक्टर ड्रेड इंतहाई गुस्से के आलम में टहल रहा था— लेकिन अब वह उस इमारत में नहीं था जहाँ उसने पिछली रात गुज़ारी थी—

यह एक छोटा सा कमरा था जिसमें चारों तरफ लोहे की अलमारियाँ दीवारों से लगी रखी थीं— यहाँ इन अलमारियों के अलावा और कुछ नहीं था—

उसने एक अलमारी खोली— इसके अंदर फ़ोन रखा हुआ था— डॉक्टर ने किसी के नंबर डायल किये और थोड़े ही पल में चिंघाड़ने लगा— "कौन है.... ओह.... क्या कर रहे हो तुम लोग.... क्रैग को भेजो—"

उसने रिसीवर रख कर फिर अलमारी बंद कर दी और पहले ही के से अंदाज़ में टहलने लगा—

कुछ देर बाद दरवाज़े का पर्दा हटा और एक आदमी अंदर दाखिल हुआ।

"क्या खबर है?" डॉक्टर उसे खून-ख्वार नज़रों से घूरता हुआ बोला—

"सब ठीक है जनाब मेरी सिंगलटन उन्हें ज़रूर लाएगी— इस वक्त तक की रिपोर्ट है कि वह दोनों मय पोल से बाहर निकल आए हैं—"

"लेकिन फरीदी कहाँ है?"

"वह मेरा ख्याल है कि उन दोनों की निगरानी कर रहा होगा—"

"ज़रूरी नहीं है कि वह धोखा खाकर यहाँ तक चला ही आए— क्रैग अक्ल इस्तेमाल करना सीखो—"

"मुझे यकीन है जनाब कि कैप्टन हमीद ने उसे इस दावत-नामे का तज़किरा ज़रूर किया होगा— वह भी कैप्टन हमीद की तरह बे-वकूफ नहीं है— वह यक़ीनन यही समझेगा कि इन लोगों के लिये कोई जाल बिछाया गया है लिहाज़ा हो सकता है कि वह यहाँ तक चला ही आए

— "

"कच्चा काम....!" डॉक्टर ड्रेड ने बुरा सा मुँह बनाया— "मगर तुम क्या जानो कि किस किस्म के आदमी से पाला पड़ा है— कुछ भी हो मुझे दो दिन के अंदर-अंदर फरीदी और फिंच की लाशें चाहियें—"

"हम इंतहाई कोशिश कर रहे हैं डॉक्टर—"

"और यह भी ग़ालिबन कोशिश ही है—" डॉक्टर ने तंज़िया लहजे में कहा— "कि तुम ने उस बे-वकूफ लड़की को इस मुहिम पर रवाना किया है—"

"हम तो आप ही के नक़्श-ए-क़दम पर चलने की कोशिश करते हैं—" क्रैग के लहजे में भी डॉक्टर

364
ड्रेड ने तर्ज़ की तल्खी महसूस की और उसे हैरत से घूरने लगा।
"मैंने ग़लत नहीं कहा डॉक्टर—" क्रैग दिलेरी से बोला— "मैं जानता हूँ कि आप इंसाफ पसंद हैं— इसलिये आप पर तंज़ करने के बाद भी ज़िंदा रहूँगा—"
"हाँ.... मैं इंसाफ पसंद हूँ—" डॉक्टर ड्रेड ग़ुस्सैल आवाज़ में ग़र्राया— "तुम अपना मतलब बयान करो—"
"क्या आप से गलतियाँ नहीं होतीं?"
"शाज़-ओ-नादिर.... लेकिन मैं उन्हें जल्द ही संभाल लेता हूँ—"
"बहुतेरी ऐसी भी होंगी जिन्हें आप न संभाल सके होंगे—"
"यह बात जल्द ही खत्म होनी चाहिये— वज़ाहत करो—" डॉक्टर ग़र्राया।
"जब मेरी सिंगलटन से एक गलती हो चुकी थी तो इस गलती का इआदा (दोहराव) दूसरी बार क्यों हुआ? मैं ज़हरीली सुई वाले वाकये का तज़किरा कर रहा हूँ— आखिर वही सुई बेगम इरशाद के यहाँ क्राइम रिपोर्टर पर क्यों इस्तेमाल की गई जब कि कर्नल फरीदी इस वाकये की पब्लिसिटी भी करा चुका था—"

डॉक्टर ड्रेड की ग़राहट कहकहे में तब्दील हो गई और वह कहकहा भी तवील (लंबा) था लेकिन क्रैग बुरी तरह काँप रहा था।
दफ़अतन डॉक्टर इस तरह खामोश हो गया जैसे कोई मशीन चलते-चलते रुक गई हो।
फिर वह दहाड़ा— "तुम मुझे अहमक समझते हो— यह गलती नहीं हिकमत-ए-अमली थी— तुम उस औरत को क्या समझते हो— ऐसी औरतें बहुत कम मेरी नज़रों से गुज़री हैं— वह सिर्फ कानून से डरती है इसलिये मैंने यही मुनासिब समझा कि पुलिस भी इसमें दिलचस्पी लेने लगे— इस तरह वह बौखला जाएगी और फिर.... फिर मैं उसे देखूँगा कि उसके आसाब (स्नायु) फौलाद के हैं या पत्थर के— अनवर के मामले में उसकी तन्बीह (चेतावनी) भी महज़ फज़ूल और लग़्व (बेतुकी) थी— वह मेरा क्या कर सकता है— मकसद यही था कि उसे चारों तरफ से छेड़ा जाए और वह परेशान होकर मेरे मुतालबात (माँगें) पूरे करे— लेकिन देखो रहे हो वह आज भी घोड़ा गाड़ी में बैठ कर शहर की गलियों में भटकती फिर रही है—"
"सच.... जी.... जी हाँ.... मैं देख रहा हूँ—"
"दफा हो जाओ—" डॉक्टर ड्रेड ने दरवाज़े की तरफ हाथ उठा कर दहाड़ा।
क्रैग उल्टे पाँव चलता हुआ दरवाज़े से निकल गया— शायद उसे खदशा (डर) था कि डॉक्टर ड्रेड की तरफ पुश्त होते ही मौत आ दबोचेगी।
डॉक्टर ड्रेड फिर टहलने लगा— कुछ देर बाद वह चौंक कर दरवाज़े की तरफ मुड़ा— ज़र्दपोश फ़रिश्ता!

365

परदे से अंदर झाँक रहा था— "ही.... ही.... ही...." वह दांत निकाल कर हँसता हुआ फिर बोला— "क्या अंदर आ जाऊँ?"

"आ जाओ....!" ड्रेड उसे घूरता हुआ ग़र्राया।

"आज तीन बजे चाँद ज़मीन पर उतर आएगा—" ज़र्दपोश फ़रिश्ते ने अंदर आकर पेशीनगोई (भविष्यवाणी) की। चंद लम्हे खामोश रहा और फिर बोला— "मेरा चाँद कहाँ है— खुदा के लिये उसे बुलवाओ—"

डॉक्टर ड्रेड मुस्कुराया और बोला— "एक नहीं दो चाँद....!"

"हाय.... हाय.... हाय—" ज़र्दपोश फ़रिश्ता उछल-उछल कर अपना सीना पीटने लगा— वह इस वक्त ज़र्द चोगे और दाढ़ी में बड़ा अजीब लग रहा था।

डॉक्टर ड्रेड ने फिर फ़ोन वाली अलमारी खोली और माउथपीस में बोला— "क्रैग.... डॉली और मोना को यहाँ भेज दो— मैं तफ़रीह के मूड में हूँ—"

"हाय.... हाय.... डॉली.... और मोना—" ज़र्दपोश फ़रिश्ता दांत पर दांत जमाए सिसकारियाँ भरने लगा।

डॉक्टर मुस्कुराता रहा। कुछ देर बाद दो जवान और सफ़ेद फ़ाम लड़कियाँ अंदर दाखिल हुईं— एक नारंगी स्कर्ट में थी और दूसरी हल्के नीले स्कर्ट में— डॉक्टर ड्रेड ने ज़र्द फ़रिश्ते की तरफ इशारा किया जो खामोशी से पलकें झपका रहा था।

वह दोनों उसके करीब पहुँच कर बोलीं— "क्यों डार्लिंग—"

"ही.... ही.... ही.... तुम दोनों.... तुम दोनों मेरी ज़िंदगी हो— मेरी हयात (जीवन) हो— आओ.... आओ—" उसने दोनों हाथ फैला दिये और एक लड़की भी दोनों हाथ फैला कर झपटी लेकिन करीब पहुँचते ही ज़र्दपोश फ़रिश्ते ने उसे अपनी तरफ खींचना चाहा इस ने उसके गाल पर थप्पड़ रसीद कर दिया।

"अरे....!" ज़र्दपोश फ़रिश्ता बौखला कर पीछे हट गया।

"ये तुमने क्या किया मोना....!" दूसरी लड़की ने ज़र्दपोश फ़रिश्ते को पकड़ते हुए कहा — "तुम भी अजीब हो—"

फिर दूसरी लड़की उसके गाल सहलाने लगी जिस पर थप्पड़ पड़ा था।

"तुम खुद कमीनी हो डॉली— तुम्हें क्या हक है कि मेरे महबूब का गाल सहलाओ—"

"जहन्नुम में जाए तुम्हारा महबूब—" डॉली ने भी झुंझला कर उसके गाल पर थप्पड़ जड़ दिया— ज़र्दपोश फ़रिश्ता उछल कर पीछे हटा— ऐसा मालूम होता था जैसे वह गूँगा हो गया हो— मोना ने फिर उसे पकड़ लिया था।

366

लेकिन उसने खुद को छुड़ाने की कोशिश नहीं की बल्कि हैरत से डॉक्टर ड्रेड की तरफ देखता रहा।

"ये चाँद पसंद आए तुम्हें—" डॉक्टर ड्रेड ने मुस्कुराकर पूछा।

"अच्छे तो हैं—" फ़रिश्ते ने गूँगी आवाज़ में कहा— "मगर मारते क्यों हैं?"

इस बार मोना ने दो कदम पीछे हट कर उसकी कमर पर लात रसीद कर दी और वह मुँह के बल फर्श पर जा गिरा। फिर डॉली ने उसे उठने नहीं दिया— उसकी पीठ पर सवार होकर दोनों हाथों से उसका सर सहलाने लगी थी।
दफ़अतन अलमारी में रखे हुए फोन की घंटी बजी— डॉक्टर ड्रेड ने रिसीवर उठा लिया— इधर दोनों चाँद ज़र्दपोश फ़रिश्ते की खोपड़ी से सूरज तुलूअ (उदय) करते रहे। "हेलो.... कौन.... क्रैग.... क्या बात है?"
"गड़बड़ हो गई डॉक्टर—" दूसरी तरफ से आवाज़ आई— "कैप्टन हमीद टैक्सी में नहीं बैठा— वह उसे मोटर साइकिल पर ले गया—"
"ओह....!" ड्रेड ग़र्राया और शोर मचाती हुई लड़कियों की तरफ मुड़कर दहाड़ा— "इसे ले जाओ यहाँ से—" और फिर माउथपीस में बोला— "मैंने पहले ही तुम्हें आगाह कर दिया था तुम सब गधे हो गए हो— क्या वह उसे घर ले गया है—"
"हाँ.... डॉक्टर.... पाँच और ग्यारह पूछ रहे हैं क्या हम कर्नल फरीदी की कोठी में घुस जाएँ—"
"यकीनन.... अगर वह खूँखार कुत्तों की ग़िज़ा (भोजन) बनना पसंद करें—"
"फिर क्या किया जाए—" क्रैग बहुत बौखलाया हुआ सा मालूम होता था।
"अब....!" ड्रेड कुछ सोचता हुआ बोला— "जो कुछ भी हो रहा है होने दो—"
"वह लड़की....!"
"उससे मेरा दिल भर गया है— इसलिए उसके ज़ाया (नष्ट) हो जाने का अफ़सोस मुझे नहीं होगा मगर ठहरो— क्या वह इस कयाम-गाह (निवास स्थान) से वाकिफ है?"
"नहीं डॉक्टर—"
"बस ठीक है उसे भूल जाओ—" ड्रेड का लहजा बहुत नर्म था— "लेकिन फिंच के लिये जो कह रहा हूँ उसे गौर से सुनो— वह स्प्रिंग कॉलेज में मुकीम (ठहरा हुआ) है— खैर.... सुनो.... इस वक्त तुम्हारे पास कितने देसी आदमी हैं—"
"फीलहाल आठ हैं—"

"ठीक.... उनमें से दो को गोल्डन स्कोर पेन के इंजेक्शन दो— उन के पास दो भरे हुए रिवॉल्वर भी होने चाहियें और वही पुरानी तदबीर— उन्हें स्प्रिंग कॉलेज के सामने उतार देना और ख़ुद बाहर छुपे रहना— इस वाकये के बाद फिंच वहाँ हरगिज़ नहीं रुकेगा— जैसे ही बाहर निकले.... जिस तरह मुनासिब समझो उस का खात्मा कर दो— अगर मेरी यह तदबीर तुम्हारी ताहली (लापरवाही) की बिना पर नाकाम हुई तो.... यकीन करो नहीं.... मैं एक रात में दो नाकामियाँ नहीं बर्दाश्त कर सकूँगा—"

"लेकिन अगर वह स्प्रिंग कॉलेज में न हुआ तो?"

"तब फिर कोई बात नहीं—"

"दो जानें बेकार जाया होंगी—" दूसरी तरफ से आवाज़ आई।

"बकवास बंद—" ड्रेड ग़र्राया— "अब तक हज़ारहा जानें मेरे तजरबात की नज़र हो चुकी हैं—"

निकल गया

मोटर साइकिल फरीदी की कोठी की कंपाउंड में दाखिल हुई और पीछे बैठी हुई मेरी सिंगलटन घबरा कर कहा— "तुम मुझे कहाँ ले आए?"

"मैंने कहा तुम्हें अपना घर दिखा दूँ—" हमीद ने कहा— मोटर साइकिल पोर्च में पहुँच कर रुकी थी।

"नहीं! मैं यहाँ नहीं ठहरूँगी—" वह ख़ौफ़ज़दा नज़रों से चारों तरफ देखती हुई बोली और गाड़ी से कूद गई।

"तुम कतई न ठहरो—" हमीद मुस्कुरा कर बोला— "लेकिन मैं तुम्हें फाटक तक छोड़ने के लिये जाऊँगा—"

"क्या मतलब....?"

"मतलब यह कि उधर देखो—" हमीद ने दाईं जानिब इशारा किया जहाँ दस अदद खतरनाक किस्म के ब्लड हाउंड खड़े हांप रहे थे— हमीद ने फिर कहा— "तुम मेरे पास से हटीं

और यह तुम्हारे हुस्न की दाद देना शुरू कर देंगे— खूबसूरत लड़कियों का गोश्त उन्हें बेहद मरगूब (पसंद) है—"
"हाए मैं कहीं की भी न रही—" लड़की रोहंसी होकर बोली— "तुम ने भी धोखा दिया—" "नहीं डार्लिंग मैं तुम्हारी पूजा किया करूँगा— आओ मेरे साथ—" हमीद उस का हाथ पकड़ कर....

368
बरआमदे की तरफ खींचने लगा।
"ये क्या करते हो— मैं शोर मचा दूँगी—"
"ज़रूर मचाओ— कोई यहाँ कदम रखने की भी हिम्मत नहीं करेगा— यहाँ हमारा राज है—" मेरी सिंगलटन बे-बसी से आगे बढ़ गई— हमीद उसे अंदर लेता हुआ चला गया— फरीदी अंदरूनी बरआमदे में मौजूद था— उसने इन दोनों को हैरत से देखा।
"हम दोनों चर्च से सीधे यहीं आ रहे हैं—" हमीद बड़े अदब से बोला— "अब हम दोनों को आशीर्वाद दीजिये—"
"क्या मतलब....?"
"पहले मैंने किसी निकाह-ख्व़ाँ ही को तलाश किया था मगर जब कोई नहीं मिला तो मजबूरन सिविल मैरिज कर ली—"
"ये जो कुछ भी कह रहे हैं ग़लत कह रहे हैं—" मेरी घबराए हुए लहजे में बोली— "मुझे ज़बरदस्ती पकड़ लाए हैं—"
"हाइँ.... तुम ये क्या कह रही हो डार्लिंग— मैं सर्टिफिकेट दिखा सकता हूँ और कोई भी अदालत उसे सही तस्लीम करने से इनकार नहीं करेगी—"
हमीद ने जेब से वही चाकलेट के टुकड़े निकाल कर उसे दिखाए जो उसी ने दिये थे और फिर बोला— "ये है सर्टिफिकेट और तुम्हारा पहला शौहर मय पोल होटल में बे-होश पड़ा है क्या समझें— अब सुकून से बैठ जाओ—"
हमीद ने उसे एक खाली कुर्सी में धकेल दिया।
"क्या किस्सा है?" फरीदी ने आहिस्ता से पूछा और हमीद ने किस्सा वहीं से शुरू कर दिया जहाँ से शुरू हुआ था।

यह दास्तान हमीद ने उर्दू में छेड़ी थी और मेरी का चेहरा धुआँ हो रहा था।

"और तुम मुझे बताए बगैर चले गए थे—" फरीदी ने कुछ सोचते हुए कहा— "यकीनन मुझसे गलती हुई थी—"

"नहीं तुम ने बहुत अच्छा किया था— वैसे अगर तुम मुझसे तज़किरा करते तब भी यही होता— ड्रेड ने इस बार बड़ी घटिया किस्म की चाल चली थी—"

"क्या मतलब....? मैं नहीं समझा—"

"ज़ाहिर है इस दावत-नामे पर मैं तुम्हें तन्हा भेजता और खुद छुप कर तुम्हारी निगरानी करता और...."

369

उस के आदमी मेरी निगरानी करते और फिर कहीं न कहीं हमारा फँसना लाज़मी था— मगर ड्रेड ने यह समझ लिया कि मैं आँखें बंद करके कुएँ में कूद जाऊँगा—"

फिर फरीदी लड़की की तरफ देखने लगा जो ख़ामोश बैठी हुई थी— आख़िर उसने कहा— "मैं तुम से इसके अलावा और कुछ नहीं पूछना चाहता कि उस रात तुम किस से ख़ौफ़ज़दा थीं जब कैप्टन हमीद को ज़हरीली सुई चुभोई थी—"

"मैं कैप्टन को बता चुकी हूँ मुखालिफ़ गिरोह वहाँ मौजूद था—"

"मगर ये ख़्वाब-आवर चाकलेट क्यों लिये फिर रही हो?"

"ओह.... तो ये बात है—" लड़की हँसने लगी— "शायद मैं ने ग़लती से ख़्वाब-आवर चाकलेट पेश कर दिये थे— इसलिये वह मोटा आदमी हमारे साथ नहीं आ सका— वरना वह तो कैप्टन को भी धमकियाँ दे रहा था— बात ये है जनाब कि मुझे बे-ख़्वाबी की शिकायत है और मैं ऐसे चाकलेट अपने पास रखती हूँ जिन्हें खाकर सो सकूँ—"

"बस इसे तो मुझे ही बख़्श दीजिये—" हमीद ने फरीदी से कहा लेकिन फरीदी ध्यान दिये बग़ैर ही बोला— "मेरी बात का सही जवाब दो— उस रात तुम किस से ख़ौफ़ज़दा थीं—"

"आप लोग पता नहीं क्या समझ रहे हैं— मेरी तबीयत ख़राब हो रही है—"

"मैं अच्छी कर दूँगा—" हमीद बोला— "लेकिन जब वह कुछ न बोली तो उसने कहा— "ड्रेड के आदमी तुम्हारी निगरानी करते रहे होंगे— लेकिन तुम इस ख़्याल में न

रहो कि वह यहाँ इस इमारत में भी भी रह सकेंगे— ड्रेड दो बार मेरे हाथों से शिकस्त खा चुका है— अगर ये उसकी बस की बात होती तो किसी सुबह मेरी लाश भी मसहरी पर मिलती— लेकिन वह जानता है कि यह न्यू मैक्सिको, टेक्सास, ओकलाहामा या अर्कांसस नहीं है—"
लड़की ख़ामोशी से उसकी तरफ देखती रही— अब उसके चेहरे पर ख़ौफ़ के आसार नज़र आने लगे थे—
"इसे फाटक तक छोड़ आओ—" दफ़अतन फरीदी हमीद की तरफ मुड़ा—
"क्यों....!" हमीद के लहजे में हैरत थी—
"मैं सिर्फ डॉक्टर ड्रेड को मुर्दा या ज़िंदा चाहता हूँ और उसके दो या तीन साथियों के अलावा और कुछ नहीं जानता कि वह कहाँ मिल सकेगा—"
"ये ज़रूर जानती होगी—"

370
"मुझे शुबह है—"
"क्यों— तुम हमें डॉक्टर ड्रेड का पता बताओ— मुमकिन है तुम्हें माफ़ कर दिया जाए—"
"मैं नहीं समझ सकती कि आप लोग किस किस्म की गुफ़्तगू कर रहे हैं—"
"इसे बाहर छोड़ आओ—" फरीदी गरज कर बोला— "मेरा और अपना वक्त बरबाद न करो—" हमीद इस तजवीज़ पर पागल हो गया था— मगर वह चुपचाप उठा और मेरी से भर्राई हुई आवाज़ में बोला— "उठो....!"
न जाने क्यों मेरी पहले से भी ज़्यादा ख़ौफ़ज़दा नज़र आने लगी थी—
"उठती क्यों नहीं, चलो—" हमीद झुंझला गया—
"नहीं.... मैं नहीं जाऊँगी—" वह कपकपाती हुई आवाज़ में बोली—
"अब क्या मैं इसे बाहर ले जाने के लिये ऊँट गाड़ी का इंतज़ाम करूँ?" हमीद पेशानी पर हाथ मार कर बोला—

फरीदी कुछ न बोला— उसने फिर किताब उठा ली थी—
"चलो.... खुदा के लिये उठो—" हमीद फिर उसकी तरफ मुतवज्जे हुआ—
"मैं नहीं जाऊँगी— इस तरह जाने से तो बेहतर यही है कि मैं यहीं खुदकुशी कर लूँ

— "

"तो फिर वह लोग तो यहाँ घुसने की हिम्मत नहीं कर सकेंगे— यह बहुत मुश्किल काम है कि वह अपने किसी आदमी को यहाँ से निकाल ले जा सकें—" फरीदी ने किताब पर से नज़र हटाए बगैर कहा—
"वह शख्स जिसकी मालूमात इतनी वसीअ (व्यापक) हों—" लड़की बड़बड़ाई— "उसे धोखा नहीं दिया जा सकता—"
हमीद बौखला कर फरीदी की तरफ देखने लगा— वह कुछ भी नहीं समझ सका था—
"लिहाज़ा बेहतर यही है कि जो कुछ मैं पूछूँ उसका सही जवाब दो—" फरीदी ने कहा लेकिन उसकी नज़र अब भी किताब पर थी—
"मैं तैयार हूँ—" लड़की ने बड़े ख़ुलूस से कहा और हमीद अपनी खोपड़ी सहला कर मुर्ग की बोली बोलता हुआ कुर्सी पर ढेर हो गया—
"उस रात तुम किस से ख़ौफ़ज़दा थीं?"
"फिंच और उसके साथियों से—"
"क्या वह मय पोल में मौजूद थे?"
"हमारे शुबहात के मुताबिक वह वहीं थे—"

371
"फिंच भी था?"
"हाँ.... वह भी था—"
"मगर वह तो अपने कद की बिना पर हज़ारों में पहचाना जा सकता है—" "पता नहीं वह किस तरह अपना कद लम्बा कर लेता है—"
"मैं जानता हूँ वह किस तरह अपने कद में तब्दीली कर सकता है—"

"मुझे भी बताइये—" हमीद बोल पड़ा— "वरना मैं अब गधों की सी आवाज़ें निकालना शुरू कर दूँगा—"

"उसकी उम्र ही सर्कस की मुलाज़मत में गुज़री है— क्या तुमने सर्कस के मसखरों को बाँसों पर चलते नहीं देखा— वह ऊँचे बाँस अपने पैरों पर बाँध कर चलते हैं— न सिर्फ चलते हैं बल्कि अक्सर इतनी तेज़ी से दौड़ते हैं कि देख कर हैरत होती है— फिंच इस फन का माहिर है— उसके पास लकड़ी के मसनूई (कृत्रिम) पैर हैं जिन्हें वह अपना कद घटाता-बढ़ाता रहता है—"

"आप बिल्कुल ठीक फ़रमा रहे हैं डॉक्टर का भी यही ख्याल है— लेकिन ये बात मेरी समझ में नहीं आती क्योंकि उसकी चाल में ज़र्रा बराबर भी बनावट नहीं महसूस होती

— "

"वह इस फन का माहिर है—" फरीदी बोला— चंद लम्हे खामोश रहा फिर उससे पूछा— "क्या तुम्हें इल्म है कि उन दोनों में क्यों ठन गई है—"

"आप को इस का भी इल्म होगा—"

"हाँ मुझे इल्म है और आज ही हुआ है— लेकिन मैं तस्दीक चाहता हूँ—"

"फिंच ने एक यतीम बच्ची की परवरिश की थी— उसे भी उसने सर्कस के लिये तरबियत दी थी और उसे अपनी ही बेटी समझता था— एक रात ड्रेड के आदमी ने उसे सर्कस से उठा लिया और दूसरी सुबह उसकी लाश सड़क पर पाई गई—"

"और वह सिर्फ तेरह साल की थी?"

"हाँ यह भी सही है—" लड़की की आँखों से आँसू बह चले थे— उसने भर्राई हुई आवाज़ में कहा— "ड्रेड ज़िंदा है मैं उससे नफरत करती हूँ— लेकिन उसके फंदे में फँसी हुई लड़कियाँ किसी तरह भी उससे पीछा नहीं छुड़ा सकतीं—"

"तुम फिंच के आदमियों की टोह में भी तो रही हो?"

"हाँ.... मैं थी— मगर मुझे उससे गहरी हमदर्दी है— मैं मजबूरन उसके खिलाफ काम..."

372

"करती रही हूँ— आज ही मैंने डॉक्टर ड्रेड को इत्तला दी है कि फिंच स्प्रिंग कॉलेज में है—"

"कहाँ?" फरीदी उसे घूरने लगा।
"स्प्रिंग कॉलेज में— अगर ड्रेड का एक आदमी मेरे साथ न होता तो मैं हरगिज़ उसे इसकी इत्तला न देती—"
"इस वक्त तुम्हारा क्या प्रोग्राम था?"
"यही कि कैप्टन हमीद को अर्जन पूरे के एक मकान में ले जाऊँ— इसके अलावा और कुछ नहीं जानती— मेरे बैग में दो तरह के चाकलेट थे— मैंने ग़लती से वह पैकेट निकाल लिया जो बाद के इस्तेमाल के लिये था— स्कीम यह थी कि मैं कैप्टन को साथ लेकर बाहर आऊँगी और वहाँ एक टैक्सी पहले से मौजूद होगी— जिसे हमारा ही एक आदमी ड्राइवर करता होगा— फिर टैक्सी में बैठ जाने के बाद मैं कैप्टन को ख्वाब-आवर चाकलेट पेश करती लेकिन खेल बिगड़ गया— कैप्टन किसी तरह भी अपनी मोटर साइकिल वहाँ छोड़ने के लिये तैयार नहीं हुए— उन्होंने कहा कि वह मोटर साइकिल ही से अर्जन पूरा चलेंगे—"
"तुमने फिंच के मुतल्लिक़ किस वक्त इत्तला दी थी और इत्तला देने का तरीका क्या था?"
"इसके लिये मैंने ट्रांसमीटर इस्तेमाल किया था क्योंकि ड्रेड ने पिछली रात अपनी कयाम-गाह तब्दील कर दी थी—"
"पिछली रात वह कहाँ था?"
"लड़की ने उसी इमारत का पता बताया जहाँ से आज एक लाश बरामद हुई थी—"
"मौजूदा कयाम-गाह कहाँ है—"
"अगर यह मालूम होता तो मैं ट्रांसमीटर क्यों इस्तेमाल करती—"
"अब तुम क्या चाहती हो?"
"यहाँ से चले जाने के अलावा और जो कुछ भी हो सके—"
फरीदी ने हमीद से कहा— "इसे तीसरी मंज़िल के किसी कमरे में पहुँचा दो—" हमीद उसे साथ लेकर चला गया और तकरीबन बीस मिनट बाद फिर वापस आ गया। "मैं दस मिनट बाद मर जाऊँगा—" वह कलाई की घड़ी देखता हुआ बोला। "क्यों....?"

"हार्ट फेल हो जाएगा—" हमीद ने लापरवाही से कहा— "आप यह तो बताने से रहे कि बाहर..."

373

हवाले देने की धमकी इतनी कारगर क्यों हुई थी—"

"बहुत मामूली सी बात है—" फरीदी मुस्कुरा कर बोला— "अमरीका की मुख्तलिफ रियासतों की पुलिस ने ड्रेड को उसी के आदमियों के ज़रिए पकड़ने की कोशिश की है — लिहाज़ा उसका जो साथी भी पुलिस के हाथों में पड़ने के बावजूद भी कभी आज़ाद देखा गया मुर्दा ही देखा गया— ड्रेड का यह असूल है कि किसी ऐसे साथी का वजूद बर्दाश्त नहीं कर सकता जिसे पुलिस सज़ा दिए बगैर छोड़ दे—"

"फिर अब हम इस लड़की का हलवा बनाएँगे या अचार डालेंगे?"

"उठो.... ज़रा स्प्रिंग कॉलेज तक हो आएँ—"

"और अगर वह भाग गई तो....?"

"वापसी पर तुम इसका हश्र देख ही लोगे—"

****

स्प्रिंग कॉलेज के छोटे से फाटक में दो आदमी दाखिल हुए— सारा अहाता बाग़ की तरह रोशन था— बरआमदे में खड़े हुए आदमी ने उन दोनों को कंपाउंड में दाखिल होते देखा और तेज़ी से उनकी तरफ बढ़ा लेकिन वह बरआमदे की तरफ जाने वाली रफ़्तार के बजाय बाईं जानिब मुड़ कर चहार दीवारी से लग गए थे— उन्हें ऐसा करते देख कर उस आदमी ने जेब से रिवॉल्वर निकाल लिया और झुक कर चलने लगा— चहार दीवारी से तकरीबन तीन चार फीट हट कर डोडोनिया की बाड़ का सिलसिला था— यह आदमी बाड़ के पीछे आ छुपा— उसकी नज़रें उन दोनों पर थीं जो दीवार के करीब झुके खड़े थे—

उन में से एक आदमी टॉर्च की रोशनी में दीवार पर कुछ तलाश कर रहा था— दफ़अतन उसने दूसरे से कहा— "रास्ता मिल गया—"

"कहाँ?" दूसरे ने पुर-इश्तियाक लहजे में पूछा—

"यह रहा....!" उसने उंगली से दीवार के एक सुराख की तरफ इशारा किया—
"आहा.... तो चलो....!"
"नहीं पहले तुम....!"
"वाह भाई.... पहले तुम....!"
"बेकार बहस कर के वक्त बरबाद न करो.... चलो....!"
"मैं तो पहले हरगिज़ नहीं जाऊँगा जिसने रास्ता दरयाफ्त किया है पहले वही कदम रखे—"

374
बाढ़ के पीछे छुपा हुआ आदमी हैरत से उन्हें देख रहा था।
"तुम चलते हो कि मैं दूसरा तरीक़ा इख़्तियार करूँ।"
"क्या तरीक़ा इख़्तियार करोगे— मैं भी तो देखूँ।"— दूसरे को शायद ग़ुस्सा आ गया था, छुपे हुए आदमी ने हैरत से देखा कि उन के हाथों में रिवॉल्वर थे और दोनों की नालें एक दूसरे की तरफ़ उठी हुई थीं।
"तुम्हारी यह जुर्रत—" एक बोला।
"हाँ! क्या मैं तुम से कमज़ोर हूँ।"— दूसरे ने कहा और बैक वक़्त दोनों के रिवॉल्वरो से शोले निकले।— बाढ़ के पीछे छुपा हुआ आदमी उछल कर इमारत की तरफ़ भागा। वह दिवानावार (पागल की तरह) दौड़ता चला गया और फिर अगर संभल न गया होता तो उस छोटे से आदमी से टकरा जाना लाज़मी था जो ख़ुद भी तक़रीबन दौड़ता हुआ सदर दरवाज़े की तरफ़ आ रहा था।
"ओह.... माफ़ कीजिएगा जनाब—" वह आदमी घबरा कर पीछे हटा।
"क्या बात है?" छोटे आदमी ने उसे घूरते हुए पूछा।
उसने हांफते हुए जल्दी-जल्दी पूरा वाक़िआ दोहरा दिया।
"ख़तरा....!" छोटा आदमी हाथ उठा कर बोला— "देखो! बाहर निकलने की कोशिश न करना— दरवाज़े बंद कर दो— हो सकता है यह जाल पुलिस ही ने बिछाया हो—"

"मगर जनाब! उन्होंने एक दूसरे पर गोलियाँ चलाईं थीं और ढेर हो गये थे—"

"तुमने उन्हें सिर्फ गिरते देखा होगा— ज़रूरी नहीं कि रिवॉल्वर असली ही रहे हों चलो.... ख़ामोशी से बैठो— मैं जा रहा हूँ— पुलिस तुम लोगों के ख़िलाफ़ कोई सबूत बहम (प्राप्त) नहीं पहुँचा सकती—"

नन्हा आदमी खिड़की से दूसरी तरफ़ सहन (आंगन) में कूद गया। कंपाउंड से फिर फ़ायर की आवाज़ आई और वह आदमी जहाँ था चुपचाप वहीं खड़ा रहा। फिर वह सदर दरवाज़े की तरफ़ दौड़ा और उसे बंद करने के बाद खिड़कियाँ भी बंद करने लगा— दो तीन फ़ायर और कुछ चीखें फिर सुनाई दीं।

इमारत में इसके अलावा चार आदमी और भी थे और यह भी ग़ैर-मुल्की ही थे।

"क्या क़िस्सा है?" एक ने उस से पूछा।

वह उसे बताने लगा— दो फ़ायर फिर हुए और उसने इस के मुतल्लिक नन्हे आदमी की राय का इज़हार किया।

"मगर पुलिस क्यों?" दूसरा आदमी बोला— "आख़िर उसे इस क़िस्म का ड्रामा खेलने की क्या ज़रूरत हो सकती है— वह लाज़मी तौर पर ड्रेड ही के आदमी होंगे—"

375

एक गोली आकर खिड़की के शीशे से लगी और वह चकनाचूर हो गया।

"सुनो!" वह आदमी दूसरे दरवाज़े की तरफ बढ़ता हुआ बोला— "वह लोग शहरी इलाक़े में देर तक गोलियाँ नहीं चला सकते— यह पुलिस ही मालूम होती है— लिहाज़ा हमारे पास जो असलाह (हथियार) हैं उनसे पीछा छुड़ा लेना ही चाहिये—"

वह सब एक बड़े कमरे में आए— अपने रिवॉल्वर निकाल कर मेज़ पर रखे और एक आदमी उन्हें बटोर कर रूमाल में बाँधने लगा— फ़ायरों की आवाज़ें अब भी आ रही थीं और फिर साथ ही किसी ने सदर दरवाज़ा पीटना शुरू कर दिया।

"जल्दी करो—" एक आदमी बोला और रिवॉल्वरों का रूमाल उठाता हुआ सहन (आंगन) की तरफ बढ़ा— दरवाज़ा पीटा जा रहा था—

उस आदमी ने सहन में खड़े होकर रिवॉल्वरों को दूसरी तरफ फेंक दिया— इससे पहले उसने अक़्बी (पिछले) दरवाज़े से झाँक कर इत्मीनान कर लिया था— दूसरी तरफ सन्नाटा

था— इस इमारत की तरफ आबादी नहीं थी बल्कि दूर तक खेतों के सिलसिले फैले हुए थे — शायद इसी बिना पर इस इमारत का नाम स्प्रिंग कॉलेज था—

वह फिर उसी कमरे में वापस आ गया— सदर दरवाज़ा अब भी पीटा जा रहा था—

"लेकिन दोस्त....!" एक आदमी ने बुरा सा मुँह बना कर कहा— "अगर वह पुलिस न हुई तो हम क्या करेंगे? रिवॉल्वर भी तुमने फिकवा दिये—"

"दरवाज़ा खोलो!" बाहर से एक गरजदार आवाज़ आई— "वरना दरवाज़ा तोड़ दिया जाएगा—"

वह पाँचों बहुत एहतियात से सदर दरवाज़े की तरफ बढ़े और एक ने भारी आवाज़ में पूछा— "कौन है?"

"पुलिस!.... दरवाज़ा खोलो—" बाहर से आवाज़ आई।

"हम कैसे यक़ीन कर लें जबकि बाहर डाकू मौजूद हैं— उन्होंने हमें लूटने की कोशिश की थी—"

"तुम दूसरी तरफ से भी नहीं निकल सकोगे—" बाहर से आवाज़ आई— "मकान का मुहासरा (घेराव) किया जा चुका है—"

"बड़ी मुसीबत है—" वह आदमी बुलंद आवाज़ में बड़बड़ाया— "इस देश में आकर जान सलामत ले जाना मुश्किल है—"

"हम दरवाज़ा तोड़ रहे हैं—" बाहर से आवाज़ आई और साथ ही दरवाज़ा इस तरह हिलाया जाने लगा।

376

जैसे सचमुच तोड़ डाला जाएगा।

"ठहरो! हम खोलते हैं।"— एक आदमी कह कर आगे बढ़ा।

"नहीं ठहरो जाओ—" दूसरा बोला— "उन्हें दरवाज़ा तोड़ने दो— अगर ये वही डाकू हुए तो क्या होगा? जिन्होंने हमें ख़ौफ़ज़दा करने के लिये फ़ायर किये थे—"

"यहाँ दो लाशें भी हैं जिनके लिये तुम्हें जवाबदेह होना पड़ेगा—" बाहर से आवाज़ आई।

"हमें किसी लाश का इल्म नहीं— वह हमारे आदमियों में से भी नहीं हो सकते क्योंकि हम सब अंदर मौजूद हैं—"

दरवाज़े पर चोटें लगाई जा रही थीं— ये पाँचों ख़ामोश खड़े रहे— जिस आदमी ने दरवाज़ा खोलना चाहा था बहुत ज़्यादा नर्वस नज़र आ रहा था— आख़िरकार दरवाज़ा टूट ही गया और वह पाँचों उछल कर भागे—
"ख़बरदार.... ठहरो.... वरना एक भी ज़िंदा नहीं बचेगा—" कर्नल फरीदी ने कहा— उसके हाथ में रिवॉल्वर था— वह रुक गए—
"अपने हाथ उठा लो—" फरीदी ने सख्त लहजे में कहा और उन्होंने ख़ामोशी से तामील की — उसके साथ कैप्टन हमीद के अलावा तीन आदमी और भी थे—
"तुम यहीं ठहरो—" उसने उनसे कहा और अंदर घुसता चला गया—
"आख़िर हम लुट ही गए—" एक आदमी कपकपाती हुई आवाज़ में बोला—
हमीद ने जेब से अपना कार्ड निकाल कर उसकी तरफ बढ़ा दिया और आहिस्ता से पूछा— "फिंच कहाँ है दोस्तो?"
"कैसा फिंच?" उसने हैरत से कहा— "हम किसी फिंच को नहीं जानते—"
"अच्छी बात है— चुपचाप खड़े रहो—" हमीद बोला— फिर अपने साथियों से कहा— "इनकी जामा तलाशी लो—"
"हम नहीं समझ सकते जनाब कि आप क्या चाहते हैं—" एक आदमी बोला— "हम पर ही डाकुओं ने हमला किया— हमें ही पुलिस परेशान कर रही है—"
"चुपचाप खड़े रहो—" हमीद ने उसे डाँटा—
कुछ देर बाद फरीदी वापस आ गया—
"फिंच निकल गया—" उसने पाँचों को घूरते हुए कहा— फिर मुस्कुरा कर बोला— "तुम शरीफ आदमियों..."

377
को हाथ लगाना भी मुश्किल होगा— क्यों! क्या ख्याल है?"
"हम बिल्कुल नहीं समझे जनाब—"
"बाहर दो लाशें हैं—"

"मैं उनके मुतल्लिक़ आपको कुछ बता सकूँगा मगर शायद आपको यक़ीन न आये—" एक आदमी ने कहा—

"यह मैं बाद में सोचूँगा कि यक़ीन आना चाहिये या न आना चाहिये—"

उसने जो कुछ भी देखा था बताया और कैप्टन हमीद बे-साख़्ता हँस पड़ा— मगर फरीदी की संजीदगी में कोई फ़र्क न आया—

"क्या फिंच इस वक्त यहाँ मौजूद था?" फरीदी ने सवाल किया और वह आदमी जो हमीद के क़हक़हे पर नर्वस हो गया था रोनी आवाज़ में कह गया— "जी हाँ—"

लेकिन फिर सँभलते में भी देर नहीं लगाई और जल्दी से बोला— "क्या पूछा था आपने?"

"कुछ नहीं— अब सिर्फ तुम यह बता दो कि फिंच यहाँ से कहाँ गया होगा?"

"जनाब वाला— मैं आपसे इस्तदआ (प्रार्थना) करूँगा कि इस नाम के मुतल्लिक़ हमें कुछ और भी बताइये— हम नहीं समझ सकते कि आप किसके मुतल्लिक़ पूछ-गछ कर रहे हैं—"

"इन चारों को हिरासत में ले लो—" फरीदी ने हमीद से कहा— "इनके पास यकीनी तौर पर पासपोर्ट होंगे— लेकिन चूंकि कंपाउंड में दो लाशें पड़ी हुई हैं इसलिये हम इन्हें इस वक्त तक हिरासत में रख सकते हैं जब तक कि इन लाशों के मुतल्लिक़ तफ्तीश जारी रहेगी—"

"यह सरासर ज़ुल्म होगा जनाब—"

"क्यों? क्या तुम्हारे मुल्क में मुश्तबा (संदिग्ध) आदमी बख्श दिये जाते हैं—" फरीदी ने उन्हें घूरते हुए कहा— "तुम अभी और इसी वक्त अपने हाथों से इस मकान को मुक़फ्फल (ताला बंद) कर के चुपचाप पुलिस की गाड़ी में बैठ जाओ— यहाँ दो क़त्ल हुए हैं और तुमने इख्तिलाफ-ए-बयानी (बयानों में अंतर) से काम लिया है—"

"हमने इख्तिलाफ-ए-बयानी से काम नहीं लिया—"

"पहले तुम कह रहे थे कि यहाँ डाकुओं ने हमला किया था और उसके बाद एक नाकाबिल-ए-यक़ीन दास्तान दोहरा दी—"

"आप यक़ीन कीजिये— मैंने अपनी आँखों से देखा था जैसे ही वह गिरे मैं अंदर भाग आया— फिर मुतअद्दिद (अनेक) फ़ायरों की आवाज़ें आईं और हमने दरवाज़ा बंद कर लिया

— "

फरीदी चंद लम्हे उन्हें घूरता रहा फिर सर हिला कर बोला— "कुछ भी हो मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता—"

378

थोड़ी ही देर बाद वह इमारत को मुक़फ़्फ़ल (ताला बंद) कराने के बाद उन्हें अपने साथ ले जा रहा था। उस का एक आदमी वहीं रुक गया था क्योंकि दोनों लाशें अभी वहीं पड़ी हुई थीं। वह उन्हें क़रीबी थाने भिजवा कर स्प्रिंग कॉलेज में वापस आ गया।

"आख़िर डॉक्टर ड्रेड के साथियों पर क्यों इतने मेहरबान हैं?" हमीद ने पूछा— "आप उस के आदमियों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं लेकिन फिंच के आदमी आप से न छूटने पाएँगे। हालाँकि अब मुझे भी इस चरख़ (दुष्चक्र) से हमदर्दी हो गई है और आप भी इस के लिये हमदर्दी ही का जज़्बा रखते होंगे।"

फरीदी कुछ न बोला— चंद लम्हे ख़ामोश रहा फिर उस ने कहा— "मैं ड्रेड के सिर्फ उन आदमियों को नज़रअंदाज़ करता हूँ जिन के मुतल्लिक़ मुझे यक़ीन होता है कि वह उस के बारे में कुछ न जानते होंगे।"

"और इस वक्त तो वह साफ़ निकल गये।"

"हाँ.... आह....!"

"बस धोखा खा गया— अंदर से दो फ़ायरों की आवाज़ें आईं और मैं समझा शायद खेल शुरू हो गया है। अगर कुछ देर और ख़ामोश रहता तो उन में से एक भी नहीं जा सकता था।"

"क्या आप को यक़ीन है कि फिंच के आदमी उस की क़याम-गाह से वाक़िफ़ हैं?"

"फिंच कुछ देर पहले यहीं था और वह पिछली दीवार से कूद कर फ़रार हुआ था। दूसरी तरफ़ नर्म ज़मीन पर उस के पैरों के निशानात देखने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ।"

"ये दोनों कम-बख़्त बहुत दिनों से दर्द-ए-सर बने हुए हैं—" हमीद बड़बड़ाया।

लेकिन उस ने दूसरे ही लम्हे में फरीदी को उछलते देखा। उस ने डोडोनिया की बाड़ की दूसरी तरफ़ छलांग लगाई थी— हमीद भी बे-इख़्तियार अंदाज़ में उसी तरफ़ झपटा लेकिन फिर अचानक उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे ज़मीन ने उस के पैर पकड़ लिये हों। क्योंकि उस ने एक नन्हे से आदमी को उछल कर दीवार पर चढ़ते देखा था। अगर वहां अंधेरा होता तो वह उसे कोई बंदर ही समझता।

नीला बैग

हमीद को इस की तवक़्क़ो (आशा) नहीं थी कि फाटक तक पहुँचने में जो वक्त सर्फ़ होगा उस के बाद उन्हें फिंच का साया भी मिल सकेगा लेकिन शायद फिंच ही इस मामले में चूक गया था— क्योंकि फाटक से निकलते निकलते...

379
हमीद की नज़र उस पर पड़ गई थी— मगर ठीक उसी वक्त फिंच ने आबादी के पीछे वाली झाड़ियों में छलांग लगाई— ये दोनों भी अपनी पूरी कुव्वत से दौड़ रहे थे— झाड़ियों में घुसे तो फिंच खाई के उस पार नज़र आया—
"ठहर जाओ—" फरीदी हमीद का हाथ पकड़ता हुआ बोला—
हमीद रुक गया— लेकिन उसे फरीदी की इस हरकत पर तअज्जुब (आश्चर्य) ज़रूर हुआ— और फिर जब नज़र उठाई तो वहां पर पत्थरों के पहाड़ टूट पड़े क्योंकि फिंच भी रुक गया था— और उस पार खाई के उस पार तारों की बाड़ों में वह साफ़ नज़र आ रहा था— हमीद ने जेब से रिवॉल्वर निकाला लेकिन फरीदी ने उसके हाथ पर हाथ रखते हुए आहिस्ता से बोला— "नहीं—"
"मैं उसे निगलने जा रहा था—" हमीद झुँझला गया— "आप ख़्वाह-मख़्वाह (बेकार में) परेशान हो गए—"
"बहुत दिलेर है हमीद साहब— बहुत दिलेर— मैं उसे छुप कर मारना पसंद नहीं करूँगा—"
"नहीं आप उसे कॉकटेल पार्टी दीजिये— मेरे बाप का क्या जाता है—"
"अरे आओ ना—" दूसरी तरफ से आवाज़ आई— "मैं ने बहुत दिनों से दौड़ नहीं लगाई— नामौक़अ (बेमौका) मिला है तो तुम लोग ढीले पड़ रहे हो—"
"ज़रा सुनिये— वह मच्छर की औलाद चैलेंज कर रहा है—"

फरीदी हँसने लगा— हमीद और ज़्यादा झुँझला कर बोला— "अगर आप महकमा सुराग़- रसानी (जासूसी विभाग) में न होते तो आप को सिर्फ किसी पागलखाने में ही मुलाकात हो सकती—"

"तुम ठीक कहते हो—" फरीदी ने आहिस्ता से कहा और फिर ख़ामोश हो गया—

फिंच जहाँ पहले था वहीं अब भी खड़ा था—

"हाइँ! यह क्या?" दफ़अतन हमीद के मुँह से बे-इख़्तियार (अचानक) तौर पर निकला— न जाने किधर से निकल कर चार आदमियों ने फिंच पर हमला कर दिया था—

"क्या ये आप के आदमी हैं?" हमीद ने फरीदी का बाज़ू पकड़ कर कहा—

"नहीं.... ओह....!" फरीदी ने मुज़तरबाना (बेचैन) अंदाज़ में कहा और रिवॉल्वर निकाल कर फ़ायर कर दिया— एक लम्हे के लिये ऐसा मालूम हुआ जैसे उन के हाथ रुक गए हों लेकिन फिर वह खेतों में कूद गए— लिहाज़ा वह उन्हें नहीं देख सकते थे—

दफ़अतन उन्होंने यके-बाद-दीगरे (एक के बाद एक) तीन चीखें सुनीं और फरीदी खाई में उतर गया— हमीद ने भी उसका साथ देना चाहा लेकिन झाड़ियों में उलझ कर मुँह के बल नीचे चला गया— फिर जितनी देर में वह उठता

380

फरीदी नज़रों से गायब हो चुका था— वह उठ कर फिर दौड़ा— उसे चोटें सहलाने का भी होश नहीं था— वह अपनी दानस्त (समझ) में हैरत अंगेज़ फुर्ती के साथ खाई की दूसरी तरफ पहुँचा—

लेकिन यहाँ उसे सिर्फ फरीदी नज़र आया—

"पाँच हुए—" उसने कहा—

"क्या पाँच हुए?" हमीद ने हाँपते हुए पूछा—

"मरने वाले—" फरीदी का मुख़्तसर सा जवाब था—

फिर हमीद की नज़र उन तीन आदमियों पर पड़ी जो ज़मीन पर पड़े हुए थे—

"क्या ये मर गये?" हमीद ने बौखला कर पूछा—

"हाँ....!"

"मगर.... आपने शायद हवाई फ़ायर किया था?"

"तुम इस वक्त कहाँ हो?" फरीदी ने तल्ख़ लहजे में कहा—

हमीद झुक कर लाशों को देखने लगा— फरीदी कह रहा था— "इन्हें खंजर से हलाक किया गया है और ये इतने मशाक़ (अनुभवी) हाथों का करिश्मा है कि ये शायद एक मिनट भी ज़िंदा नहीं रह सके— तीनों ज़ख्म दिल के मुकाम पर हैं—"

"और ये हैं कौन?"

"ड्रेड के आदमियों के अलावा और कौन हो सकते हैं—"

"उफ.... फूह.... तो ये फिंच था— लेकिन हर हाल में इसकी ज़िम्मेदारी आप पर आयद (लागू) होती है— आपने उसे निकल जाने दिया—"

"मैंने उसे निकल जाने दिया?" फरीदी ने हैरत से दोहराया—

"यक़ीनन.... न आप देर लगाते.... और न....!"

"और न हम दोनों भी ज़िंदा रहते—" फरीदी ने जुमला पूरा कर दिया— "ड्रेड के आदमी यहाँ छुपे हुए थे— क्या तुम अंधेरे से आये हुए तीर का रुख मोड़ सकते हो— मैं तो कम अज़ कम इस बात का दावा नहीं कर सकता कि धोखे से किये गये हमले से भी बच जाऊँगा — मगर इतना ज़रूर कहूँगा कि इस वक्त महज़ दिमाग़ ठंडा रखने का आदी होने की बिना पर बाल-बाल बच गया—"

हमीद कुछ नहीं बोला— वह सोच रहा था कि अगर वह इस मौके पर तन्हा होता तो क्या होता— शायद इसका वही अंजाम होता जिसकी तरफ अभी फरीदी ने इशारा किया था— फिंच का चैलेंज वह कभी न बर्दाश्त कर सकता और फिर....

381

रहे जो कुछ भी होता।

"यह फिंच हक़ीक़तन डॉक्टर ड्रेड से भी ज़्यादा ख़तरनाक है— मेरे अंदाज़े आज तक ग़लत नहीं हुए—" हमीद को गोया साँप सूँघ गया था।

"बेकार है—" फरीदी सर हिला कर बोला— "अब हम उसकी गर्द को भी न पा सकेंगे— पहले भी अगर वह चाहता फ़रार हो सकता था मगर न जाने क्यों वह स्प्रिंग कॉलेज में वापस आ गया था— आहा ठहरो.... क्या वह वहाँ से कोई ख़ास चीज़ ले जाना भूल गया था— आओ जल्दी करो— आख़िर वह वापस क्यों आया था और शायद यहाँ इस तरह चैलेंज करने का

मक़सद भी यही था कि वह हमें झकानियाँ दे कर फिर स्प्रिंग कॉलेज में जा घुसे—" उन्होंने बड़ी तेज़ी से खाई पार की और स्प्रिंग कॉलेज की तरफ़ चल पड़े— हमीद के ज़हन में थोड़ी ही देर में अच्छी-ख़ासी बर्फ़ बारी हो गई थी और उसने अब कुछ सोचना ही छोड़ दिया था— उसे इतना भी क्या— हालात बड़ी तेज़ रफ़्तारी से रुख़ बदल रहे थे— वह फिर स्प्रिंग कॉलेज में वापस आए— उन के महकमे का वह आदमी वहीं मौजूद था जहाँ वह उसे छोड़ गए थे।

"उधर कोई आया तो नहीं?" फरीदी ने उस से पूछा।

"नहीं जनाब!" उसने जवाब दिया।

"आओ....!" फरीदी हमीद से कहता हुआ आगे बढ़ गया लेकिन फिर रुका और मुड़ कर उस आदमी से कहा— "किसी को भी कंपाउंड में क़दम मत रखने देना— ख़ाह वह कोई सरकारी आदमी हो ख़ाह ग़ैर सरकारी—"

"बहुत बेहतर.... जनाब....!" उसने कहा और फाटक की तरफ़ बढ़ गया।

"मगर दरवाज़ा तो आप मुक़फ़्फ़ल (ताला बंद) कर चुके हैं—" हमीद बुदबुदाया।

"फ़िक्र मत करो— इसी लिये मैंने उसे यह हिदायत दी है— क़ुफ़्ल (ताला) खोलना पड़ेगा—" बरआमदे में पहुँच कर फरीदी ने वहाँ की रोशनी बुझा दी। हमीद जानता था कि उसे क़ुफ़्ल खोलने में कोई दुश्वारी पेश नहीं आएगी क्योंकि इस क़िस्म के आले (औज़ार) हर वक़्त उसकी जेब में पड़े रहा करते थे। दो मिनट के अंदर ही अंदर वह इमारत में थे।

****

डॉक्टर ड्रेड किसी ज़ख़्मी भेड़िये की तरह ग़र्रा रहा था और क्रैग उसके सामने खड़ा इस तरह

382
काँप रहा था जैसे उसे दूसरे ही लम्हे सफ़र-ए-आख़िरत का ख़दशा (डर) हो।
"मैं तुम सब को मौत के घाट उतार दूँगा।"

"डॉक्टर ड्रेड.... इंसाफ़ पसंद है।"— क्रैग काँपता हुआ बोला।
"हाँ मैं पूरा-पूरा इंसाफ़ करूँगा।"
"देखिये डॉक्टर.... आज फिंच ख़त्म ही हो जाता.... मगर वह फरीदी आ कूदा—"
"वह भी तुम्हारी ही वजह से आ कूदा— मैं पूरा-पूरा इंसाफ़ करूँगा।"
"मेरी वजह से क्यों डॉक्टर?"
"मेरी सिंगलटन जानती थी कि फिंच स्प्रिंग कॉलेज में है।"
"लेकिन मुझे क्या इल्म कि वह जानती थी।"
"तुमने मुझसे मशवरे के बग़ैर वह स्कीम बनाई ही क्यों थी— मैं इंसाफ़ पसंद हूँ और पूरा-पूरा इंसाफ़ करूँगा।"
दफ़अतन अलमारी में रखे हुए फोन की घंटी बजी और डॉक्टर ड्रेड उधर मुतवज्जह (आकर्षित) हो गया।
"कौन है?" वह माऊथ पीस में ग़र्राया।
"सैम स्पीकिंग डॉक्टर....!"
"क्या बात है?"
"जिस नीले बैग के मुतल्लिक़ आपने पूछा था वह संदूक में मौजूद नहीं है।"
"क्या बकते हो.... दोबारा तलाश करो—"
"आप सुनते तो सही— उसकी बजाय दफ़्ती का एक डिब्बा मिला है जिस पर तहरीर (लिखावट) है 'फिंच की तरफ़ से डॉक्टर ड्रेड के लिये तोहफ़ा—' और उस डिब्बे में एक सड़ा हुआ आलू है।"
"मगर उसकी रसाई (पहुँच) संदूक तक कैसे हुई?" ड्रेड दहाड़ा।
"उसका जवाब क्रैग ही दे सकेगा डॉक्टर— वह बड़ी लापरवाहियाँ बरत रहा है और हर वक़्त डॉली के चक्कर में रहता है— अभी कुछ देर पहले वह दोनों ऊधम मचाए हुए थे।" "ओह.... तो इसका मतलब यह है कि फिंच इस क़ियाम-गाह (ठिकाने) से भी वाक़िफ़ है?" "इसके अलावा और क्या कहा जा सकता है.... डॉक्टर....!"
"अच्छा....!" ड्रेड रिसीवर रख कर क्रैग की तरफ़ मुड़ा लेकिन जो कुछ भी देखा कम अज़ कम उसके लिये तो ग़ैर-मुतवक़्क़ो (अनपेक्षित) ही था— क्रैग के काँपते हुए हाथ में रिवॉल्वर था और वह अब भी उसी तरह...

383

काँप रहा था—

"अब इंसाफ़ नहीं हो सकेगा.... डॉक्टर....!"— उसने बिल्कुल इसी तरह काँपती हुई आवाज़ में कहा जैसे जाड़े से बुख़ार आ गया हो—

"नहीं होगा—" डॉक्टर ड्रेड मुस्कुराया— "तुम अपना हाथ तो देखो— क्या इस हाथ से तुम मुझ पर फ़ायर कर सकोगे— वैसे मैं तुम्हारी इस दिलेरी की दिल से क़द्र करता हूँ— ड्रेड पर रिवॉल्वर उठाना आसान काम नहीं है— इस दिलेरी के एवज़ (बदले) में मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया.... और.... इस के एवज़.... डॉली भी तुम्हें दी जाती है—"

क्रैग हैरत से मुँह खोले सुनता रहा—

"मैं अपने बचे-खुचे आदमियों को ज़ाया (बर्बाद) नहीं करना चाहता वरना मैं तनहा रह जाऊँगा—" ड्रेड नरम लहजे में बोला— "आइंदा जो कुछ भी करो सोच समझ कर करो—"

"मम.... मैं.... बहुत मोहतात (सावधान) रहूँगा डॉक्टर....!"— क्रैग हकलाया—

"यक़ीनन.... वरना अब कोई ठोकर हम सब को ग़ारत (बर्बाद) कर देगी— खैर हाँ.... अब फिंच के लिये एक ही तदबीर रह गई है— तुम वह अलमारी खोलो और ऊपरी ख़ाने से वह ट्यूब निकालो जिस में सुर्ख़ रंग का तरल भरा हुआ है—"

क्रैग ने रिवॉल्वर जेब में रख लिया और बड़े सआदत-मंदाना (आज्ञाकारी) अंदाज़ में अलमारी की तरफ़ बढ़ा— उस का हैंडल पकड़ कर दरवाज़ा खोला और ऊपरी ख़ाने में ट्यूब तलाश करने लगा—

"ओह.... जी हाँ.... मिल गया—"— वह शीशे का ट्यूब लिये हुए मुड़ा जिस में सुर्ख़ रंग का सियाल (तरल) भरा हुआ था—

"ठीक.... उसे खूब हिला कर रोशनी के रुख़ देखो कि इस में सफ़ेद ज़र्रात (कण) हैं या नहीं—"

वह उसे मुट्ठी में पकड़ कर हिलाने लगा फिर बल्ब की तरफ़ उठा कर देखने लगा— लेकिन दूसरे ही लम्हे वह ट्यूब एक हल्की सी आवाज़ के साथ फटा और सुर्ख़ सियाल की बौछार उस के चेहरे पर पड़ी—

"आग.... आह....!"— वह किसी जानवर की तरह चीख़ कर ज़मीन पर ढेर हो गया—

उस के दोनों हाथ आँखों पर थे और वह बुरी तरह तड़प रहा था—

"मार डाला.... सुअर.... कमीने.... कुत्ते!"— गालियाँ उस के मुँह से उबलती रहीं और वह तड़पता रहा—

डॉक्टर ड्रेड बे-हिस-ओ-हरकत (स्थिर) खड़ा था और उस के होठों पर एक सफ़ाक (क्रूर) सी मुस्कराहट थी— क्रैग इसी तरह चीख़ता और तड़पता रहा—

384

डॉक्टर ड्रेड की आँखों में कुछ इस क़िस्म की चमक लहरें ले रही थी जैसे वह उस का मरग़ूब तरीन (पसंदीदा) खेल हो। क्रैग की आवाज़ मुज़्महिल (कमज़ोर) होती गई और आख़िरकार उस की गर्दन झटके के साथ एक तरफ़ जा पड़ी। वह ठंडा हो चुका था— उस की दोनों आँखें बह गई थीं।

"ड्रेड का इंसाफ़—" डॉक्टर होंठों ही होंठों में बड़बड़ाता हुआ फोन की तरफ़ मुड़ गया।

"हैलो.... सैम....!" वह माऊथ पीस में कह रहा था— "हमें यह इमारत इसी वक्त खाली कर देनी चाहिये— नंबर तीन में चलो— नीला बैग अगर न मिला तो समझो सारी मेहनत बर्बाद हो गई— अब फिंच को हर क़ीमत पर मर जाना चाहिये— वह इस क़याम-गाह से भी वाक़िफ़ हो गया है— हो सकता है कि वह पुलिस की रहबरी के फ़राइज़ (कर्तव्य) अंजाम दे डाले और मैं उस वक्त तक पुलिस का सामना नहीं करना चाहता जब तक बेगम इरशाद वाला मसला न तय हो जाए.... तुम्हें डॉली पसंद है ना....?"

"न.... नहीं.... ज.... जनाब....!" दूसरी तरफ़ से हकलाहट सुनाई दी।

"नहीं वह तुम्हें पसंद है— वह तुम्हें बतौर इनाम दी जाती है—"

"ओह.... डॉक्टर.... मैं किस तरह आप का शुक्रिया अदा करूँ— मगर क्रैग मेरा दुश्मन हो जाएगा—"

"क्रैग....!" वह मुड़ कर लाश की तरफ़ देखता हुआ बोला— "मुझे अफ़सोस है कि क्रैग अब इस दुनिया में नहीं— नाइनटी थ्री (93) का ट्यूब टेस्ट करते वक्त उस की मौत वाक़िअ हो गई— ट्यूब फट गया.... खैर.... हाँ तो.... नंबर तीन में शिफ्ट करने की तैयारी करो—"

"बहुत.... बहुत.... अच्छा.... जनाब!" दूसरी तरफ़ से फँसी फँसी सी आवाज़ आई और डॉक्टर ड्रेड ने रिसीवर रख दिया।

****

फरीदी और हमीद ने स्प्रिंग कॉलेज की तलाशी लेनी शुरू कर दी थी— लेकिन यह काम बहुत एहतियात से हो रहा था— उन्होंने कमरों में रोशनी नहीं की थी बल्कि टॉर्चों की मद्धम सी रोशनी में देख भाल कर रहे थे।

हमीद का दिल इस काम में ज़र्रा बराबर भी नहीं लग रहा था— अगर फरीदी साथ न होता तो शायद वह भाग ही निकलने में आफ़ियत (भलाई) समझता— यह बात नहीं थी कि वह डरपोक था— उसे इस की परवाह नहीं थी कि अंधेरे में किसी की गोली उस का मग़ज़ भी फाड़ सकती है—

वह तो उकताया हुआ था— यह चीज़ उस की फ़ितरत-ए-सानिया (दूसरी आदत) बन गई थी— अगर कोई काम उस की मर्ज़ी या तवक़्क़ो (आशा)...

385

ताबिक़ नहीं होता था तो उस की उकताहट हमेशा बढ़ जाया करती थी। वह समझता था कि फिंच इस वक़्त पकड़ लिया जाएगा मगर उस की तवक्क़ोआत (उम्मीदों) के मुताबिक़ वह हक़ीर कीड़ा न पकड़ा गया। इस के अलावा चलते-चलाते उस के चैलेंज ने तो उसे ज़हनी तौर पर बिल्कुल निढाल कर दिया था। एक छह फ़ीट का चरख़ सा आदमी फरीदी को चैलेंज कर के निकल जाए। हमीद का दिल चाह रहा था कि वह कम अज़ कम उसे एक गोली मार दे जिस ने इस वक़्त आलमगीर शोहरत को बट्टा लगाया था। हक़ीक़त यह थी कि हमीद हर दौर-परस्ती के मामले में आम ज़हनी सतह से बुलंद नहीं था। वह यह नहीं पसंद करता था कि उस की पसंदीदा हीरो की शख्सियत में किसी क़िस्म की झोल नज़र आ सके।

बे-दिली के साथ इधर-उधर चलता रहा,

आख़िर फरीदी ही ने कहा— 'तुम बहुत सुस्त नज़र आ रहे हो?'"

"जी हाँ— इस वक़्त मैं ने एक इंतिहाई दिलेर आदमी की मिट्टी पलीद होते देखी है—"

"ओह हो.... क्या तुम मुझे टार्ज़न या हंटर वाली का बेटा समझते हो?"— फरीदी ने हँस कर कहा।

"आप के लिये यह बड़ी बात न होगी.... लेकिन मैं.... मेरा दिल चाह रहा है कि खुदकुशी कर लूँ—"

"यहाँ नहीं.... पहले ही से पाँच लाशों के उठवाने की फ़िक्र है—"— फरीदी ने कहा और उस के टॉर्च की बारीक सी शुआअ (किरण) अंधेरे में इधर-उधर रेंगती रही।

अचानक हमीद ने टॉर्च उस के हाथ से गिरते देखी और दरवाज़े की तरफ़ झपटा।

"रोशनी.... हमीद....!"— उस ने दरवाज़े के बाहर छलांग लगाते हुए कहा।

हमीद टॉर्च उठाने के लिये झुका ही था कि मुँह के बल नीचे चला गया। किसी ने उस की टांगों में फंदा डाल कर खींच दिया था।

"मैं ने देख लिया है फिंच है—"— फरीदी ने कमरे के बाहर से कहा— "तुम कमरे से निकल सकते हो—"

हमीद बड़ी फुर्ती से उठा। फिंच उसी कमरे में मौजूद था लेकिन वह एक दीवार से जा लगा। क्योंकि कमरे में गुप अंधेरा था। टॉर्च भी उस के हाथ नहीं आ सकी थी। उस ने अपनी टॉर्च के लिये कमरे में हाथ डाला लेकिन वहाँ न टॉर्च थी और न रिवॉल्वर। शायद इसी वक़्त दोनों उस की जेब से निकल गये थे जब वह गिरा था।

"फिंच खुद को मेरे हवाले कर दो—"— फरीदी ने बाहर से कहा।

"तुम दरवाज़े के पास से हट जाओ दोस्त—"— हमीद ने फिंच की आवाज़ सुनी— "वरना तुम्हें अपनी लाश भी यहाँ से उठवानी पड़ेगी, तुम लोगों से मेरा कोई झगड़ा नहीं है

— "

386

हमीद आहिस्ता-आहिस्ता आवाज़ की तरफ़ रेंगने लगा। लेकिन दूसरे ही लम्हे में उस ने फरीदी की आवाज़ सुनी— "ऐसा मालूम हुआ जैसे वह गिरते-गिरते संभल गया हो। "फिंच मैं गोली मार दूँगा.... ठहरो—"

फिर दौड़ने की आवाज़ आई और हमीद बड़ी तेज़ी से बाहर निकला। इमारत का अक़्बी (पिछला) दरवाज़ा जो सहन की एक दीवार में था खुला हुआ मिला। हमीद ने फरीदी को आवाज़ें दीं लेकिन जवाब नदारद। आख़िर वह दरवाज़े के पास ही रुक गया। वह यह फैसला नहीं कर पाया था कि उसे क्या करना चाहिये कि फरीदी उसी दरवाज़े से अंदर दाख़िल हुआ। यहाँ भी अंधेरा था लेकिन तारों की छाँव में वह कम अज़ कम फरीदी को तो पहचान ही सकता था।

"देखो.... बरामदे में स्विच बोर्ड है.... रोशनी कर दो.... वह कमबख़्त मेरी टांगों के नीचे से निकल गया।"

हमीद ने जल्दी ही स्विच बोर्ड तलाश कर लिया और सहन में रोशनी फैल गई। उस ने फरीदी को झुक कर कुछ उठाते देखा। वह भी उसके करीब पहुँच गया। यह नीले रंग के चमड़े का एक छोटा सा बैग था।

"वह यही ले जा रहा था—" फरीदी ने कहा— "लेकिन दीवार पर चढ़ते वक्त यह उस के हाथ से निकल गया। ख़ुदा की क़सम वह बड़ा फुर्तीला है— बंदरों से भी तेज़। पहले उस ने मेरे हाथ पर पत्थर मार कर टॉर्च गिरा दी थी और फिर उसी कमरे से यह बैग ले भागा। क्यों? इस बार तो मौका ही मौका था लेकिन तुमने उसे पकड़ा क्यों नहीं?"

हमीद कुछ न बोला और फरीदी ने हँस कर कहा— "क्या पहले भी कभी ऐसा मुजरिम नज़रों से गुज़रा है— बख़ुदा मुझे तो बाज़ औकात उसकी इन हरकतों पर प्यार आता है.... कितना बे-जिगर है—"

नन्हा फितना

बेगम इरशाद ने खिड़कियों के पर्दे खींच दिये और शब-ख़्वाबी (सोने) का लिबास पहन कर मसहरी की तरफ़ बढ़ीं लेकिन फिर उसे रुक जाना पड़ा क्योंकि एक गोशे (कोने) में रखे हुए फोन की घंटी बजने लगी थी।

"हैलो....!" उस ने जमाही लेते हुए कहा।

"कौन है?" दूसरी तरफ़ से आवाज़ आई।

387

"बेगम इरशाद....!"

"अच्छा.... अनवर बोल रहा हूँ बेगम इरशाद—"

"क्या बात है?" बेगम इरशाद ने ग़ैर मुतवक़्क़ो (अनपेक्षित) तौर पर नर्म लहजे में पूछा।

"मैं वह दो हज़ार रुपये वापस करना चाहता हूँ जो शाहिना ने मुझे दिये थे—"

"मुझे रुपयों से कोई सरोकार नहीं—"
"ज़ाहिर है कि जब मैं शाहिना के लिये काम नहीं कर रहा हूँ....!"
"क्यों नहीं कर रहे हो?" बेगम इरशाद ने बात काट दी।
"नहीं! मैं नहीं चाहता कि उन पर पागलपन के दौरे पड़ते रहें—"
"तुम्हारा जो दिल चाहे करते रहो— लेकिन कोठी की तरफ़ रुख़ न करना और शाहिना से भी मत मिलो—"
"फिर मैं क्या कर सकूँगा बेगम इरशाद— मुझे वाक़िआत का भी तो इल्म नहीं है—" "मैं तुम्हें दस हज़ार का आफ़र देती हूँ— एक आदमी को तलाश करना है—"
"मैं तैयार हूँ—"
"मगर पुलिस को इस का इल्म न होने पाये—"
"किस बात का इल्म?"
"यही कि तुम उस आदमी की तलाश में हो—"
"हो सकता है बशर्ते कि उस दस हज़ार में उस का क़त्ल भी शामिल न हो—"
"नहीं यह कोई ऐसा मामला नहीं है जिस के लिये क़त्ल ज़रूरी हो—"
"उस की तलाश क्यों ज़रूरी है?"
"दस हज़ार रुपये का आफ़र इस लिये नहीं है कि तुम्हें ग़रज़-ओ-ग़ायत (उद्देश्य) भी बताई जाये—"
"अच्छी बात है— मैं ग़रज़-ओ-ग़ायत से कोई सरोकार नहीं रखूँगा— आप उस आदमी के नाम और निशान से तो मट्लब (सूचित) कीजिये—"
"नाम.... मुझे याद नहीं लेकिन उस के दाहिने हाथ के पोरुवे के बराबर एक गहरा सुर्ख़ निशान है— तुम उसे अर्जुनपुरा या शहर की दूसरी बस्तियों में तलाश कर सकते हो—"
"बस इतना ही.... या और कुछ?"
"उस के मुतल्लिक़ बस इतना ही मुझे मालूम है—"
"तब तो दस हज़ार बहुत कम हैं— बेगम इरशाद मुझे कम अज़ कम तेरह लाख आदमियों की आस्तीनें उलटनी

388

पड़ेंगे। दो आने फी कस (व्यक्ति) तो दीजिये ताकि मैं भी इनकम टैक्स अदा करने के काबिल हो सकूँ—"
"क्या तुम मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो?" बेगम इरशाद बिगड़ गईं।
"नहीं बेगम साहिबा— यह बहुत मुश्किल काम है— आप भी तो इतनी रातों से भटकती फिर रही हैं फिर क्या उस का सुराग मिल सका?"
"ठीक कह रहे हो— यह मुश्किल काम है लेकिन मैं दस हज़ार से ज़्यादा के आफ़र की पोजीशन में नहीं हूँ—"
"मैं आप का यह काम मुफ्त भी कर सकता हूँ मगर ठहरिये क्यों न मैं उस ब्लैक मेलर ही की गर्दन लूँ—"
"ब्लैक मेलर....!" बेगम इरशाद ने हैरत से दोहराया— "क्या तुम उसे जानते हो?" "नहीं.... लेकिन अगर कोशिश करूँ तो यह मेरे लिये कोई मुश्किल बात न होगी—"
"तुम ने कर्नल फरीदी से भी इन बातों का तज़किरा किया था?"
"नहीं.... लेकिन आप के ख़िलाफ़ एक रिपोर्ट ज़रूर लिखवाई थी—"
"कर्नल फरीदी उस के लिये यहाँ पूछताछ करने आया था— क्या तुम ने यह भी लिखवाया था कि कोई मुझे ब्लैक मेल कर रहा है?"
"हरगिज़ नहीं— यह तो मेरा केस था— उस का तज़किरा मैं कैसे कर सकता था— शाहिना ने उसी ब्लैक मेलर का पता लगाने के लिये मुझे दो हज़ार दिये थे— रिपोर्ट तो मैं ने इस लिये लिखवाई थी कि आप मेरे ख़िलाफ़ कोई कानूनी कार्रवाई न कर सकें—"
"खैर इस पर ख़ाक डालो.... अब मैं तुम से कहती हूँ कि अगर उस ब्लैक मेलर का पता लगा सको तो उस के लिये तुम्हें हज़ार का आफ़र है—"
"आप उसे नहीं जानतीं?"
"नहीं अब तक मैं ने सिर्फ उस की आवाज़ सुनी है—"
"और वह लहजे से कोई गैर मुल्की मालूम होता है—"
"ओह.... उस के मुतल्लिक़ तुम मुझसे कम नहीं जानते—" बेगम इरशाद ने एक तवील (लंबी) सांस ले कर कहा— "लेकिन अनवर.... तुम उस वक्त तक कोठी में कदम नहीं रखोगे जब तक कि वह ब्लैक मेलर तुम्हारे हाथ न आ जाये—"
"वह आप से कितनी रक़म तलब कर रहा है?"

389

"दो करोड़....!"

"इस की चौथाई मुझे क़ारून बना सकती है— काश मैं भी किसी मामले में आपको ब्लैकमेल कर सकता—"

"उसी ब्लैकमेलर से मिल जाओ—" बेगम इरशाद ने तल्ख़ लहजे में कहा।

अनवर हँसा और फिर बोला— "लेकिन दावत वाली रात आपने यक़ीनन उसे देखा होगा?"

"हालात से यही ज़ाहिर होता है कि मैंने उसे देखा होगा लेकिन यह हक़ीक़त है कि मैं उसे नहीं देख सकी— उसका एक ख़त मुझे मिला था और उसी के साथ वह सुई भी थी— मुझे मजबूरन वही करना पड़ा जो कुछ ख़त में तहरीर था— अगर ऐसा न करती तो और न जाने किस बेइज़्ज़ती का सामना करना पड़ता— उस वक्त अगर वह तुम्हें क़त्ल करने को भी कहता तो मैं इनकार न कर सकती—"

"शुक्रिया—"

"तुम खुद को मेरी जगह रख कर सोचो—"

"लेकिन यह आप न बतायेंगी कि वह किस सिलसिले में आपको ब्लैकमेल कर रहा है?"

"नहीं—" बेगम इरशाद ने सख़्त लहजे में कहा और सिलसिला मुनक़़तअ (तोड़) कर दिया।

****

यह एक बड़ी इमारत थी और इसके चारों तरफ़ मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) फलों के बाग़ात थे— इमारत क़दीम (पुराने) तर्ज़ का नमूना थी मगर फिर भी शानदार— कोई नहीं कह सकता था कि इसका मकीन (रहने वाला) मग़रिबी (पश्चिमी) मुल्क का बाशिंदा होगा और डॉक्टर ड्रेड के मुतल्लिक़ भी नहीं कहा जा सकता था कि वह पुराने तर्ज़-ए-मुआशरत (रहने-सहने के ढंग) का दिलदादा एक मशरिक़ी (पूर्वी) आदमी नहीं है— उसके चेहरे पर घनी स्याह दाढ़ी थी और जिस्म पर लंबा लबादा— कभी-कभी वह अक़ाल और हंदेल (अरबी पहनावा) इस्तेमाल करता था और इस बड़ी इमारत के ज़ेर-ए-साया (छाया में) रहने वाले "छोटे" आदमी उसे कोई अरब समझते थे।

उसके साथियों की वज़अ-क़तअ (बनावट) भी अरबों की सी थी और उसकी महबूबाएँ परदे में रहती थीं— यह इमारत एक जागीरदार से किराये पर हासिल की गई थी।

अगर यह कहा जाए तो ग़लत न होगा कि डॉक्टर को यह सब कुछ फिंच की वजह से करना पड़ा था— रहा पुलिस का मामला तो वह दुनिया भर की पुलिस को अपना खिलौना समझता था— हालाँकि फरीदी के हाथों उसे दो बार शिकस्त हो चुकी थी लेकिन वह उससे इतना ज़्यादा ख़ाइफ़ (डरा हुआ) नहीं था—

वह फिंच को हक़ीर (तुच्छ) भी समझता था और उससे ख़ाइफ़ भी था— उस वक्त भी उसी के मुतल्लिक़ ख़यालात....

390

में उलझा हुआ बाग़ में टहल रहा था। अगर उसे फिंच की मौजूदा जाए-रहाइश (रहने की जगह) का इल्म हो जाता तो उसे फ़ना कर देने के लिये एड़ी चोटी का ज़ोर लगा देता। और वह इस की तरफ़ से भी मुतमइन (संतुष्ट) नहीं था कि फिंच को उसकी मौजूदा क़याम-गाह (ठिकाने) का इल्म न होगा।

"सैम....!" उसने उस शख़्स को मुख़ातिब किया जो उसके पीछे चल रहा था।

"हाँ डॉक्टर....!"

"आख़िर फिंच का मसला किस तरह तय किया जाए?"

"इसके इलावा और कोई चारा नहीं है— हम सब मिल कर या तो खुद फ़ना हो जाएँ या उसे ज़द (निशाने) कर दें—"

"ओह.... अब इतनी अहमियत न दो उस कीड़े को— उसकी मिसाल उस कुत्ते की सी है जो किसी भेड़िये के सामने से हड्डी उठा ले जाए— वह बेगम इरशाद वाला बिज़नेस ख़राब कर देने पर तुल गया है—"

"लेकिन डॉक्टर यह भी तो सोचिये कि अभी तक वह हमारे बहुत ही ख़ास क़िस्म के पंद्रह आदमियों को मौत के घाट उतार चुका है—"

"हाँ.... आन.... मुझे इसका भी क़लक़ (दुःख) है—" डॉक्टर ड्रेड ने लापरवाही से कहा और होठों में एक सिगरेट दबा कर सुलगाने लगा।

"बेगम इरशाद के लिये अब एक ही सूरत रह जाती है—" उसने एक कश ले कर कहा— "उस की लड़की को पकड़ लिया जाए जिसे वह बेहद चाहती है— वरना ऐसी सूरत में जब कि नीला बैग भी हाथ से जाता रहा हम उसका क्या बिगाड़ सकेंगे—"

"यह फिंच शायद सचमुच कोई ख़बीस (दुष्ट) रूह है—" सैम ने कहा— "वरना नीले बैग को उड़ा ले जाना किसी आदमी के बस का रोग तो नहीं था—"

"छोड़ो....!" ड्रेड बुरा सा मुँह बना कर बोला— "वह क्रैग की ग़फ़लत से हुआ था—"

"यह भी दुरुस्त है—"

वह फिर ख़ामोश हो गए— कुछ देर बाद ड्रेड ने कहा— "मगर नहीं यह ठीक नहीं है—"

"क्या....?"

"यही कि उस लड़की को अग़वा किया जाए— इससे हालात पेचीदा हो जाएँगे— ख़ैर दुश्वारियों और पेचीदगियों की तो मुझे परवाह नहीं है— मगर यह फिंच....!"

डॉक्टर ड्रेड रुक गया— यहाँ उस कुंज में वह अक्सर घास पर बैठा करता था— यह जगह चमेली की झाड़ियों

391

भरी हुई थी और यहाँ हर वक्त उनके फूलों की भीनी-भीनी महक चकराती रहती थी। ड्रेड एक दरख़्त के आधे कटे हुए तने पर कोहनियाँ टेक कर खड़ा हो गया— उसकी पेशानी पर फ़िक्र की वजह से हल्की-हल्की सिलवटें उभर आई थीं। सैम दूसरी तरफ़ मुतवज्जह था— दफ़अतन डॉक्टर उस तने समेत ज़मीन पर ढेर हो गया और ठीक उसी वक्त एक फ़ायर भी हुआ — गोली ड्रेड के बाएँ पहलू के नीचे से निकल गई— वह उछल कर पीछे हट गया और तना ज़मीन पर लुढ़कता हुआ उसकी तरफ़ बढ़ रहा था। ड्रेड ने पीछे हटते हुए तने पर दो- तीन फ़ायर किये लेकिन एक भी गोली उस पर न पड़ सकी— पता नहीं ड्रेड का निशाना खता कर रहा था या उस लुढ़कते हुए तने की हरकत कुछ इस अंदाज़ की थी कि उस पर गोलियाँ असर न कर सकें। "ओह.... सैम.... गधे—" डॉक्टर ड्रेड दाँत पीस कर ग़र्राया — "खड़ा क्या देख रहा है— वह इस खोखले तने में घुसा हुआ है—" दफ़अतन फिंच उसके सामने था— वह इतनी ही फुर्ती से उस खोखले तने से निकला था जैसे कोई चूहा अपने सुराख़ से निकले— उसने छूटते ही दो फ़ायर डॉक्टर ड्रेड पर झोंक दिये थे— लेकिन उसका निशाना भी ग़लत ही रहा.... और फिर दूसरा फ़ायर डॉक्टर ड्रेड को दूसरी दुनिया की सैर करा ही देता लेकिन उसी वक्त सैम ने उस पर छलाँग लगाई और उसका हाथ

बहक गया— कुछ भी हो वह सैम की गिरफ़्त में नहीं आ सका— उसके नीचे से निकलते- निकलते उसने फिर डॉक्टर ड्रेड पर फ़ायर कर दिया— ड्रेड अपना रिवॉल्वर खाली कर चुका था सो बड़ी मुश्किल से वह इस बार बच सका— अगर वह खुद को ज़मीन पर गिरा न देता तो जिस्म के किसी न किसी हिस्से पर गोली ज़रूर लगी होती— फिंच समझा शायद इस बार वह कामयाब हो गया है लिहाज़ा उसने सैम को रिवॉल्वर की ज़द पर रखते हुए कहा— "अपने हाथ ऊपर उठाओ—" सैम ने बड़ी मायूसी से डॉक्टर ड्रेड की तरफ़ देखा जो ज़मीन पर औंधा पड़ा हुआ था। फिंच ने बाएँ हाथ से चाकू निकाल कर उसकी तरफ़ फेंकते हुए कहा— "ड्रेड की नाक काट दो— मैं यह नाक उस नन्ही सी क़ब्र पर रखूँगा जो आज भी उसके लिये बेचैन होगी—" सैम चाकू उठाने के लिये झुका— फिर काँपता हुआ ड्रेड के पास आया और ड्रेड अब भी उसी तरह बे-हिस-ओ-हरकत पड़ा हुआ था। शायद फिंच भी ड्रेड की नाक कटने का दिलकश मंज़र ही देखने के लिये आगे बढ़ आया था — लेकिन उसी लम्हे में उसे अपनी इस अज़-खुद-रफ़्तगी पर पछताना पड़ा— ड्रेड लेटे ही लेटे उस पर झपट पड़ा था—

392

रिवॉल्वर उस की गिरफ़्त से निकल गया और वह खुद डॉक्टर ड्रेड के नीचे दब कर रह गया।

"सैम चाकू....!" ड्रेड दहाड़ा— "मैं इसे बकरे की तरह ज़बह करूँगा।"

लेकिन फिर खुद ही किसी भींसे (भैंसे) की तरह डकरा कर दूसरी तरफ़ उलट गया और फिंच.... वह हिरण की तरह चौकड़ियाँ भरता हुआ चार दीवारी की तरफ़ जा रहा था। सैम उस के पीछे दौड़ा लेकिन वह अभी रास्ते ही में था कि फिंच बंदरों की तरह दीवार पर चढ़ कर दूसरी तरफ़ कूद गया।

सैम को रुक जाना पड़ा— वह जानता था कि अब फिंच को पा लेना मुश्किल ही होगा क्योंकि चार दीवारी के उस तरफ़ करौंदों का जंगल था— यह इमारत दरअसल शहर से दस मील दूर एक गाँव में वाक़िअ थी।

फिर वह कुंज में वापस आया— डॉक्टर ड्रेड घास पर बैठा हुआ था और उस का चेहरा कुछ इस तरह उतरा हुआ नज़र आ रहा था जैसे जिस्म के किसी हिस्से में नाकाबिले बर्दाश्त क़िस्म का दर्द हो रहा हो।

"तुम.... नमक हराम....!" वह सैम की तरफ़ उँगली उठा कर मुज़्महिल (कमज़ोर) आवाज़ में बोला— "मेरी नाक काटने का इरादा रखते थे—"

"ओह.... डॉक्टर.... मैं समझा था.... शायद.... आप....!"

"मर गये....!" ड्रेड ने दहाड़ने की कोशिश की लेकिन फिर कराह कर खामोश हो गया— उस की पलकें झुकी जा रही थीं और ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वह सांस लेने से भी जी चुरा रहा हो।

"अब.... फिर....!" वह हाथ उठाता हुआ रुक कर बोला— "यहाँ से भी भागने.... की.... कोशिश.... करो.... जल्दी.... मुझे.... अंदर.... ले चलो—"

वह ज़मीन पर चित लेट कर कराहने लगा और सैम बौखला कर इमारत की तरफ़ भागा।

******

बेगम इरशाद ने अनवर को हिदायत तो कर दी थी कि वह उस कोठी से दूर ही दूर रहे लेकिन अनवर की दानिस्त (समझ) में यह एक लग्व (बेतुकी) बात थी— कोठी से दूर रह कर वह इस ब्लैकमेलर पर हाथ डाल ही नहीं सकता था।

लेकिन वह इस सिलसिले में एहतियात ज़रूर बरत रहा था— इस बार उस ने मेकअप भी ऐसा ही किया था जिस के बारे में उस का ख्याल था कि चालाक से चालाक आदमी भी उसे नहीं पहचान सकेगा।

और वह मुस्तकिल तौर पर कोठी ही में रह पड़ा था— बात दरअसल यह थी कि बेगम इरशाद को शिकार के गोश्त का शौक़ था और इन्हीं दिनों उन के यहाँ का शिकारी बीमार पड़ गया था — इस तरह अनवर को उस की ला-इल्मी में वहाँ कदम जमाने का मौका मिल गया।

393

जैसे ही दोनों डंकी टेल कंपाउंड में कदम रखते वह होशियार हो जाता। इस दौरान में उसने महसूस किया था कि बूढ़ा डंकी टेल बेगम इरशाद से फ़्लर्ट करने की कोशिश कर रहा है और नौजवान डंकी टेल शाहिना से।

इस वक्त भी नौजवान डंकी टेल शाहिना के साथ लान पर टहल रहा था.... और अनवर एक ऐसी जगह छुप गया था जहाँ से दोनों की गुफ़्तगू सुन सकता था।

नौजवान डंकी टेल शाहिना से कह रहा था— "मेरे डैडी बिल्कुल डफ़र हैं। उन्हें आज तक यही नहीं मालूम हो सका कि किसी औरत से किस तरह गुफ़्तगू करनी चाहिये।"

"तुम उन्हें सिखाते नहीं।" शाहिना मुस्कुराई।

"अरे तौबा—" वह अपना कान पकड़ कर बोला— "उस वक्त तक नहीं सिखा सकता जब तक कि वह अपनी मूँछें न साफ़ कर दें। एक मूँछ के बाल मेरी नाक में घुस गये थे और छींकते- छींकते मेरा बुरा हाल हो गया.... डैडी अज़ाए परफ़ेक्ट डफ़र.... यू सी—"

शाहिना ने बुरा सा मुँह बनाया मगर कुछ बोली नहीं।

"एक बार वह अपनी एक दोस्त की बड़ी बहन से कहने लगे—" डंकी टेल ने कहा और हँसने लगा। फिर बदिक़्क़त (कठिनाई से) तमाम हँसी पर क़ाबू पाने के बाद बोला— "उन्हें अपनी उस दोस्त से कुछ-कुछ मोहब्बत हो चली थी लेकिन आप एक दिन.... उसकी बड़ी बहन....!"

"मैं उसकी बड़ी बहन के मुतल्लिक़ कुछ नहीं सुनना चाहती।" शाहिना झुंझला गई।

"चलिये तो मैं उसी के मुतल्लिक़ बताऊँगा। वह भी बड़ा दिलचस्प क़िस्सा है—"

शाहिना की झुंझलाहट और बढ़ी और उसने पिनपिनाती हुई आवाज़ में कहा— "क्या मैंने आपसे यह दरख़्वास्त की थी कि आप मेरे साथ ज़रूर टहलें?"

"ओह.... आप खफ़ा होती हैं—" वह दर्दनाक आवाज़ में बोला— "आप को क्या मालूम....!"

वह अपने सीने पर इस अंदाज़ में हाथ रख कर खामोश हो गया जैसे खून की क़ै होने वाली हो।

"आप होश में हैं या नहीं....?"

"काश मैं होश में होता। जब से आपको देखा है दोपहर का खाना रात को खाता हूँ और रात का खाना दूसरे दिन दोपहर को— अक्सर दिन में दो बार शेव कर डालता हूँ लेकिन जब होश आता है तो मालूम होता है कि मैं डैडी का शेव कर रहा था और डैडी मुस्कुरा कर मेरा शुक्रिया अदा करते हैं।"

"डंकी टेल.... तुम अपनी बकवास बंद करो— वरना मुझे किसी नौकर को बुलाना पड़ेगा।"

394

"यक़ीनन बुलाइये.... बशर्ते कि वह मुझसे ज़्यादा अच्छा हो—"

शाहिना जो आपे से बाहर हो रही थी हाथ छोड़ बैठी.... चटाख़ की आवाज़ इतनी हल्की भी नहीं थी कि दूर-दूर तक न फैलती। लेकिन डंकी टेल ने न तो गाल सहलाया और न ही उसके चेहरे से यह ज़ाहिर हुआ कि उसने अभी एक अदद ज़ोरदार थप्पड़ रिसीव किया है।

"उसने कहा था—" वह आसमान की तरफ़ उँगली उठा कर बोला— "अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो तुम दूसरा भी पेश कर दो—"

सचमुच शाहिना ने दूसरे गाल पर भी थप्पड़ रसीद कर दिया और डंकी टेल ने जेब से रुमाल निकालते हुए कहा— "लाइये.... मैं आपका हाथ साफ़ कर दूँ— हो सकता है कि मेरे गाल गंदे रहे हों—"

शाहिना लापरवाही से दूसरी तरफ़ मुड़ गई। वह काफ़ी तेज़ रफ़्तारी से इमारत की तरफ़ जा रही थी— अनवर ने डंकी टेल के होठों पर एक बड़ी सफ़ाक सी मुस्कराहट देखी।

भयानक रात

मेरी सिंगलटन की हियत ही बदल गई थी— न वह अब सिंगार करती और न घुटनों तक के स्कर्ट पहनती बल्कि ऐसे ही लिबास में रहती जिससे पूरा जिस्म ढका रहे। वह साड़ी ही ज़्यादा पसंद करती थी— अब उसके होठों पर न लिपस्टिक की गहरी तह नज़र आती और न गालों पर सुर्खी लेकिन वह इसके बावजूद भी दिलकश नज़र आती थी— पहले की मेरी और अब की मेरी में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ हो गया था— ऐसा मालूम होता था जैसे वह अब तक पाकीज़गी ही की ज़िंदगी बसर करती रही हो।

हमीद के लिये मेरी सिंगलटन की यह हैरतअंगेज़ तब्दीली अजीब थी— वह उसकी इस कायापलट को देखता और 'अश-अश' करता— अव्वल तो वह अपना ज़्यादातर वक्त बाइबल पढ़ने में सर्फ़ करती थी और अगर कभी हमीद को उससे गुफ़्तगू करने का मौक़ा भी मिलता तो वह वलियों और पाकबाज़ बुज़ुर्गों के क़िस्से छेड़ जाती।

आज हमीद बड़ी मुश्किल से उसे ढब पर लाया था और वह दिल खोल कर हँस रही थी— मगर किसी मासूम बच्ची की तरह उसमें न बनावट थी और न तरग़ीब की झलकियाँ— हमीद कह रहा था— "मैं आज बहुत उदास हूँ और तुम क़हक़हे लगा रही हो—"

395

"क्यों तुम उदास क्यों हो?"

"क्योंकि मैं तुम्हारी तरह नेक नहीं बन सकता—"

"तुम में कौन सी बुराई है—" मेरी सिंगलटन ने हैरत से कहा— "न तुम चोर हो, न डाकू, न शराबी.... न ज़ानी—"

"मगर मेरा अकबर तो मुझे अच्छा नहीं समझता—"

मेरी हँसने लगी और फिर संजीदगी से बोली— "नहीं तुम दोनों फ़रिश्ते हो— अपनी ज़िंदगी में मुझे पहले दो आदमी मिले हैं जिन्होंने मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मुझे इस्तेमाल नहीं किया— वैसे भी यहाँ मैंने आम तौर पर महसूस किया है कि मशरिक़ (पूर्व) अभी अख़लाक़ी तौर पर इतना नहीं गिरा जितना मग्रिब (पश्चिम) गिर चुका है—"

"शुक्रिया....!" हमीद भी इस विषय पर संजीदा हो गया क्योंकि यह मशरिक़ के वक़ार (सम्मान) का सवाल था—

"मैं सोच रहा था कि तुम हम जैसे फ़्रॉड आदमियों के जाल में फँसने वाली हो—" हमीद ने फिर बात का रुख़ बदलते हुए कहा—

"क्यों....?" मेरी चौंक कर उसे घूरने लगी—

"अरे यह फ़्रॉड नहीं तो और क्या है कि हमने तुम्हें इस तरह पनाह दी है— मक़सद यह है कि तुम्हारी मदद से ड्रेड तक पहुँच सकें—"

"मेरी मदद से?" उसने हैरत से कहा— चंद लम्हे खामोश रही फिर बोली— "शायद आप किसी ग़लतफ़हमी में मुब्तला हैं— यहाँ ड्रेड की तक़रीबन तीन दर्जन पनाहगाहें हैं— मुझे सिर्फ़ नौ जगहों का इल्म है लेकिन फ़रीदी ऐसी पच्चीस इमारतों से वाक़िफ़ हैं जहाँ ड्रेड पनाह ले सकता है— फिर मैं उनकी क्या मदद कर सकूँगी—"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह जगहों से वाक़िफ़ हैं?"

"उन्होंने खुद ही मुझे बताया था—"

हमीद के लिये यह इत्तिला (सूचना) बिल्कुल नई थी— उसे नहीं मालूम था कि फ़रीदी ड्रेड की मुख़्तलिफ़ पनाहगाहों का इल्म भी रखता है— वह चंद लम्हे कुछ सोचता रहा फिर बोला— "तुम उस ज़र्दपोश (पीले कपड़े पहनने वाले) आदमी के मुतल्लिक़ क्या जानती हो जिसकी देखभाल तुम्हारे सुपुर्द थी—"

"बस उसकी देखभाल ही करती थी— उसके बारे में कुछ नहीं जानती— वैसे मेरा ख़्याल है कि वह कोई सही-उल-दिमाग़ आदमी नहीं है—"

"ड्रेड के साथियों में उसकी क्या हैसियत है?"

396

"मैं यह भी न बता सकूँगी— वह पागल ज़रूर है मगर औरतों के लिये हर वक्त उसकी राल टपकती रहती है—"

"ड्रेड से उसका क्या ताल्लुक हो सकता है?"

"मैं नहीं जानती— वैसे अक्सर मैंने देखा है कि उसने ड्रेड के मुँह पर भी उसे गालियाँ दी हैं और वह ख़िलाफ़-ए-तवक़्क़ो (उम्मीद के विपरीत) सुन-सुन कर हँसता रहा है—"

"तुमने कहा था कि तुम्हें फिंच से हमदर्दी है—"

"बिला-शुबहा मुझे उससे हमदर्दी है—"

"क्या तुम नहीं जानतीं कि वह कई आदमियों का क़ातिल भी है?"

"होगा....!" मेरी ने लापरवाही से अपने शानों को जुम्बिश (हरकत) दी— "पहले वह क़ातिल नहीं था— पहले वह एक ईमानदार आदमी की तरह मेहनत से अपनी रोज़ी कमाता था — फिर ड्रेड से बदला लेने की धुन में ग़लत रास्तों पर निकल गया और अब वह ड्रेड ही की तरह एक बुरा आदमी है— वह बे-दरेग़ (बिना संकोच) दूसरों के माल पर हाथ डाल देता है— बे-दरेग़ लोगों को क़त्ल करता है मगर उसे न भूलो कि पहले वह एक बे- ज़रर और ईमानदार आदमी था— उसे इस राह पर डालने वाला ड्रेड ही है— लिहाज़ा ड्रेड के मुक़ाबले में मुझे उससे हमदर्दी ही होनी चाहिये क्या तुम इसके लिये हमदर्दी नहीं महसूस करते?"

"हरगिज़ नहीं— हमारा काम तो मुजरिमों को क़ानून के हवाले करना है— ख़्वाह उनके मुजरिम बन जाने की वजह कुछ हो—"
कुछ देर खामोश रही फिर हमीद बोला— "क्या डॉक्टर ड्रेड यहाँ की किसी मालदार औरत को ब्लैकमेल करने की कोशिश कर रहा है?"
"हाँ.... लेकिन मैं नहीं जानती कि वह औरत कौन है— अलबत्ता यह जानती हूँ कि उस औरत से उसका मुतालबा दो करोड़ का है—"
"मैं सर मारना चाहता हूँ—!" हमीद इस गुफ़्तगू से उकता कर बोला—
"मुझे अफ़सोस है कैप्टन! मैं अहद कर चुकी हूँ कि बक़िया ज़िंदगी कँवारियों की तरह बसर करूँगी—"
हमीद कुछ कहने ही वाला था कि चार नौकर लकड़ी का एक बहुत बड़ा संदूक उठाए अंदर दाख़िल हुए और उसे स्टोर रूम की तरफ़ ले जाने लगे— दफ़अतन वह संदूक एक स्तून (खंभे) से टकराया और थोड़ी सी जगह का प्लास्टर उखड़ गया—
"ओह अंधो....!" हमीद दहाड़ा— "देखते नहीं— कहीं यह उधड़ा हुआ प्लास्टर तुम्हारी खालें न उधेड़ने का

397
सबब न बन जाए, मगर यह संदूक कैसा है?"
"साहब ने भिजवाया है।" एक नौकर ने जवाब दिया।
हमीद फिर मेरी की तरफ़ मुतवज्जह हो गया— "तुम देख रही हो— सुतून का थोड़ा सा प्लास्टर उतर गया है— साहब अभी तशरीफ़ ला रहे होंगे। सब से पहले इसी सुतून पर नज़र पड़ेगी— एक-एक चीज़ पर नज़र रहती है उस शख़्स की— भला ऐसे शख़्स के साथ कौन शादी करना पसंद करेगा?"
"इतना होशमंद हो तो बड़ी अच्छी बात है—"
"हाँ तुम कह सकती हो क्योंकि तुम बक़िया ज़िंदगी कँवारियों की तरह बसर करोगी—" वह कुछ न बोली— कुछ देर बाद वह फिर बाइबल के वरक़ उलट रही थी और हमीद बुरा सा मुँह बनाए अपने पाइप में तम्बाकू भर रहा था।

ठीक छह बजे फ़रीदी वहाँ आया— वह सीधा इसी तरफ़ चला आया था— लेकिन उसने आते ही वही किया जिसकी पेशीनगोई हमीद कुछ देर पहले कर चुका था— वह सुतून के उधड़े हुए प्लास्टर को देखता रहा फिर बोला—

"यह प्लास्टर कैसे उधड़ गया....?"

"संदूक से पूछिये—" हमीद ने लापरवाही से जवाब दिया— "लेकिन संदूक यही जवाब देगा कि नौकर जानें— नौकरों से हरगिज़ कुछ न पूछियेगा वरना वह सोचेंगे कि इतना बड़ा आदमी होकर इतनी सी बात के लिये जवाब तलब करता है—"

"बकवास मत करो— तुम किस संदूक का तज़किरा कर रहे हो?"

"वही जो आपने भिजवाया था— अब यही जुमला लातिनी में दोहराऊँ?"

"मैंने कोई संदूक नहीं भिजवाया था—"

"क्या....?" हमीद उछल कर खड़ा हो गया— फिर बोला— "वह स्टोर रूम में मौजूद है—"

फ़रीदी उसी हिस्से की तरफ़ झपटा जहाँ स्टोर रूम था— हमीद भी तक़रीबन दौड़ता हुआ उसके साथ चल रहा था।

फ़रीदी स्टोर रूम में घुस पड़ा और हमीद ने एक संदूक की तरफ़ इशारा किया। यह लकड़ी का बना हुआ था और उसकी ऊँचाई तक़रीबन ढाई फ़ुट थी और लम्बाई चार फ़ुट, चौड़ाई भी ढाई फ़ुट के लगभग होगी।

फ़रीदी ने उसका ढक्कन उठा दिया लेकिन संदूक खाली था।

"ओह....!" हमीद कपकपाती हुई आवाज़ में बोला— "यह शायद इतना वज़नी था कि उसे चार आदमी उठा कर—

398

अन्दर लाए थे।"

फ़रीदी चन्द लम्हे कुछ सोचता रहा फिर बोला— "सारे दरवाज़े बन्द करा दो— नसीर से कहो कि वह तीन आदमियों को राइफ़लों समेत अक़्बी पार्क (पीछे के पार्क) में ले जाए और इधर-उधर जो कुत्ते छूटे ही हुए हैं—"

"यानी कोई आदमी इस सन्दूक में यहाँ आया है—"

"जल्दी करो—"

लेकिन फिर फ़ौरन ही किसी ख्याल के तहत उसने हाथ उठा कर उसे रुकने का इशारा किया— उसकी नज़र एक गोशे (कोने) की तरफ़ थी जहाँ लकड़ी के पुराने सन्दूक़ों के ढेर थे — उसने होठों पर उंगली रख कर हमीद को खामोश रहने का इशारा किया और खुद आहिस्ता- आहिस्ता उस गोशे की तरफ़ बढ़ा और फिर अचानक हमीद ने सन्दूक एक-दूसरे पर गिरते देखे— फ़रीदी ने किसी की टाँग पकड़ रखी थी— हमीद बौखला कर आगे बढ़ा—

फ़रीदी ने झपट्टा मारा लेकिन वह आदमी किसी साँप की तरह ज़मीन पकड़ी थी और फिर जब वह पलटा तो किसी ऐसे साँप ही की तरह पलटा जिसकी दुम पकड़ने की कोशिश की गई हो—

हमीद के हलक़ से एक हैरत-आमेज़ चीख़ निकली.... "यह फिंच था.... और फ़रीदी के बाज़ुओं में लटका हुआ कोशिश कर रहा था कि किसी तरह उसकी गर्दन उसके हाथों में आ जाए—"

"पटख़ दीजिये.... साले की हड्डियाँ चूर हो जाएँ—" हमीद दहाड़ा लेकिन फ़रीदी इस मशवरे पर अमल न कर सका— पता नहीं फिंच ने उसे इसका मौक़ा नहीं दिया था या खुद उसने ही ऐसा करना मुनासिब नहीं समझा था— फिंच थोड़ी देर तक जद्दोजहद करता रहा मगर फिर उसने हाथ पैर डाल दिये—

दूसरे ही लम्हे में फ़रीदी दाएं हाथ से उसकी गर्दन पकड़े किसी मुर्दा छिपकली की तरह लटकाए हुए था.... और इसी तरह वह बरामदे तक चला आया— फिंच की आँखें बन्द थीं और उसकी सांसें भी रुक गई थीं—

जैसे ही मेरी सिंगलटन की नज़र उस पर पड़ी वह चीख़ मार कर खड़ी हो गई— "यह.... यह.... फिंच....!"

"हाँ.... मैं इसे अच्छी तरह पहचानता हूँ—" फ़रीदी मुस्कुराया—

"यह.... यह शायद.... मर गया—" मेरी क़रीब आकर फटी-फटी आँखों से उसे देखती हुई बोली

—

"हाँ.... शायद....!" फ़रीदी ने उसको उसी तरह लटकाए हुए नीचे से ऊपर तक देख कर कहा— फिर हमीद से बोला— "यह उसी नीले बैग के चक्कर में आया था—"

"मैं इसके लिये रंजीदा हूँ—" मेरी ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा—

399

"उस की वह ख्वाहिश पूरी न हो सकी जिस के लिए उस ने इस जिंदगी में कदम रखा था—"

"मुझे भी अफ़सोस है—" फ़रीदी उसे फर्श पर डालता हुआ बोला— फिंच की लाश हमीद को अजीब सी लग रही थी और उस का दिल नहीं चाहता था कि वह उसे वही फिंच तस्लीम कर ले जिस ने एक रात उन दोनों को चैलेंज किया था— वह तो अब बिल्कुल ऐसा ही लग रहा था जैसे किसी फुटपाथ पर कोई मफ्लूज (लकवाग्रस्त) फ़कीर सर्दी से अकड़ कर मर गया हो—

"उस के कारनामे मुझे हमेशा याद रहेंगे—" फ़रीदी मेरी से कह रहा था— "आज तक ऐसा दिलेर और बेबाक मुजरिम मेरी नज़रों से नहीं गुज़रा— मगर उस की इस जहालत पर उस के कारनामे ऐसे ही मालूम होते हैं जैसे कोई नन्हा सा बच्चा मसनूई (नकली) मूँछें लगा कर बूढ़ा बनने की कोशिश करे—"

फिर न जाने क्यों हमीद भी उस के लिए रंजीदा हो गया— नौकर सहन में खड़े पलकें झपका रहे थे और पूरे घर पर कुछ मातम सी फिज़ा (वातावरण) तारी हो गई थी—

लेकिन यकायक सब की आँखों में बिजली कौंध गई— क्योंकि फिंच अचानक उछल कर राहदारी (गैलरी) के दरवाज़े के करीब जा गिरा था— फिर उस ने राहदारी में छलांग लगाई— "लेना....!" हमीद दहाड़ कर खुद भी झपटा— फ़रीदी भी दौड़ पड़ा था—

फिर जैसे ही फिंच पोर्च से निकल कर अक़्बी (पीछे के) पार्क की तरफ भागा, आठ-दस खूँखार किस्म के कुत्ते उस पर झपट पड़े लेकिन फिंच की तेज़ रफ़्तारी की दाद देनी पड़ेगी क्योंकि वह उन्हें काफी पीछे छोड़ गया था—

मगर.... फिर वह किसी चीज़ से ठोकर खाकर गिरा और कुत्तों ने उसे जा लिया— फ़रीदी वगैरह दूर खड़े तमाशा देखते रहे— लेकिन हमीद ने महसूस किया कि फ़रीदी कुछ मुज़्तरिब (बेचैन) सा नज़र आने लगा है— वैसे भी जब फिंच इस तरह धोखा देकर निकल भागा था तो उस ने बड़े बे-इख्तियार अंदाज़ में कहकहा लगाया था—

और यकायक फिर उस ने फ़रीदी को हँसते देखा क्योंकि दूसरी तरफ फिंच ने कुत्तों से बाकायदा जंग शुरू कर दी थी— उस के एक हाथ में बड़ा सा चाकू था और दूसरे हाथ में कोट जो उस ने हैरत अंगेज़ फुर्ती के साथ अपने जिस्म से उतारा था—

अब तक कई कुत्ते बुरी तरह ज़ख्मी हो चुके थे— "अगर.... यह फिंच निकल जाए तो मुझे इन कीमती कुत्तों के मरने का ज़र्रा बराबर भी अफ़सोस न होगा—" फ़रीदी ने मुज़्तरिबाना अंदाज़ में कहा और फिर हमीद की तरफ मिज़ाज-पुरसी (हालचाल) के तौर पर रिवॉल्वर निकाल चुका था—

"खबरदार....!" वह उस के हाथ पर हाथ रखता हुआ बोला— "तुम्हें इसे इस तरह हलाक (मारते) करते हुए शर्म नहीं आएगी—"

400

"आप उन कुत्तों को आवाज़ दे कर हटाते क्यों नहीं?" मेरी ने रुआँसी आवाज़ से कहा

—

"यह इस वक्त मेरी नहीं सुनेंगे क्योंकि क़रीब-क़रीब सभी ज़ख्मी हो चुके हैं—"

"मैं उसे बचाऊँगी—" मेरी मजनूनाना (पागलपन भरे) अंदाज़ में आगे बढ़ी लेकिन फ़रीदी ने उसका बाज़ू पकड़ते हुए कहा—

"पागल न बनो तुम्हारी बोटियाँ भी हमें न मिलेंगी—"

"मुझे छोड़ दो.... मुझे छोड़ दो—" वह पागलों की तरह चीख़ती रही— शायद सचमुच उसका दिमाग़ उलट गया था— वह बिल्कुल हिस्टीरियाई क़िस्म का कोई दौरा मालूम हो रहा था— वह चीख़ती रही— "फिंच.... फिंच.... मेरे बच्चे.... मेरे बेटे.... मैं आ रही हूँ— मेरे बेटे.... मेरे बेटे—" और फिर वह बेहोश होकर बाज़ू पर झूल गई—

दूसरी तरफ़ फिंच उसी जोश-ओ-खरोश के साथ कुत्तों से लड़ रहा था— तीन कुत्ते बिल्कुल बे-बेकार होकर चीख़ते हुए ज़मीन पर घिसट रहे थे— फ़रीदी ने बेहोश लड़की को वहीं घास पर डाल दिया— वह इस लड़ाई में इस तरह महव (मग्न) हो गया था जैसे कोई बच्चा किसी बाज़ीगर के कमाल देख रहा हो— सिर्फ़ फ़रीदी ही की यह कैफियत नहीं थी बल्कि जितने भी वहाँ खड़े थे सब का यही हाल था— अब कुत्ते सुस्त पड़ने लगे थे— दफ़अतन एक बार फिंच ने एक लंबी दौड़ लगाई और कुत्तों को चकाचौंध (चकमा) देकर एक दरख़्त पर चढ़ गया—

"मेरे ख़ुदा....!" फ़रीदी ने एक तवील (लंबी) सांस ली— "बिल्लियों और बंदरों से भी ज़्यादा फुर्तीला—"

और फिर उन्होंने देखा कि फिंच बंदरों की तरह एक दरख़्त से दूसरे दरख़्त पर छलांग लगाता हुआ चहारदीवारी की तरफ़ निकला जा रहा है— नीचे कुत्ते उसके कोट की धज्जियाँ उड़ा रहे थे और तीन कुत्ते उन दरख़्तों के नीचे उछल रहे थे जिन पर फिंच छलांग लगाता था— ज़रा ही सी देर में फिंच दीवार पर नज़र आया और उसने सीधे खड़े होकर इस तरह अपना हाथ हिलाया जैसे "टाटा" कह रहा हो.... फिर वह दूसरी तरफ़ कूद गया— फ़रीदी की महवियत (तन्मयता) ख़त्म हो गई और उसने हँस कर कहा—

"तुमने देखा?" और फिर वह उन कुत्तों की तरफ़ बढ़ता हुआ बोला— "मेरी को अंदर ले जाओ— डॉक्टर को फोन करो—"

रात तारीख़ (अँधेरी) थी— अनवर शाद मंज़िल के नौकरों के क्वार्टरों के क़रीब टहल रहा था— डंकी....

401

की निगरानी करते हुए उसे चौथा दिन था। वह रोज़ाना बिला-नागा यहाँ आते थे लेकिन उनके आने का समय मुक़र्रर (तय) नहीं था। वह किसी वक्त भी आ सकते थे लेकिन अनवर ने कभी यह नहीं देखा कि बेगम इरशाद ने उन्हें बग़ैर मिले वापस कर दिया हो। अलबत्ता शाहिना उनसे कतराती थी। उन्हें देखते ही उसके होंठ नफरत से सिकुड़ जाते।

एक बार अनवर ने फोन पर बेगम इरशाद से डंकी टेल्स के मुताल्लिक (बारे में) पूछा। उसने जवाब दिया—

"मैं नहीं समझ सकती कि वह दोनों किस किस्म के आदमी हैं। वैसे सवाल यह है कि आख़िर यह रोज़ाना क्यों आते हैं जब कि बिज़नेस की बात भी तय हो चुकी है। पहले तो बहुत जल्दी में थे। उन्हें अजल्लत (जल्दबाजी) में इंग्लैंड वापस जाना था। इसी लिए उन्होंने तिजारती (व्यापारिक) मुआहदों (समझौतों) की तामील में जल्दी की थी — मगर अब ऐसा मालूम होता है जैसे यहीं रह जाने का इरादा रखते हों—"

"उनका क़ियाम (ठहरना) कहाँ है?"

"नियाग्रा होटल में....!"

"ठीक....!" अनवर ने कहा था— "मैं उन्हें वहाँ चेक करने की कोशिश की है कई बार.... लेकिन वह वहाँ नहीं मिले— यह मालूम हुआ कि उन्होंने कमरे ज़रूर ले रखे हैं मगर शायद ही कभी वहाँ जाते हैं— वहाँ रात तो उन्होंने एक बार भी बसर नहीं की—"

"अनवर....!" बेगम इरशाद ने बड़े जोश से कहा था— "तुम सचमुच काम कर रहे हो मगर उस ब्लैक मेलर के साथ ही साथ वह आदमी भी ज़रूरी है जिसके बाज़ू पर सुर्ख निशान है— चालीस हज़ार तुम्हारे हैं और तुम यह समझो कि वह तुम्हारे ही पास हैं— अख़राजात (खर्चों) की रक़म अलग— उससे कोई बहस नहीं—"

"कहाँ दो करोड़.... कहाँ सिर्फ़ चालीस हज़ार....!"

"वह मुझसे दो पैसे भी नहीं ले सकता— ख़्वाह (चाहे) मैं फ़ना (नष्ट) हो जाऊँ—"

इसके बाद गुफ़्तगू ख़त्म हो गई थी और अनवर अभी तक उन लोगों के मुताल्लिक इससे ज़्यादा और कुछ न मालूम कर सका था जो कुछ बेगम इरशाद को बताया था लेकिन उसकी भाग-दौड़ जारी रही।

आज शाम ही उसे शुबा (संदेह) था कि आज यहाँ कुछ न कुछ हो कर रहेगा— क्योंकि उसने कई ख़ास बातें नोट की थीं— नौकरों के क्वार्टरों के पीछे उसे झाड़ियों में रबर का एक लम्बा सा पाइप मिला था— पहले तो वह समझा कि वह अरसे से वहीं पड़ा होगा— लेकिन जब गौर किया तो मालूम हुआ कि वह बिल्कुल नया था और कम से कम अभी तक धूप या पानी से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहा है— दूसरी तरफ़ इस इमारत की...

402

पुश्त पर एक जगह झाड़ियों में उसे कुछ ऐसे औज़ार पड़े मिले जिनकी मदद से दरवाज़े और क़ुफ़्ल (ताले) ब-आसानी खोले जा सकते थे। अनवर ने उन्हें भी ज्यों का त्यों पड़ा रहने दिया। लेकिन अब वह सोच रहा था कि उसे क्या करना चाहिये— क्या कर्नल फरीदी को इसकी इत्तिला (सूचना) दे। लेकिन फिर उसने सोचा कि ऐसी सूरत में वह उन चालीस हज़ार से महरूम (वंचित) हो जाएगा जो कुछ ही दिनों के लिये सही उसकी ज़िंदगी शानदार ज़रूर बना देते। मगर वह तन्हा कहीं खेल ही न बिगाड़ दे।

वह काफ़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा और फिर उसने फैसला किया कि वह इसकी इत्तिला कर्नल फरीदी को नहीं देगा। वह पहले भी कई मारके तन्हा ही सर कर चुका था। उसे किसी की मदद की ज़रूरत नहीं थी। उसका ख्याल था कि हालात सिर्फ़ दो ही किस्म के हो सकते हैं— या काम बन जाएगा या बिगड़ जाएगा। बन जाने की सूरत में उसके चालीस हज़ार खरे हो जाएँगे और अगर काम बिगड़ गया तब भी उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। बेगम इरशाद उसे मज़लूम (पीड़ित) नहीं मालूम होती थी। आख़िर वह उस आदमी के वजूद को पुलिस से क्यों छुपाना चाहती है जिसकी तलाश में है। वह आदमी उसके लिये यक़ीनन बड़ी अहमियत रखता है वरना वह उसके लिये चालीस हज़ार क्यों खर्च करती और वह उसे क़ानून की नज़रों में भी नहीं लाना चाहती। अंदाज़ से ऐसा मालूम होता है कि वह इस ब्लैकमेलर से भी ज़्यादा पुलिस से खौफ़ज़दा (डरी हुई) है। फिर ऐसी सूरत में अगर वह गड्ढे में गिरती है तो उसे उससे हमदर्दी क्यों हो— वह अपनी किसी ग़ैर-क़ानूनी हरकत की सज़ा ज़रूर भुगतेगी।

बहरहाल यह अनवर का फ़ैसला था कि वह किसी को भी इन हालात की इत्तिला नहीं देगा। रात होते ही वह बहुत ज़्यादा मोहतात (सावधान) हो गया। उसका क़ियाम (ठहरना) भी नौकरों के क्वार्टरों ही में से एक में था। तक़रीबन ग्यारह बजे जब सब मुलाज़मीन अपने-अपने क्वार्टरों में पहुँच गए तो अनवर आहिस्ता से रेंगता हुआ अपने क्वार्टर से बाहर निकल आया। यहाँ गहरा अंधेरा था— कम्पाउंड का यह हिस्सा अमूमन तारीख़ (अंधेरा) ही रहा करता था। वह क्वार्टरों के अक़ब (पीछे) में आया— ज़मीन पर पड़े ही पड़े रबर के उस पाइप को टटोलने लगा जिसे शाम ही वहाँ देख चुका था लेकिन अब उसका कहीं पता न था। वह एक लम्हे के लिये रुका और फिर उसी तरह आगे बढ़ने लगा। लेकिन कुछ दूर चलने के बावजूद उस पाइप का सुराग़ न मिला और अनवर ने मजीद (अधिक) आगे बढ़ने का ख्याल तर्क कर दिया। वह इस अंधेरे में ज़हरीले कीड़ों का शिकार भी हो सकता था।

लेकिन वह मुड़ ही रहा था कि उसे अजीब किस्म की बू महसूस हुई— कुछ मीठी-मीठी सी दिमाग़ पर कुंद कर देने वाली बू। वह अपनी नाक दबा कर बड़ी तेज़ी से मुड़ा और उस वक्त तक नहीं रुका जब तक कि उसकी दम नहीं घुटने लगा। अब उस पाइप का मक़सद अच्छी तरह वाज़ेह (साफ़) हो गया था। इस पाइप के ज़रिये क्वार्टरों...

403

नशीली (एनेस्थेटिक) गैस पहुँचाई जा रही थी ताकि मुलाज़मीन बेहोश हो जाएँ.... तो यक़ीनन यह रात हंगामा खेज़ साबित होने वाली थी।

अनवर क्वार्टरों से बहुत दूर निकल आया था। उसने मालती की झाड़ियों के करीब सीधे खड़े होकर दो-तीन गहरे-गहरे सांस लिये। यहाँ की फ़ज़ा (वातावरण) में गैस का असर नहीं मालूम होता था। वह बड़ी तेज़ी से असल इमारत की पुश्त पर पहुँचने की कोशिश कर रहा था। लेकिन यहाँ भी वह देर से पहुँचा— वह इसरार (ज़िद) लोग अपना काम कर चुके थे। उसे अक़्बी (पीछे का) दरवाज़ा खुला हुआ मिला— अनवर ठिठक गया। वह सोच रहा था कि अंदर जाए या न जाए— क्या उसे अंदर दाख़िल होने के लिये कोई दूसरा रास्ता अख्तियार करना चाहिये। वह चंद लम्हे सोचता रहा फिर सर हिला कर उसी दरवाज़े से अंदर दाख़िल हो गया। यह एक तवील (लंबी) राहदारी थी और बिल्कुल तारीख़ (अँधेरी)। शायद अनवर उस रात भी इसी राहदारी में निकल आया था— जब नौजवान डंकी टेल ने उससे साँप वाला मज़ाक़ किया था। अनवर बे-आवाज़ चलता हुआ आगे बढ़ता रहा। फिर एक जगह उसे रुकना पड़ा— क्योंकि कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ था और अंदर

404

क्योंकि वह सुर्ख निशान यहाँ से भी साफ़ नज़र आ रहा था— वह यक़ीनन रुपये ही के बराबर रहा होगा और बहुत वाज़ेह (साफ़)—

"पता नहीं तुम क्या कह रहे हो—" बेगम इरशाद ने कहा और अनवर ने उसकी आवाज़ में किसी किस्म की कमज़ोरी नहीं महसूस की अलबत्ता शाहिना बहुत ज़्यादा खौफ़ज़दा (डरी हुई) नज़र आ रही थी—

"यह महज़ धमकी नहीं है बेगम इरशाद—" नक़ाबपोश ग़र्राया— "तुम्हारे वह खतूत (पत्र) भी मेरे पास मौजूद हैं जो तुमने उस ब्लैकमेलर को दफ़ातन (अचानक) लिखे थे

— "

बेगम इरशाद कुछ नहीं बोली— सिर्फ़ उसे घूरती रही और वह मजहूल सा ज़रदपोश (पीले कपड़े वाला) आदमी अपने होंठ चाट-चाट कर शाहिना को घूरता रहा— शाहिना भी कभी- कभी उसकी तरफ़ देख लेती थी—

"देखूँ तो वह खतूत कैसे हैं?" बेगम इरशाद ने तंज़िया (व्यंग्यात्मक) लहजे में कहा—

"बड़ी चालाक हो—" नक़ाबपोश सर हिला कर बोला— "खतूत मैं तुम्हारे हवाले कर दूँगा— दो करोड़ का इंतज़ाम कर दो— तुम्हारे लिये कोई बड़ी बात नहीं है और फिर अभी तुम्हें पता नहीं कितने दिन ज़िंदा रहना पड़े और तुम्हारी लड़की का मुस्तकबिल (भविष्य)...."

"खबरदार लड़की का नाम न लेना—" एक दरवाज़े से आवाज़ आई और नौजवान डंकी टेल का चेहरा दिखाई दिया— उसके हाथ में रिवॉल्वर था और फिर उसके पीछे बूढ़ा डंकी टेल भी नज़र आया— वह भी खाली हाथ नहीं था—

"आज यह चोर पकड़ा गया— बड़ी बात हुई—" बूढ़े ने नक़ाबपोशों की तरफ़ देखते हुए सर हिला कर कहा— फिर अपने बेटे से बोला— "तुम दोनों के नक़ाब उतार दो—"

नौजवान डंकी टेल आगे बढ़ा— अनवर इस माजरे (दृश्य) को हैरत से देख रहा था— उसने सोचा कि वह भी कूद पड़े लेकिन फिर उसने यह इरादा तर्क (छोड़) कर दिया— बूढ़ा डंकी टेल ग़ैर-मामूली किस्म के लिबास में था और उसकी चमड़े की पेटी से एक बहुत बड़ा थैला लटका रहा था— दोनों नक़ाबपोश हाथ उठाए खड़े थे— नौजवान डंकी टेल ने बड़ी तेज़ी से उन्हें बे-नक़ाब कर दिया—

"आहा.... सैम....!" बूढ़े ने कहा— "मैं समझता था शायद तुम क्रैग हो— ओ सैम गधे— यह डॉक्टर नहीं है— डॉक्टर ड्रेड मैं हूँ— पिछले साल से मैं ने रूपोशी (छिपना) अख्तियार कर रखी थी— यह चोर...."

405

लोगों को ख़्वाह-मख़्वाह धोखा देता रहा। मैं फिंच के हाथों ज़लील होना नहीं चाहता था— इस लिये मैं ने ही बेहतर समझा कि कुछ दिन ख़ामोश बैठूँ.... ओ सैम गधे— क्या देखता है— मार इस चोंटे को—" सैम चुप-चाप खड़ा पलकें झपकाता रहा। अचानक धम्म से कोई फर्श पर कूदा और अनवर की आँखें हैरत से फैल गईं—

यह एक छोटा सा आदमी था और उसके मुट्ठी में चाकू दबा हुआ था— उसने बूढ़े डंकी टेल को देख बंदरों की तरह दाँत निकाले और उसकी परवाह किये बग़ैर उस पर छलांग लगा दी कि उसके हाथ में रिवॉल्वर है—

अनवर बूढ़े की फुर्ती पर दंग रह गया बल्कि उसकी समझ ही में न आ सका कि वह सब कुछ आन-वाहिद (एक पल) में कैसे हो गया— रिवॉल्वर का रुख भी उन दोनों की तरफ़ रहा और छलांग लगाने वाला छोटा आदमी उस थैले में भी पहुँच गया जो एक ही लम्हे पहले बूढ़े डंकी टेल की कमर से लटका हुआ था—

बूढ़ा थैले के मुँह को बंद करता हुआ कह रहा था— "तो तुम अब आराम करो थोड़ी देर— फिर तुम से बात भी समझूँ गा.... हाँ.... हाँ.... हाँ तुम अपना चाकू इस थैले पर आज़माओ — अगर तुम उसे काट सको तो मैं तुम्हें क़त्ल नहीं करूँ गा— वादा करता हूँ—"

उसने थैले को एक तरफ़ डाल दिया और फिर उन दोनों की तरफ़ मुड़ कर दहाड़ा— "सैम के बच्चे तू खड़ा मुँह देख रहा है इसे मारता क्यों नहीं जो तुझे एक साल से ज़लील करता रहा है—"

"यह झूठा है—" दूसरे आदमी ने बूढ़े की तरफ़ इशारा किया—

"हाँ.... चोर.... मैं झूठा हूँ.... सैम....!" उसने फिर सैम को ललकारा और सैम यक-ब-यक दूसरे आदमी पर टूट पड़ा—

"क्या करता है गधे....!" दूसरे ने कहा—

"तुम चोर हो—" सैम दाँत पीस कर बोला— "तुमने डॉक्टर ड्रेड का मेकअप कर रखा है — डॉक्टर ड्रेड ऐसा नहीं हो सकता जो फिंच जैसे हक़ीर (तुच्छ) कीड़े से डर कर भागता फिरे—"

"मैं तुझे मार डालूँगा सैम! होश में आ—" दूसरा आदमी ग़र्राया—

फिर अनवर ने उन दोनों को एक-दूसरे पर झपटते देखा— बड़ा अजीब खेल था— वह चुप-चाप खड़ा देखता रहा— उसकी जेब में भरा हुआ रिवॉल्वर मौजूद था और उसे इत्मीनान था कि वह यहीं खड़े-खड़े बेगम इरशाद की मदद कर सकेगा— इस दरवाज़े की ओट से वह उन सब को खत्म कर सकता था— उसने उस ज़रदपोश (पीले कपड़े वाला) मजहूल की तरफ़ भी देखा जो कुर्सी की पुश्त से टिका हुआ फटी-फटी आँखों से चारों...

406

तरफ देख रहा था— फिर उसकी नज़र उस थैले पर पड़ी जो इधर-उधर उछल रहा था और वह दोनों लड़ रहे थे— शाहिना और बेगम इरशाद एक-दूसरे से चिमटी हुई बुरी तरह काँप रही थीं—

फिर न जाने कैसे उस थैले का मुँह खुल गया और वह छोटा आदमी बिजली की सी रफ़्तार से दोनों लड़ने वालों के दरमियान आ गया—

फिर एक चीख़ हॉल में गूँज गई— एक आदमी दोनों हाथों से पेट पकड़े हुए फर्श पर ढेर हो गया था— नन्हे आदमी ने चाकू हाथ से फेंक दिया और अपने दोनों हाथ ऊपर उठाता हुआ बूढ़े डंकी टेल से बोला— "अब तुम मुझे शौक़ से हिरासत में ले लो.... कर्नल फ़रीदी—"

डंकी टेल का रिवॉल्वर वाला हाथ नीचे झुक गया—

मरने वाले का साथी आँखें फाड़-फाड़ कर बूढ़े डंकी टेल को देख रहा था— हॉल में तक़रीबन सभी भौंचक्के नज़र आ रहे थे मगर ज़रदपोश (पीले कपड़े वाला) मजहूल की पिछली हालत में कोई तब्दीली नहीं वाक़े हुई थी—

"तुमने अच्छा नहीं किया फिंच....!" डंकी टेल ग़र्राया—

"मैं ने जो कुछ भी किया है उसकी सज़ा भुगतने को तैयार हूँ—" छोटे आदमी ने कहा और उसी तरह हाथ उठाए खड़ा रहा हालाँकि अब डंकी टेल का रिवॉल्वर उसकी तरफ़ नहीं उठा

हुआ था— अनवर ने भी उसकी ज़बान से कर्नल फ़रीदी का नाम सुना था और सन्नाटे में आ गया था— अगर फ़रीदी का नाम न सुनता तो इस क़त्ल के बाद बे-तहाशा फायरिंग करता हुआ अंदर घुस पड़ता— लेकिन अब उसने निहायत इत्मीनान से दरवाज़ा खोला और हॉल में दाख़िल हो गया—

नौजवान डंकी टेल सैम के हथकड़ियाँ लगा रहा था—

दफ़अतन बेगम इरशाद खड़ी हो गई और उसने काँपती हुई आवाज़ में बूढ़े डंकी टेल को मुख़ातिब किया—

"क्या आप सचमुच कर्नल फ़रीदी हैं?"

"हाँ बेगम इरशाद.... क्या तुम्हें वह रात याद है जब कम्पाउंड के फाटक पर हमारी मुलाक़ात हुई थी—"

"मुझे याद है—"

"और तुम इसी आदमी की तलाश में भटकते रहने के बाद वापस आई थीं—" फ़रीदी ने ज़रदपोश आदमी की तरफ़ इशारा किया जो अब भी पहले ही की तरह कुर्सी से टेक लगाए बैठा फटी-फटी आँखों से उन्हें देख रहा था—

"ओह.... तो आप अभी यही कहानी लेकर आए हैं—" बेगम इरशाद ने मुस्कुराने की कोशिश की—

दफ़अतन नौजवान डंकी टेल ने अनवर की तरफ़ मुड़ कर पूछा— "तुम कौन हो?"

407
"तुम्हारा अच्छा फ़र्ज़ंद...!" अनवर ने उर्दू में कहा।
"ग़ैट आउट....!" उसने रिवॉल्वर हिला कर कहा।
"अनवर....!" फ़रीदी ने उसे मुख़ातिब किया— "तुम बहुत दिनों से मेरे पीछे रहे हो।"
अनवर कुछ नहीं बोला— वह आगे बढ़ कर डॉक्टर ड्रेड की लाश पर झुक गया था।
"ज़िंदा है या मर गया?" फ़रीदी ने लापरवाही से पूछा।
"ठंडा हो चुका है....!" अनवर ने जवाब दिया।
"फिंच का हाथ था क़ातिल—" फिंच ने बच्चों के से अंदाज़ में खुश होकर कहा।
"खामोश रहो—" फ़रीदी ने उसे झिड़क दिया और बेगम इरशाद से बोला— "अगर तुम भी अपने हाथ हथकड़ियों के लिये पेश कर दो तो बेहतर है।"

"तुम होश में हो या नहीं?" बेगम इरशाद बिफर गई।
"तुम्हारे खतूत और दूसरे काग़ज़ात मेरे पास हैं—" फ़रीदी मुस्कुराया।
"फिंच ने वह काग़ज़ात डॉक्टर ड्रेड के पास से उड़ाए थे और फिर वह मेरे हाथ लग गए

— "

बेगम इरशाद पहले तो खड़ी रही फिर दौड़ती हुई हॉल से निकल गई।
"हमीद इसे देखो—" फ़रीदी ने दरवाज़े की तरफ़ हाथ उठा कर कहा। नौजवान डंकी टेल भी दौड़ता हुआ बाहर निकल गया।
शाहिना ने भी उठना चाहा लेकिन फ़रीदी ने कहा— "तुम जहाँ हो वहीं बैठी रहोगी।" शाहिना इस तरह बैठ गई जैसे उसके पैरों में खड़े होने की कुव्वत (ताकत) ही न हो। "उन काग़ज़ात में तुम क्यों दिलचस्पी ले रहे थे?" फ़रीदी ने फिंच से पूछा। "महज़ इसलिये कि ड्रेड भी उनमें दिलचस्पी ले रहा था। मैं कई साल से उसे हर काम पर शिकस्त देता आया हूँ— एक दिन वह भी था जब मेरी बच्ची की लाश सड़क पर पड़ी हुई थी— मैं लोगों से कहता था कि वह मेरे साथ पुलिस स्टेशन तक चलें— लेकिन वह इस तरह खौफ़ज़दा होकर पीछे हट जाते थे जैसे ड्रेड उन्हें अभी मार डालेगा— मैं बड़ी बेबसी से रोया था— मगर आज देखो.... वह पड़ा है ड्रेड— इन छोटे-छोटे नफ़ीस (नाजुक) हाथों ने उसे मौत के घाट उतारा है.... हाहा.... वह बेबस फिंच कहाँ है वह उस मज़लूम बच्ची के बाद ही मर गया था।"
"ख़ुदा के लिये मुझे बताइये कर्नल, यह सब क्या हो रहा है— वरना मेरा दम निकल जाएगा—"
"मुझे अफ़सोस है शाहिना वह तुम्हारे लिये कोई अच्छी ख़बर न होगी—" फ़रीदी ने जवाब दिया।

408

शाहिना इस तरह खामोश हो गई जैसे वह किसी बुरी खबर के सुनने से डरती हो। अनवर उस नन्हे से आदमी को हैरत से देख रहा था।

दफ़अतन हमीद दौड़ता हुआ अंदर आया।

"उसने.... उसने.... उसने.... इमारत में आग लगा दी है।" वह हांपता हुआ बोला— "आग तेज़ी से.... फैल रही है.... न जाने पेट्रोल के कितने टिन उलट दिये हैं।"

"किधर.... आग किस हिस्से में है?" फरीदी ने पूछा।

"चारों तरफ....!"

"क्या बकते हो— यह कैसे मुमकिन है— इतनी जल्दी?"

"ओह.... इमारत के चारों तरफ दीवार से मिली हुई पतली सी नालियां हैं— उन्हें पेट्रोल बहा कर उसने आग लगा दी है— आग बह रही है चारों तरफ—"

"ओह.... निकलो.... अनवर तुम इस ज़रद (पीले) लिबास वाले और शाहिना को संभालो— हमीद.... तुम सैम को देखो.... और" उसने फिंच का हाथ पकड़ लिया।

"नहीं कर्नल शुक्रिया— मैं अपनी हिफाज़त आप कर सकता हूँ—" उसने हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा।

"तुम कैदी हो.... चलो....!" फरीदी ग़र्राया।

"हाँ.... मैं कैदी हूँ लेकिन अगर मैं इस मौक़े से फायदा न उठाऊं तो मुझ से ज़्यादा अहमक़ (मूर्ख) सारी दुनिया में न मिलेगा—"

फिर फरीदी को ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई लेसदार मछली हाथ से निकल गई हो— फिंच उछल कर भागा।

"तुम लोग निकलने की फिक्र करो.... जाओ—" फरीदी बक़िया (बाकी) लोगों से कहता हुआ उसके पीछे दौड़ा।

हमीद का दिल नहीं चाहता था कि वह फरीदी को ऐसी सूरत में तन्हा (अकेला) छोड़ दे लेकिन उस पर खुद उसकी तरफ से एक ज़िम्मेदारी आयद (लागू) कर दी गई थी— यानी वह सब को सही सलामत वहां से निकाल ले जाए।

वह कुछ ही दूर चले होंगे कि उन्हें आंच महसूस होने लगी और इसी दौरान में अनवर ने यह भी महसूस किया कि शाहिना पर ग़शी (बेहोशी) तारी हो रही है— फिर अगर वह उसे संभाल न लेता तो वह शायद खुद भी गिर पड़ता— बदक़्क़त (बड़ी मुश्किल से) तमाम उसने उसे कांधे पर डाला और ज़रदपोश (पीले कपड़े वाला) मजहूल का हाथ पकड़े हुए चलता रहा— लेकिन अब उसने भी बोलना शुरू कर दिया था— वह दांत पर दांत जमाए कह रहा था— "इस लड़की को मेरे कांधे पर डाल दो.... कितनी चुलबुली है.... हाय.... हाय—"

409
"चल बे खामोशी से—" हमीद पलट कर दहाड़ा— "वरना गर्दन तोड़ दूँ गा—"

फिर वह जिधर भी गए उन्हें खिड़कियों और दरवाजों से आग की लपटें दिखाई दीं— कम्पाउंड में लोग चीख रहे थे और इधर-उधर भाग रहे थे— फिर कुछ लोग किसी न किसी तरह अंदर घुसे और उन्होंने बड़ी जद्दोजहद के बाद उन्हें बाहर निकाला—
हमीद ने बाहर निकलते ही फ़रीदी को आवाजें दीं लेकिन कहीं जवाब न मिला— दफ़अतन (अचानक) उसे क़रीबी थाने के कुछ कांस्टेबुल नज़र आए— उनके साथ एक सब इंस्पेक्टर भी था— हमीद ने जल्दी-जल्दी उसे कुछ न कुछ बताने की कोशिश की और कैदियों को उसके सुपुर्द कर के उसने एक बार फिर आग में छलांग लगा दी—
"फ़रीदी साहब.... फ़रीदी साहब—" वह चारों तरफ चीखता फिर रहा था— और आग अब आहिस्ता-आहिस्ता अंदर भी अपना तसल्लुत (कब्ज़ा) जमाने लगी थी—
चीखते-चीखते हमीद का हलक खुशक हो गया लेकिन जवाब न मिला— वह एक ऐसे कमरे में फंस गया था जहाँ हर तरफ आग की लपटें नज़र आ रही थीं— उसका सारा जिस्म पसीने से तर-बतर था और ज़हन (दिमाग) जवाब दे रहा था— अचानक उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई बहुत दूर से उसे आवाज़ दे रहा हो— उसने "हाँ" कहने के लिये हलक पर ज़ोर दिया मगर आवाज़ न निकल सकी— आग में घिरे होने के बावजूद भी उसके सामने अब तारीकी (अँधेरा) ही तारीकी थी— फिर उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई उसके मुँह में जलती हुई सलाख ठूँस रहा हो—
"अँ.... अँ.... नहीं—" वह उछल पड़ा और कोई चीज़ फर्श पर गिर कर झनझनाई—
फिर उसकी आँखें हैरत से फटी रह गईं— वह अपने ख्वाबगाह (शयनकक्ष) में था और फ़रीदी उसकी मसहरी (पलंग) के करीब बैठा हुआ शायद उसके हलक में दवा उतारने की कोशिश कर रहा था—
"फादर....!" हमीद चिंघाड़ कर उसकी गर्दन से चिमट गया—
"हमीद गधे! मैं बहुत खफ़ा (नाराज़) हूँ तुम से— तुम बाहर निकल आने के बाद फिर अंदर क्यों चले गए थे— मैं तो निहायत आसानी से पहले ही निकल गया था— वह निकल गया नासूर—"
"फिंच निकल गया—" हमीद ने हैरत से कहा—
"हाँ.... वह निकल गया— मुझे अफ़सोस है कि मैं ने बंदर पकड़ने की मशक (अभ्यास) आज तक नहीं की— अब करूँ गा—"
"मगर वह मरदूद (दुष्ट) आप को पहचान गया था—"

"हाँ बाद में पहचान लिया था— वरना पहले तो वह मुझे डॉक्टर ड्रेड ही समझा था— उसे छोड़ो— ख़ुदा की पनाह! तुम्हें वहाँ उस आग से निकालने में कितनी दुश्वारियाँ पेश आई थीं— अगर मुझे ज़रा सी देर हो जाती तो तुम हमीद मुस्लिम बन गए होते—"

"मगर मैं शायद बिल्कुल ठीक हूँ—" हमीद बौखला कर अपना जिस्म टटोलता हुआ बोला— "बिल्कुल.... लेकिन मेरे पैर देखो—"

हमीद ने झुक कर देखा और लरज़ गया.... उसके दोनों पैर आबलों से ढके हुए थे।

"मैं समझता था शायद आप कहीं घि र गए हैं—" हमीद ने कहा.... कुछ देर खामोशी रही फिर हमीद ने कहा— "बेगम इरशाद मिली थी?"

"हाँ.... लेकिन कोयले की शक्ल में— शायद उसने अपने जिस्म पर भी पेट्रोल छिड़क कर आग लगा ली थी—"

"लेकिन उसका जुर्म क्या था?"

"बहुत बड़ा जुर्म— मगर थी बड़े गुर्दे की औरत— ज़िंदगी भर कोई न कोई उसे ब्लैकमेल ही करता रहा था— वह ज़रदपोश फ़रिश्ता इस केस की अहम तरीन कड़ी था— तुम बताओ वह कौन हो सकता है— बेगम इरशाद को उसकी तलाश थी और ड्रेड इस के सिलसिले में उसे ब्लैकमेल कर रहा था—"

"उसका कोई आशिक होगा—"

"हश्त! वह सर इरशाद का लड़का है— ओहो! तुम्हारी आँखें हैरत से फैल गईं— हाँ हमीद साहब कभी-कभी ऐसा होता है— वह एक अरबपति का लड़का है— मगर गुमनामी और उसरत की ज़िंदगी बसर करता रहा— अगर मुझे वह नीला बैग न मिलता तो शायद यह कहानी परदा राज़ ही में रहती— इरशाद की दो बीवियाँ थीं— एक उस लड़के की माँ और एक यह जो जल कर मर गई— यह किसी मामूली आदमी की तलाक़ा थी और शाहिना दरअसल उसी आदमी की लड़की है— किसी तरह यह इरशाद से आ टकराई और उसने इस से निकाह कर लिया— इरशाद की पहली बीवी से एक बच्चा हुआ और अयाम ज़च्चगी में वह किसी वजह से पागल हो गई— एक सुबह इरशाद को मालूम हुआ कि बीवी और बच्चा दोनों ग़ायब हैं हालाँकि दिमाग़ माऊफ़ हो जाने के बाद उसे बच्चा उस से अलग ही रखा जाता था— लेकिन फिर भी वह ग़ायब हो गया— दो दिन बाद वह शहर के एक हिस्से में मिल गई लेकिन बच्चा उसके साथ नहीं था लिहाज़ा ख्याल किया गया कि मुमकिन है कि दीवानगी में उसने उसे कहीं

फेंक आई हो— काफ़ी अरसे तक बच्चे की तलाश जारी रही— इस सिलसिले में जो इश्तेहारात शाया हुए उनमें उस दाग़ का हवाला ज़रूर होता था.... अब तुम समझ गए कि ड्रेड उसके बाज़ू पर बेगम इरशाद को क्या दिखा रहा था— अब सुनो! लड़के पर यह...."

411

मजबूरी थी कि बेगम इरशाद ने उसे अपने किसी मुअतबर (विश्वसनीय) आदमी के सुपुर्द कर के शायद मार डालने की स्कीम बनाई थी— लेकिन उस मुअतबर आदमी ने उसे धोखा दिया — बच्चे को मार डालने के बजाय परवरिश कर डाली और ज़िंदगी भर बेगम इरशाद को ब्लैकमेल कर के लंबी-लंबी रक़में वसूल करता रहा— उस नीले बैग से बेगम इरशाद के खतूत भी निकले हैं जिनमें वह बार-बार उस से इस्तदआ (विनती) करती हुई नज़र आती है कि वह उस लड़के को मार डाले और उसके मुआवज़े में वह एक करोड़ की रक़म तक जा पहुँचती है—"

"गुड गॉड....!"

"और फिर न जाने किस तरह यह ज़रदपोश फ़रिश्ता डॉक्टर ड्रेड के हाथ लगता है और अब वह उसे ब्लैकमेल करना शुरू कर देता है— ज़ाहिर है अगर वह लड़का मंज़र-ए-आम पर आ जाता तो बेगम इरशाद जेल में होती और शाहिना दर-दर की भीख माँगती फिरती— अब क्या रह गया.... ड्रेड और बेगम इरशाद की वजह से दो बातें शायद कभी न मालूम हो सकें— एक तो यह कि वह आदमी कौन था जिसे बेगम इरशाद ने बच्चे को मार डालने पर आमादा किया था और दूसरी बात यह कि डॉक्टर ड्रेड को इन हालात का इल्म कैसे हुआ था—"

"अरे यह तो ज़रदपोश फ़रिश्ते ही से मालूम हो जाएगा—"

"मुश्किल है—" फ़रीदी ने मायूसुना अंदाज़ में सर हिला कर कहा— "ड्रेड के ज़हरों ने उसका दिमाग़ मऊफ़ (सुन्न) कर दिया है— शायद वह कभी ठीक न हो सके— शायद उसे अपने क़ाबू में रखने के लिये उसने ऐसा किया था—"

"क्या वह सर इरशाद का लड़का साबित किया जा सकेगा? जबकि उस आदमी का भी पता नहीं जिसने उसकी परवरिश की थी— मगर मुमकिन है इन वाक़यात का ऐलान हो जाने पर वह खुद ही सामने आ जाए—"

"क्या ड्रेड ने उसे ज़िंदा छोड़ा होगा? हरगिज़ नहीं हमीद साहब— यह साबित करना मेरा काम है कि वह सर इरशाद का लड़का है—"

कुछ देर तक खामोशी रही फिर हमीद बोला—

"□□□.... □□□□□! □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□— □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□— □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□—"

"□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□-□-□□□□□□ □□ □□□□□—"

"□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□.... □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□—"

"□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□— □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□—"

"□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□—"

412

"□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □ □□□□□□— □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□— □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□— □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□— □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□□) □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□—"

"□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □ □□□□ □□?"

"□□□□□ □□□□□□□□ (□□□□□□) □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□— □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □ □□□□ □□ □□ □□□□□□—"

□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□— "□□□□ .... □□□□□ □□□□□ □□□□ □□?.... □□□□□ □□....!"

"□□.... □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ (□□□□□□□□□) □□ □□□□□ □□— □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□—"

□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□

{□□□□□□ □□□□}

sjeet